AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

उत्तर प्रदेश
बी.एड.
संयुक्त प्रवेश परीक्षा
कला वर्ग

सम्पूर्ण पाठ्यक्रमानुसार

स्टडी बुक

सामान्य ज्ञान | हिंदी | तार्किक एवं विश्लेषणात्मक तर्कशक्ति | कला वर्ग

100% UPDATED CONTENT
जब अपडेटेड कंटेंट पढ़ोगे, तभी परीक्षा Crack करोगे!

समावेश

1. पाठ्यक्रमानुसार सम्पूर्ण थ्योरी
2. अध्यायवार महत्वपूर्ण प्रश्न

उत्तर प्रदेश बी.एड. संयुक्त प्रवेश परीक्षा कला वर्ग स्टडी बुक

CB2223

AGRAWAL EXAMCART

About the Book

यह किताब विशेष रूप से उन अभ्यर्थियों के लिए बनाई गई है जो उत्तर प्रदेश बी.एड. संयुक्त प्रवेश परीक्षा (कला वर्ग) की तैयारी कर रहे हैं। यह पुस्तक नवीनतम UP B.Ed. पाठ्यक्रम पर आधारित है और इसमें सामान्य ज्ञान, हिंदी, तार्किक एवं विश्लेषणात्मक तर्कशक्ति (कला वर्ग) जैसे सभी महत्वपूर्ण विषयों का संपूर्ण एवं सरल अध्ययन सामग्री शामिल है। इस स्टडी बुक में अध्यायवार महत्वपूर्ण प्रश्न, थ्योरी तथा परीक्षा पैटर्न आधारित अभ्यास सामग्री दी गई है, जो छात्रों को परीक्षा की पूर्ण तैयारी करने में अत्यंत सहायक है।

किताब की मुख्य विशेषताएँ:

- इस पुस्तक में नवीनतम UP B.Ed. सिलेबस के अनुसार तैयार की गई सरल एवं समझने योग्य थ्योरी शामिल है।
- प्रत्येक विषय—सामान्य ज्ञान, हिंदी, तार्किक एवं विश्लेषणात्मक तर्कशक्ति , कला वर्ग—के लिए अध्यायवार महत्वपूर्ण प्रश्न दिए गए हैं।
- इसमें परीक्षा पैटर्न आधारित अभ्यास सामग्री, महत्वपूर्ण टॉपिक और पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार का विश्लेषण शामिल है, जो अभ्यर्थियों को परीक्षा की समझ विकसित करने में मदद करता है।
- यह पुस्तक छात्रों की अवधारणाओं को मजबूत करने, प्रश्न हल करने की क्षमता बढ़ाने और परीक्षा में समय प्रबंधन सुधारने में सहायता करती है।
- बी.एड. प्रवेश परीक्षा के सभी प्रमुख सेक्शनों का संतुलित कवरेज देकर यह गाइड छात्रों को सटीक दिशा प्रदान करती है।
- इस किताब के माध्यम से विद्यार्थी विषयों के कठिन से कठिन प्रश्नों को भी आसानी से समझ पाएंगे और बी.एड. प्रवेश परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए पूरी तरह तैयार हो सकेंगे।

अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB2223

उत्तर प्रदेश बी.एड. संयुक्त प्रवेश परीक्षा कला वर्ग स्टडी बुक
ISBN - 978-93-6890-668-1
₹ 499

Code	Price	Pages	ISBN
CB2223	₹499	492	978-93-6890-668-1

विषय सूची

➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** ix
उत्तर प्रदेश बी.एड. परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

➔ परीक्षा पैटर्न x

खण्ड-I : सामान्य ज्ञान

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
1.	**प्राचीन भारत का इतिहास** • पाषाण काल या प्रागैतिहासिक काल • सिन्धु घाटी सभ्यता (2350 ई. पू.– 1750 ई. पू.) • वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति • वैदिक साहित्य • धार्मिक आन्दोलन • संगम युग • छठी शताब्दी ई. पू. का भारत तथा महाजनपद काल • मगध का उत्थान • सिकन्दर का आक्रमण • मौर्य साम्राज्य (322-184 ई. पू.) • मौर्योत्तर काल • भारत के यवन राज्य • गुप्त वंश (240-480 ई.) • पुष्यभूति या वर्धन राजवंश • राजपूत काल (800-1200 ई.) • मध्य भारत, उत्तर भारत और दक्कन : तीन साम्राज्यों का युग (8वीं से 10वीं सदी तक) • चोल साम्राज्य (नवीं से बारहवीं सदी तक)	**17**	**1-9**
2.	**मध्यकालीन भारत का इतिहास** • भारत पर अरब एवं तुर्क आक्रमण • दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.) • विजय नगर राज्य • बहमनी राज्य • मुगल वंश • मराठों का उत्कर्ष • पेशवाओं का शासन • सिख धर्म या सिख सम्प्रदाय • मध्यकालीन भारत में भक्ति व सूफी आन्दोलन	**18**	**10-20**

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
3.	**आधुनिक भारत का इतिहास** • मुगल साम्राज्य का पतन • अंग्रेजों की सर्वोच्चता • यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन • सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण • 1857 का विद्रोह • राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रथम चरण (1885-1905) • राष्ट्रवादी आन्दोलन का द्वितीय चरण (1905-1919) • राष्ट्रवादी आन्दोलन का तृतीय चरण (1919-1947) • ब्रिटिश काल में भारत में शिक्षा का विकास • भारत के गवर्नर-जनरल/वायसराय	19	21-36
4.	**भारत का भूगोल** • भारत का सामान्य परिचय • भारत का भौतिक विभाजन • अपवाह-तन्त्र • भारत की जलवायु • प्राकृतिक वनस्पति • भारत की मृदा • भारत की प्रमुख बहुउद्देशीय परियोजनाएँ • भारत की खनिज सम्पदा • ऊर्जा संसाधन • भारत में उद्योग • परिवहन • भारत की प्रमुख जनजातियाँ	22	37-56
5.	**विश्व का भूगोल** • ब्रह्माण्ड • सौरमण्डल • स्थलमण्डल • जलमण्डल • वायुमण्डल • महाद्वीप • आर्थिक भूगोल • प्राकृतिक पर्यावरण	21	57-77
6.	**भारतीय संविधान** • भारत का संवैधानिक विकास • संविधान सभा एवं भारतीय संविधान • भारतीय संविधान के प्रमुख स्रोत • संविधान की उद्देशिका अथवा प्रस्तावना • संघ एवं राज्य क्षेत्र • नागरिकता • मौलिक अधिकार • राज्य के नीति-निदेशक तत्व • मौलिक कर्त्तव्य • संघ की कार्यपालिका • संसद • न्यायपालिका • राज्य की कार्यपालिका • राज्य का विधान मंडल • पंचायती राज एवं नगर पालिकाएँ • संघ और राज्यों के मध्य सम्बन्ध • योजना आयोग • राष्ट्रीय विकास परिषद् • नीति आयोग • निर्वाचन आयोग • राजभाषा • लोक सेवा आयोग • महत्वपूर्ण अनुच्छेद • प्रमुख संविधान संशोधन	21	78-99
7.	**भारतीय अर्थव्यवस्था** • अर्थव्यवस्था का परिचय • राष्ट्रीय आय • भारत में आर्थिक सुधार • भारत में आर्थिक नियोजन एवं पंचवर्षीय योजनाएँ • भारतीय कृषि • उद्योग एवं औद्योगिक नीति • भारतीय वित्त बाजार • लोक वित्त • गरीबी एवं बेरोजगारी	20	100-118

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
8.	**भौतिक विज्ञान** • भौतिक विज्ञान का सामान्य परिचय • यांत्रिकी • खगोलीय दूरियों का मापन • गति के घटक • न्यूटन के गति विषयक नियम • बल • घनत्व • कार्य, सामर्थ्य और ऊर्जा • गुरुत्वाकर्षण • दाब • पदार्थों के सामान्य गुण • सरल आवर्त गति • ध्वनि एवं तरंग गति • ऊष्मा तथा ताप • प्रकाश • विद्युत	20	119-130
9.	**रसायन विज्ञान** • पदार्थ एवं उसकी प्रकृति • भौतिक रसायन • अम्ल, क्षार और लवण • ईंधन • अकार्बनिक रसायन • कार्बनिक रसायन	20	131-136
10.	**जीव विज्ञान** • जीवधारियों का वर्गीकरण • कोशिका एवं कोशिका संरचना • सूक्ष्मजीव • आवृत्तबीजियों की आकारिकी • हॉर्मोन • जन्तु जगत का आधुनिक वर्गीकरण • मानव स्वास्थ्य एवं पोषण • मानव शरीर के तन्त्र • प्रमुख मानव रोग	20	137-152
11.	**विविध** • विभिन्न देशों के राष्ट्रीय खेल • विभिन्न खेलों से सम्बंधित मैदान • विभिन्न खेल और खिलाड़ियों की संख्या • प्रमुख खेल तथा उनसे सम्बन्धित जानकारी • विभिन्न खेलों से सम्बंधित स्टेडियम • विभिन्न खेलों से सम्बंधित ट्रॉफी • प्रमुख खिलाड़ी • ओलम्पिक खेल • प्रमुख खेल पुरस्कार • ओलंपिक में भारतीय • भारत में राष्ट्रीय खेल पुरस्कार • भारत में खेल संस्थान • साहित्यिक पुरस्कार • नागरिक पुरस्कार • भारत के प्रमुख पर्यटन स्थल • भारत के सांस्कृतिक पुरस्कार और व्यक्तित्व • वीरता पुरस्कार • अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार • नोबेल पुरस्कार विजेता 2022 सूची • भारत में नोबेल पुरस्कार विजेता • संयुक्त राष्ट्र संघ • राष्ट्रीय संगठन • महत्त्वपूर्ण तिथि, सप्ताह, वर्ष एवं दशक • महत्त्वपूर्ण पुस्तकें और उनके लेखक • महत्वपूर्ण एवं चर्चित पुस्तकें एवं उनके भारतीय लेखक • विश्व के प्रमुख देशों की राजधानी एवं मुद्रा	20	153-199
		कुल प्रश्न संख्या : 218	

खण्ड-II : सामान्य हिंदी

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा एवं व्याकरण	44	1-9
2.	वर्ण तथा ध्वनि विचार	28	10-12
3.	शब्द-विचार	30	13-21
4.	लिंग, वचन, कारक एवं काल	19	22-26
5.	संधि	16	27-33
6.	समास	20	34-37
7.	पर्यायवाची शब्द	31	38-40
8.	विलोम शब्द	30	41-43
9.	वाक्यांश के लिए एक शब्द	20	44
10.	अनेकार्थक एवं समरूपी भिन्नार्थक शब्द	22	45-46
11.	उपसर्ग और प्रत्यय	14	47-50
12.	मुहावरे एवं लोकोक्ति	16	51-53
13.	शब्दों तथा वाक्यों में सामान्य अशुद्धियाँ	16	54-55
14.	अलंकार, रस एवं छंद	16	56-64
15.	प्रमुख रचनाएँ एवं उनके रचनाकार	15	65-70
16.	अपठित गद्यांश	49	71-74
		कुल प्रश्न संख्या : 386	

खण्ड-III : तार्किक एवं विश्लेषणात्मक तर्कशक्ति

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
1.	सादृश्यता परीक्षण	16	75-77
2.	वर्गीकरण	20	78-80
3.	कोडिंग–डिकोडिंग	15	81-84
4.	रक्त सम्बन्ध	15	85-87
5.	शृंखला परीक्षण	15	88-89
6.	शब्दों का तार्किक क्रम	15	90-91
7.	वेन आरेख	15	92-94
8.	लुप्त पद ज्ञात करना	15	95-96
9.	क्रम व्यवस्था परीक्षण	15	97-99
10.	गणितीय संक्रियाएँ	15	100-102
11.	समय–क्रम परीक्षण	19	103-107
12.	पहेली परीक्षण	11	108-110
13.	पासा तथा घन एवं घनाभ	15	111-114
14.	कथन एवं निष्कर्ष	16	115-116

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
15.	अंकगणितीय तर्कशक्ति	**20**	**117-119**
16.	अक्षर एवं संख्या शृंखला	**30**	**120-122**
17.	अभाषिक तर्कशक्ति	**38**	**123-132**
		कुल प्रश्न संख्या : 305	

खण्ड-V : कला वर्ग

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम (सम्पूर्ण थ्योरी)	अभ्यास प्रश्न	पृष्ठ संख्या
1.	भारत का इतिहास	**22**	**133-162**
2.	भूगोल	**22**	**163-195**
3.	अर्थशास्त्र	**34**	**196-209**
4.	राजनीतिशास्त्र	**20**	**210-223**
5.	समाजशास्त्र	**20**	**224-236**
6.	शिक्षा व दर्शनशास्त्र	**27**	**237-271**
7.	मनोविज्ञान	**27**	**272-283**
		कुल प्रश्न संख्या : 172	

अतिरिक्त अध्ययन सामग्री ई-बुक
(Extra Study Material E-Book)

Extra Study Material ई-बुक का Content

- उत्तर प्रदेश बी.एड. प्रवेश परीक्षा के 3 सॉल्व्ड पेपर्स की ई-बुक
- डिस्काउंट कूपन दिया गया है। उसका उपयोग करें और 'www.examcart.in' से हमारी किताबें सबसे अच्छे डिस्काउंट पर खरीदें।

नोट : **Link Expire** होने से पहले दिए गए **QR Code** को स्कैन करके आप यह **Extra Study Material E-Book** को **Download** कर लें।

ऐसी पुस्तकें जो कोई आपको बताना नहीं चाहता!

इन अनोखी पुस्तकों ने कई छात्रों को उनके पहले प्रयास में ही परीक्षा पास करने में मदद की है और हम जो कहते हैं, उसे साबित भी करते हैं—इसीलिए हर पुस्तक के कुछ सैंपल चैप्टर दिए गए हैं। हम गारंटी देते हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद आपको समझ आएगा कि ये पुस्तकें क्यों सबसे बेहतरीन हैं और क्यों इतने सारे छात्र इनसे सफल हुए हैं।

नोट

पढ़ने के लिए, किसी भी पुस्तक के पास दिए गए **QR Code** को स्कैन करें, उसके वेबसाइट पेज पर **"View PDF"** पर क्लिक करें। अगर पुस्तक पसंद आए, तो **Extra Study Material** ई-बुक में दिया गया डिस्काउंट कूपन इस्तेमाल करें और बेहतरीन डिस्काउंट भी पाएँ!

सामान्य हिंदी (Text Book)

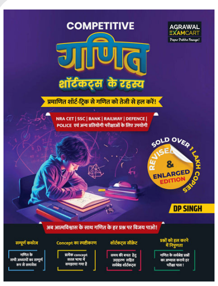

Competitive गणित (Text Book)

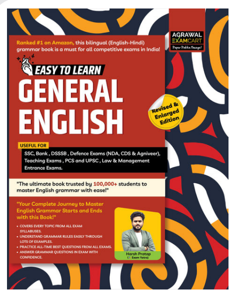

GENERAL ENGLISH (Text Book)

Comprehensive सामान्य ज्ञान (Text Book)

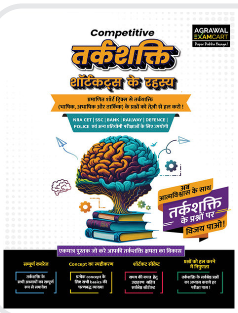

Competitive तर्कशक्ति (Text Book)

STATIC GK (Text Book)

वस्तुनिष्ठ कम्प्यूटर जागरूकता (Question Bank)

वस्तुनिष्ठ हिंदी व्याकरण एवं साहित्य (Question Bank)

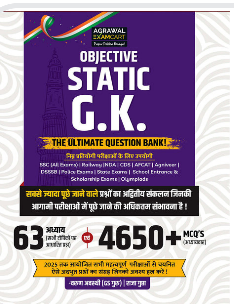

Objective STATIC G.K. (Question Bank)

अध्याय 1

प्राचीन भारत का इतिहास

1. पाषाण काल या प्रागैतिहासिक काल (Stone Age or Prehistoric Time)

जिस काल का कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता है, उसे 'प्रागैतिहासिक काल' कहते हैं। 'आद्य–ऐतिहासिक काल' में लिपि के साक्ष्य तो हैं किन्तु उनके अपठ्य या दुर्बोध होने के कारण उनसे कोई निष्कर्ष नहीं निकलता। जब से लिखित विवरण मिलते हैं, वह **'ऐतिहासिक काल'** है। प्रागैतिहास के अंतर्गत पाषाण कालीन सभ्यता तथा आद्य–इतिहास के अंतर्गत सिंधु घाटी सभ्यता एवं वैदिक सभ्यता आती है, जबकि छठीं शताब्दी ईसा पूर्व से ऐतिहासिक काल का आरंभ होता है। सर्वप्रथम 1863 ई. में भारत में पाषाण कालीन सभ्यता का अनुसंधान प्रारंभ हुआ। उपकरणों की भिन्नता के आधार पर संपूर्ण पाषाण युगीन संस्कृति को तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया गया। ये हैं—पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल और नवपाषाण काल।

उपकरणों की भिन्नता के आधार पर पुरापाषाण काल को भी तीन कालों में विभाजित किया जाता है—

1. पूर्व पुरापाषाण काल—हस्तकुठार, खंडक, विदारिणी,

2. मध्य पुरापाषाण काल—फलक उपकरण तथा

3. उच्च पुरापाषाण काल—तक्षिणी एवं खुरचनी उपकरण।

4. मध्यपाषाण काल—मनुष्य पशुपालक बना।

5. नवपाषाण काल—स्थायी निवास, कृषि कार्य मृदभाण्ड का प्रचलन।

2. सिन्धु घाटी सभ्यता (2350 ई. पू.–1750 ई. पू.) (Indus Valley Civilization)

- **सर जॉन मार्शल**, वर्ष 1902 से 1928 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक थे। इनके द्वारा ही हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई की देख–रेख की गयी। वर्ष 1920 में मार्शल ने हड़प्पा में तथा वर्ष 1922 में मोहनजोदड़ो में खुदाई आरम्भ की। इन्होंने ही वर्ष 1924 में सिन्धु घाटी में नई सभ्यता की खोज की घोषणा की थी। 'ऐलेक्जेण्डर कनिंघम' को भारतीय पुरातत्व का जनक कहा जाता है।
- सिन्धु सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यता थी जिसका विस्तार लगभग 13 लाख वर्ग किमी. में था। जिसका अन्तिम पूर्वी बिन्दु आलगीर पुर मेरठ, अन्तिम पश्चिमी बिन्दु सुत्कना डोर बलूचिस्तान, अन्तिम उत्तरी बिन्दु माण्डा जम्मू–कश्मीर तथा अन्तिम दक्षिणी बिन्दु दायमाबाद महाराष्ट्र थे।
- हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीन नदी–घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है, जो मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्रों में फैली है। इसकी सर्वमान्य तिथि कार्बन डेटिंग पद्धति द्वारा 2300-1750 ई.पू. मानी गई है। इस परिपक्व हड़प्पाई सभ्यता तथा सिंधु घाटी सभ्यता के अधिकतर स्थल घग्गर–हकरा नदी (सरस्वती) के (आर्द्र) तल के साथ–साथ पाये जाते हैं।
- सिन्धु सभ्यता के सबसे महत्वपूर्ण स्थानों में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा शामिल थे। देश के विभाजन के समय अधिकांश स्थल पाकिस्तान में चले गये।
- लोथल, कालीबंगा, रोपड़, भगवानपुरा, बनावली, रंगपुर, धोलावीरा प्रमुख स्थल है जो वर्तमान में भारत में स्थित है।
- (i) मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ है—मृतकों का टीला। मोहनजोदड़ो, सैंधव सभ्यता के प्राचीन बड़े नगरों में से एक था। मोहनजोदड़ो से प्राप्त महास्नानागार सैंधव सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण इमारत है। इस स्नानागार के मध्य स्थित स्नानकुण्ड 11.88 मी लम्बा, 7.01 मी चौड़ा एवं 2.43 मी गहरा है। इसका उपयोग सम्भवतः आनुष्ठानिक क्रिया–कलापों के लिए किया जाता था।

  (ii) सर्वाधिक संख्या में मुहरें मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई है जो मुख्यतः चौकोर है। और अधिकांश सेलखड़ी की थी।

हड़प्पाकालीन स्थल (Harrapan Sites)

प्रमुख स्थल	उत्खननकर्ता	वर्ष	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	श्री दयाराम साहनी	1921	पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में
मोहनजोदड़ो	राखालदास बनर्जी	1922	पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में
सुत्कागेंडोर	ऑरल स्टाइन	1927	बलूचिस्तान
सुतकाकोह	जॉर्ज वेल्स	1962	बलूचिस्तान
बालाकोट	जॉर्ज वेल्स	1962	बलूचिस्तान
अमरी	जे. एम. कजाक	1959-61	सिन्ध
लोथल	एस. एम. तलवार, एस. आर. राव	1953-56	अहमदाबाद (गुजरात)
कालीबंगा	बी. बी. लाल एवं वी. के. थापर	1961	गंगानगर (राजस्थान)
बनवाली	रविन्द्र सिंह विष्ट	1973-74	हिसार (हरियाणा)
कोटदीजी	फजल अहमद खाँ	1955-57	सिन्ध प्रांत (पाकिस्तान)
देसलपुर	पी. पी. पाण्डेय और एम. ए. ढाके	—	भुज जिला (गुजरात)
सुरकोटदा	जगपति जोशी	1964	कच्छ (गुजरात)
रंगपुर	माधवस्वरूप वत्स	1931	अहमदाबाद (गुजरात)
राखीगढ़ी	सूरज भान	1969	हिसार (हरियाणा)
चन्हूदड़ो	गोपाल मजूमदार व अर्नेस्ट मैके	1931	सिंध (पाकिस्तान)

स्थल एवं नदी तट (Sites and River Banks)

स्थल	नदी तट
1. हड़प्पा	रावी
2. मोहनजोदड़ो	सिन्धु
3. लोथल	भोगवा
4. कालीबंगा	घग्घर
5. सुतकागेंडोर	दाश्क
6. चन्हूदड़ो	सिन्धु
7. बनवाली	घग्घर
8. सुरकोटदा	सरस्वती
9. मंडा	चिनाब
10. आलमगीरपुर	हिंडन
11. राखीगढ़ी	घग्घर
12. रोपड़	सतलज

3. वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति (Vedic Civilization & Culture)

वैदिक सभ्यता—हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद भारत में एक नई सभ्यता का विकास हुआ, जिसे वैदिक सभ्यता का नाम दिया गया। इनकी जानकारी हमें वेदों से प्राप्त होती है। यह सभ्यता भी हड़प्पा सभ्यता के क्षेत्र में ही जन्मी और धीरे–धीरे गंगा–यमुना के मैदानों में विकसित होती चली गई।

वैदिक सभ्यता के लोगों ने देवी–देवताओं के सम्मान में ऋचाओं का निर्माण किया। इन ऋचाओं का संकलन चार वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) में किया। वैदिक सभ्यता के लोग आर्य कहलाते थे।

वैदिक सभ्यता के लोग प्रारम्भ में घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते थे, परन्तु बाद में ये लोग बस्तियों में बसने लगे थे। आर्य समाज पितृसत्तात्मक होने के बाद भी यहाँ स्त्रियों का सम्मान और आदर किया जाता था।

वैदिक संस्कृति—चारों वेदों यथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद में वर्णित संस्कृति को वैदिक संस्कृति कहा जाता है। वैदिक संस्कृति के प्रणेता 'आर्य' थे। वैदिक संस्कृति को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जाता है—

- ऋग्वैदिक काल (1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक)
- ऋग्वेद काल में स्थानीय स्वशासन की तीन इकाईयाँ थी—विधाता, सभा व समिति। विधाता धार्मिक व सेना वाले, काम, सभा–न्यायिक काम व समिति राजनीतिक कार्य करती थी।
- उत्तर वैदिक काल (1000 ई. पू. से 600 ई. पू. तक)

विद्वान	आर्यों का मूल निवास स्थान
1. मैक्समूलर	मध्य एशिया (बैक्ट्रिया)
2. बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
3. दयानन्द सरस्वती	तिब्बत
4. गाइल्स	हंगरी अथवा डेन्यूब नदी

आर्यों को जाति कहने वाले पहले यूरोपीयन मैक्समूलर थे।

4. वैदिक साहित्य (Vedic Literature)

वैदिक सभ्यता सरस्वती नदी के तट पर विकसित हुई।

वेद शब्द 'विद' से बना है, जिसका अर्थ **ज्ञान अथवा बुद्धिमत्ता** से होता है। इन्हें ''श्रुति'' भी कहा जाता है। वेद 04 प्रकार के हैं—

(i) ऋग्वेद, (ii) सामवेद, (iii) यजुर्वेद तथा (iv) अथर्ववेद।

ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद को ''वेदात्रयी'' कहते हैं।

I. वेद या मंत्र संग्रह (Vedas or Collection of Hymns)

वेदों के संकलनकर्त्ता **महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास** हैं।

(i) ऋग्वेद—यह प्राचीनतम वेद है तथा इसमें 1028 सूक्त तथा 10 मंडल हैं। दसवें मंडल में ही पुरुष सूक्त है जिसमें चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का उल्लेख है।

(ii) सामवेद—इसमें **1549** ऋचायें हैं। इसका सम्बन्ध संगीत से है। इसके पुरोहित ''उद्गाता'' कहलाते हैं।

(iii) यजुर्वेद—इसका सम्बन्ध यज्ञों से है। इसके दो भाग हैं—कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद। इसके पुरोहित 'अध्वर्यु' कहलाते हैं।

(iv) अथर्ववेद—यह जादू–टोना तंत्र–मंत्र से सम्बन्धित है।

वैदिक यज्ञ—वैदिक यज्ञ दो प्रकार के थे वे जो गृहस्थ द्वारा किए जाते थे और दूसरे वे जिनके लिए कर्मकाण्ड के विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है।

II. ब्राह्मण (Brahmins)

ये गद्य में रची गई टिप्पणियाँ हैं, जो संहिता के मंत्रों की उत्पत्ति और अर्थ स्पष्ट करती हैं। ये निम्न हैं—

ऋग्वेद—ऐतरेय तथा कौशीतकी

सामवेद—पंचविश षड्विश, जैमिनीय तथा छांदोग्य

यजुर्वेद—शतपथ तथा तैत्तीरीय

अथर्ववेद—गोपथ

III. आरण्यक (Aranyaks)

हर ब्राह्मण का दार्शनिक भाग, जंगलों में रहने वाले तपस्वियों के मार्गदर्शन हेतु संगृहीत है।

IV. उपनिषद् या वेदांत (Upnishads & Vedanta)

हर ब्राह्मण के अन्त में यह प्रस्तुत है। यह आर्यों के प्राचीन ग्रंथों में निहित आध्यात्मिक सिद्धान्तों का निचोड़ है। लगभग 108 उपनिषद् उपलब्ध हैं जिसमें मुख्य है—ऐतरेय, तैत्तिरीय, छांदोग्य, कोशीतकी, वृहदारण्य आदि। उपनिषद में ज्ञान के सिद्धान्त को महत्व दिया गया हैं। इसमें ब्रह्म और आत्मा के स्वभाव तथा सम्बन्धों की दार्शनिक व्याख्या की गई है।

V. अन्य साहित्य (Other Literatures)

(i) वेदांग—वेदांग छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद तथा ज्योतिष। इसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कल्पसूत्र है जो आर्यों के गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित है।

(ii) उपवेद

(a) ऋग्वेद—आयुर्वेद (चिकित्साशास्त्र से सम्बन्धित)

(b) यजुर्वेद—धनुर्वेद (युद्ध कला से सम्बन्धित)

(c) सामवेद—गांधर्ववेद (कला एवं संगीत से सम्बन्धित)
(d) अथर्ववेद—शिल्पवेद (भवन निर्माण कला से सम्बन्धित)

हिन्दुओं के **छः विख्यात** दार्शनिक सम्प्रदाय भी वैदिक साहित्य में आते हैं। ये छः प्रणालियाँ निम्नलिखित हैं—

प्रवर्तक	दर्शन
गौतम	न्याय प्रणाली
कपिल	सांख्य दर्शन
कणाद	वैशेषिक
पतंजलि	योगदर्शन
जैमिनी	पूर्व मीमांसा
बादरायण	उत्तर मीमांसा
चार्वाक	चार्वाक

- रामायण एवं महाभारत, दो महाकाव्य हैं। रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि तथा महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं। महाभारत को ''जयसंहिता'' तथा ''सतसहस्री संहिता'' के नाम से तथा रामायण को ''चतुर्विंशति सहस्री संहिता'' के नाम से जाना जाता है।
- पुराणों की संख्या 18 है। अधिकांश पुराणों की रचना तीसरी शताब्दी में हुई है।
- सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक मत्स्य पुराण है जिसमें विष्णु के 10 अवतारों का उल्लेख है।

ऋग्वैदिक देवी–देवता : एक दृष्टि में

वरुण	सकल ब्रह्माण्ड का अधिपति, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, नियामक, प्रजारक्षक
इन्द्र (पुरन्दर)	आँधी, तूफान, बिजली और वर्षा का देवता
विष्णु	संसार का संरक्षक
ऊषा	सूर्योदय–पूर्व की अवस्था की द्योतक
अदिति	आर्यों की सार्वभौम भावना की देवी
सोम	वनस्पतियों, औषधियों के अधिपति

5. धार्मिक आन्दोलन (Religious Movements)

ब्राह्मणवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में छठी शताब्दी ई. पू. दो सम्प्रदायों का उदय हुआ।

यथा—जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म।

I. जैन धर्म (Jainism)

जैन धर्म की स्थापना ऋषभदेव ने की जो जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं। जैनधर्म की स्थापना का वास्तविक श्रेय 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर को जाता है।

- 24वें व अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के निकट कुण्डग्राम (वाज्जिसंघ का गणतन्त्र) में 540 ई. पू. में हुआ था। इनके बचपन का नाम वर्धमान था।
- महावीर स्वामी के पिता सिद्धार्थ तथा माता त्रिशला, जो लिच्छिवी के राजा चेटक की बहन थीं।
- महावीर स्वामी का विवाह यशोदा के साथ हुआ था। इनकी पुत्री का नाम **अनोज्जा (प्रियदर्शना)** तथा दामाद का नाम **जमालि** था।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित चार महाव्रत—**सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह** तथा **अस्तेय** में महावीर स्वामी ने पाँचवाँ ब्रह्मचर्य जोड़ा।
- जैन धर्म दो पंथों में बँटा—श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र धारण करने वाले), दिगम्बर (नग्न रहने वाले)।
- लगभग 72 वर्ष की आयु में 468 ई. पू. में महावीर स्वामी की राजगृह के समीप **पावापुरी** (राजगीर) में मृत्यु हो गई।
- जैन धर्म के त्रिरत्न हैं—**सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् आचरण**।
- जैन धर्म को राष्ट्रकूट का संरक्षण प्राप्त था।

जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर और उनके चिह्न

- श्री ऋषभनाथ—बैल,
- श्री अजितनाथ—हाथी,
- श्री संभवनाथ—अश्व (घोड़ा),
- श्री अभिनंदननाथ—बंदर,
- श्री सुमतिनाथ—चकवा,
- श्री पद्मप्रभ—कमल,
- श्री सुपार्श्वनाथ—साथिया (स्वस्तिक),
- श्री चन्द्रप्रभ—चन्द्रमा,
- श्री पुष्पदंत—मगर
- श्री शीतलनाथ—कल्पवृक्ष
- श्री श्रेयांसनाथ—गैंडा
- श्री वासुपूज्य—भैंसा,
- श्री विमलनाथ—शूकर,
- श्री अनंतनाथ—सेही,
- श्री धर्मनाथ—वज्रदंड,
- श्री शांतिनाथ—मृग (हिरण),
- श्री कुंथुनाथ—बकरा
- श्री अरहनाथ—मछली
- श्री मल्लिनाथ—कलश
- श्री मुनिसुव्रतनाथ—कच्छप (कछुआ)
- श्री नमिनाथ—नीलकमल
- श्री नेमिनाथ—शंख
- श्री पार्श्वनाथ—सर्प
- श्री महावीर—सिंह
- मल्लिनाथ एकमात्र महिला जैन तीर्थंकर थीं।

जैन सभाएँ (Jain Councils)

जैनसभा	वर्ष	शासक	अध्यक्ष
प्रथम (पाटलिपुत्र)	300 ई. पू.	चंद्रगुप्त मौर्य	स्थूल भद्रबाहु
द्वितीय (बल्लभी) गुजरात	512 ई.	ध्रुवसेन	देवार्द्धि क्षमाश्रवण

II. बौद्ध धर्म (Buddhism)

गौतम बुद्ध को बौद्ध धर्म का प्रवर्तक माना जाता है। ये महावीर के समकालीन थे। ज्ञान प्राप्त करने के बाद इन्हें बुद्ध कहा जाने लगा था।

- बुद्ध का अर्थ ज्ञान प्राप्ति होता है।
- उन्होंने अपना प्रथम उपदेश **सारनाथ** (ऋषिपतन) में दिया। बौद्ध परम्परा में इसे **धर्मचक्रप्रवर्तन** के नाम से जाना जाता है।

  गौतम बुद्ध द्वारा अपने धर्म में दीक्षित किया जाने वाला अन्तिम व्यक्ति सुभद्दा था।

महाबोधि मन्दिर समूह बोधगया (गया, बिहार) में अवस्थित है। महाबोधि मन्दिर समूह में स्थित महाबोधि मन्दिर के निकट 'बोधिवृक्ष' है, जिसके

नीचे महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहीं से गौतम बुद्ध ने दुनिया के लिए बौद्ध धर्म के अपने दिव्य ज्ञान का प्रचार किया था। महाबोधि मन्दिर समूह में स्थित महाबोधि मन्दिर का निर्माण मौर्य शासक अशोक ने 250 ई. पू. में करवाया था।

- बिहार में स्थित प्रसिद्ध बौद्ध स्थल बोधगया, निरंजना नदी के तट पर स्थित है। इसे फाल्गु नदी भी कहा जाता है।
- महायान, हीनयान, स्थविर महासंधिक वज्रयान ये सभी बौद्ध धर्म सम्प्रदाय या शाखाएँ हैं।
- गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश पाली भाषा और ब्राह्मीलिपि में दिये थे।
- महायान बौद्धशाखा में उपदेश की भाषा संस्कृत थी।

उनकी शिक्षाएँ, जिन्हें बौद्ध धर्म कहा जाता है, चार आर्य सत्यों पर आधारित हैं—

दु:ख	:	संसार में दु:ख है।
दु:ख समुदाय	:	दु:ख के कारण हैं
निरोध	:	दु:ख का निवारण हो सकता है
मार्ग	:	इसके निवारण के लिए अष्टांगिक मार्ग है।

महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय
(Biography of Buddha)

जन्म	:	563 ई. पू.
जन्म स्थान	:	लुम्बिनी (कपिलवस्तु) इस स्थान को अशोक के रुम्मिनदेई स्तम्भ से अंकित किया गया है।
पिता	:	शुद्धोधन (शाक्यों के राजा कपिलवस्तु के शासक)
माता	:	महामाया देवी
बचपन का नाम	:	सिद्धार्थ
पालन–पोषण	:	गौतमी प्रजापति (मौसी)
विवाह अवस्था	:	यशोधरा (कोलिय गणराज्य की राजकुमारी)
पुत्र	:	राहुल
मृत्यु	:	काल 483 ई.पू.
स्थान	:	कुशीनगर

बौद्ध धर्म में बुद्ध की मृत्यु को महापरिनिर्वाण कहा गया है।

(i) अष्टमार्गी सिद्धान्त—यह दु:ख निरोध मार्ग है। इसका निरूपण निम्न प्रकार से किया जा सकता है—

(i) सम्यक् ज्ञान,	(v) सम्यक् प्रयत्न,
(ii) सम्यक् इच्छा,	(vi) सम्यक् बुद्धि,
(iii) सम्यक् वाणी,	(vii) सम्यक् समाधि तथा
(iv) सम्यक् जीवन,	(viii) सम्यक् कार्य।

(ii) साहित्य—बौद्ध साहित्य मूलतः पाली भाषा में लिखे गये थे तथा मुख्यतः त्रिपिटकों में समाहित हैं, ये निम्नलिखित हैं—

(a) सुत्तपिटक (b) अभिधम्म पिटक (c) विनय पिटक

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित बौद्ध साहित्य उल्लेखनीय हैं—

(iii) दीपवंश तथा महावंश

(iv) महावस्तु

(v) मिलिन्दपन्हो में यूनानी शासक मिलिन्द तथा बौद्ध भिक्षु नागसेन के दार्शनिक विषय से सम्बन्धी वाद–विवाद का वर्णन किया गया है।

बौद्ध संगीतियाँ
(Buddhist Councils)

बौद्ध संगीति	स्थान	वर्ष	शासक	अध्यक्ष
प्रथम	सप्तपर्णी गुफा (राजगृह)	483 ई. पू.	अजातशत्रु	महकस्यप
द्वितीय	वैशाली	383 ई. पू.	कालाशोक	सबकामी
तृतीय	पाटलिपुत्र	250 ई. पू.	अशोक	मोगलिपुत्र तिस्स
चतुर्थ	कुण्डलवन (कश्मीर)	72 ई.	कनिष्क	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)

6. संगम युग
(Sangam Age)

दक्षिण भारत में लगभग तीन सौ ईसा पूर्व से तीन सौ ईस्वी के बीच की अवधि को संगम काल या संगम युग के नाम से जाना जाता है। इस युग की अवधि पहली शताब्दी से दूसरी शताब्दी के बीच थी।

सुदूर दक्षिण के संगम युग की जानकारी का प्रमुख स्रोत संगम साहित्य है। संगम साहित्य में हमें तीन प्रमुख राज्यों—**पाण्ड्य, चोल** तथा **चेरों** के विषय में जानकारी मिलती है। ई. की प्रथम शताब्दी से तीसरी शताब्दी ई. पू. के मध्य तक 'संगम युग' का समय माना जाता है।

I. संगम साहित्य (Sangam Literature)

तमिल भाषा में उपलब्ध प्राचीनतम साहित्य 'संगम– साहित्य' है, जो तीन संगमों के उपरान्त तैयार किया गया था। ये संगम पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में हुआ था।

(i) प्रथम संगम—यह संगम पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में उनकी प्राचीन राजधानी **'मदुरा'** में **अगस्त्य ऋषि** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था।

(ii) द्वितीय संगम—द्वितीय संगम को भी पाण्ड्य शासकों का सहयोग प्राप्त हुआ था। यह **कपाटपुरम्** अथवा **अलवै** में शुरू में अगस्त्य ऋषि की अध्यक्षता, लेकिन बाद में तोल्काप्पियर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था।

(iii) तृतीय संगम—यह संगम उत्तरी **मदुरा** में **नक्कीयर** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था।

II. प्रमुख तमिल ग्रंथ (Famous Tamil Texts)

(i) तोल्काप्पियम्—यह 'द्वितीय संगम' का एक मात्र शेष ग्रन्थ है। अगस्त्य ऋषि के बारह योग्य शिष्यों में से एक 'तोल्काप्पियर' द्वारा यह ग्रन्थ लिखा गया था।

(ii) **पत्तिनपालै**—इसकी रचना भी रुद्रनकन्नार ने की। इस ग्रन्थ में प्रेमगीत संगृहीत है।

(iii) **सिरुपानात्रुप्पदै**—इसकी रचना नत्थनार ने की थी।

(iv) **पदिनेकिल्लकणवन्कु**—यह तृतीय संगम का तीसरा संग्रह ग्रन्थ है।

III. संगम युगीन राज्य (Sangam Aged States)

संगम साहित्य से सुदूर दक्षिण के तीन प्रमुख राज्यों—पाण्ड्य, चोल तथा चेर के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(i) चोल राज्य

संगमयुगीन राज्यों में सर्वप्रथम चोलों का उदय हुआ था। इस राज्य की प्राचीनतम राजधानी उत्तरी मनलूर थी तथा इसके बाद उरैयूर में बनी। चोलों का राजकीय चिह्न **'बाघ'** था।

इलंजेत चेन्नि—इस वंश का महत्वपूर्ण प्रथम शासक था तथा **कारिकाल** को (मुक्तलसी टाँगों वाला' अर्थात् 'पांव जला व्यक्ति) इलंजेत चेन्नि का पुत्र था। सिंचाई के लिए 16 मील लम्बी चोल झील का निर्माण चोल शासक राजेन्द्र प्रथम द्वारा करवाया गया था।

(ii) पाण्ड्य राज्य

प्राचीन पाण्ड्य राज्य चोल राज्य की प्रारम्भिक राजधानी **'कोरकाई'** थी। बाद में इसका केन्द्र **मदुरई** बना। पाण्ड्य राज्य का राजकीय चिह्न 'मछली' था।

(iii) चेर राज्य

प्राचीन चेर राज्य का राजकीय चिह्न **'धनुष'** था। प्राचीन चेर राज्य की दो राजधानियाँ थीं—वंजि और तोण्डी। इस राज्य के प्रमुख शासक निम्नलिखित थे—उदयनजेराल, नेन्दनजेराल, आदन कुट्टुवन, शेनगुट्टवन आदि।

7. छठी शताब्दी ई. पू. का भारत तथा महाजनपद काल (6th Century BC India & Mahajanpada Age)

सोलह महाजनपद (Sixteen Mahajanpadas)

छठी शताब्दी ई.पू. में उत्तरी भारत विभिन्न जनपदों में विभक्त था। बौद्ध ग्रंथ **अंगुत्तर निकाय** तथा जैन ग्रंथ **'भगवती सूत्र'** में सोलह (16) महाजनपदों का उल्लेख है जिसे **षोड्श महाजनपद** कहा जाता था। ये जनपद निम्न प्रकार थे—

महाजनपद (Mahajanpadas)

क्र. सं.	जनपद	स्थिति	राजधानी
1.	काशी	वरुणा तथा आसी नदी के संगम पर	वाराणसी
2.	कौशल	उत्तर प्रदेश के मध्य में उत्तर की ओर	श्रावस्ती
3.	अंग	मगध राज्य के पूर्व में	चम्पानगरी
4.	मगध	आधुनिक बिहार राज्य के गया तथा पटना जिले के मध्य से	राजगृह
5.	मल्ल	वज्जि संघ राज्य के उत्तर में स्थित थी। यह दो भागों में विभाजित था	एक भाग—कुशीनगर दूसरा भाग—पावापुरी
6.	वज्जि	आधुनिक बिहार राज्य के उत्तरी भाग में स्थित। यह आठ राज्यों का एक संघ था	वैशाली
7.	चेदि	केन नदी के तट पर आधुनिक बुन्देलखण्ड में स्थित था	शुक्तिमती
8.	वत्स	आधुनिक इलाहाबाद के पास	कौशाम्बी
9.	कुरु	दिल्ली और मेरठ के समीप स्थित था	इन्द्रप्रस्थ
10.	पांचाल	गंगा यमुना के दोआब में आधुनिक रुहेलखण्ड में स्थित था। यह दो भागों में विभक्त था (क) उत्तरी पांचाल (ख) दक्षिणी पांचाल	आहिक्षत्र काम्पिल्य
11.	अश्मक	गोदावरी नदी के तट पर स्थित था दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद	पोटली/पोतन
12.	मत्स्य	यह वर्तमान जयपुर, अलवर तथा भरतपुर के कुछ भागों में स्थित था	विराटनगरी
13.	शूरसेन	मत्स्य राज्य के दक्षिण में स्थित था	मथुरा
14.	गान्धार	यह आधुनिक कश्मीर के आस—पास स्थित था	तक्षशिला
15.	कम्बोज	यह कश्मीर, अफगानिस्तान तथा पामीर के भू—भाग तक था	हाटक
16.	अवन्ति	मालवा प्रदेश में स्थित था	उज्जयनी महिष्मती

8. मगध का उत्थान (Rise of Magadh)

छठी शताब्दी ई. पू. में महाजनपदों में उत्तर भारत में मगध, काशी, कौशल और अंग प्रमुख शक्तिशाली राज्य थे, परन्तु मगध महाजनपद अपने समक्ष राज्यों से कहीं अधिक शक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहा। आरम्भिक मगध के प्रमुख वंशों का विवरण निम्न प्रकार है—

I. हर्यंक वंश (544 ई.पू. से 412 ई.पू.)
II. शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)
III. नंद वंश (344-324 ई.पू.)

I. हर्यंक वंश (Haryank Dynasty)

हर्यंक वंश का काल 544 ई. पू. से 412 ई. पू. तक माना जाता है। इस वंश का वास्तविक संस्थापक बिम्बिसार, जबकि नागदशक अंतिम शासक था।

(i) बिम्बिसार (श्रोणिक)

- बिम्बिसार (558-491 ई. पू.) हर्यंक वंश का संस्थापक था। इनकी राजधानी **गिरिब्रज (राजगृह)** थी।
- बिम्बिसार ने अपने राजवैध 'जीवक' को अवन्ति नरेश चण्डप्रद्योत की पीलिया (पाण्डु) नामक बीमारी को ठीक करने के लिए भेजा था।

(ii) अजातशत्रु (कुणिक/अशोक चंड)

- बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु (492-460 ई. पू.) ने उसकी हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया।
- अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदायिन ने 461 ई. पू. की थी।

(iii) उदायिन

- उदायिन ने गंगा एवं सोन नदियों के संगम पर स्थित पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। **पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना)** की स्थापना का श्रेय उदायिन को जाता है।

II. शिशुनाग वंश (Shishunag Dynasty)

- हर्यंक वंश के एक सेनापति शिशुनाग ने उदायिन के पुत्र नागदशक को हटाकर मगध के सिंहासन पर अधिकार करके शिशुनाग वंश की स्थापना की।
- शिशुनाग के शासन काल में राजधानी **पाटलिपुत्र** से बदलकर **वैशाली** ले जायी गयी।
- शिशुनाग वंश का अंतिम शासक नंदिवर्धन था।

III. नन्द वंश (Nanda Dynasty)

- इस वंश का संस्थापक **महापद्मनन्द** को माना जाता है।
- पुराणों में महापद्मनन्द को **सर्वक्षत्रान्तक** कहा गया है।
- नन्द वंश का अन्तिम शासक **धनानन्द** था। इसी के शासन काल में **सिकन्दर** ने भारत पर आक्रमण किया। धनानन्द की चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य की सहायता से हत्या कर **मौर्य वंश** की स्थापना की।

9. सिकन्दर का आक्रमण (Alexander's Invasion)

- मेसीडोनिया (मकदूनिया) के शासक फिलिप द्वितीय के पुत्र सिकन्दर ने 326 ई. पू. में सिन्धु नदी पार करके भारत की धरती पर कदम रखा तथा झेलम नदी के तट पर राजा पोरस के साथ उसने 'वितस्ता का युद्ध' लड़ा।
- वितस्ता के युद्ध में पोरस की विशाल सेना पराजित हुई और पोरस को बन्दी बना लिया गया। सिकन्दर भारत में लगभग 19 महीने तक रहा। 323 ई. पू. में बेबीलोन पहुँचकर सिकन्दर का निधन हो गया।

10. मौर्य साम्राज्य (322-184 ई.पू.) (Mauryan Empire)

25 वर्ष की अवस्था में चन्द्रगुप्त मौर्य तथा विष्णुगुप्त ने अपनी योग्यता तथा कूटनीति से अन्तिम नन्द शासक धनानंद के विशाल साम्राज्य को **ध्वस्त करके मौर्य वंश की आधारशिला रखी।**

I. चन्द्रगुप्त मौर्य (Chandragupta Maurya) (321-297 ई.पू.)

305 ई.पू. में सीरिया के यूनानी शासक सेल्यूकस को पराजित किया तथा उसने सेल्यूकस की पुत्री **हेलेन** से विवाह किया। **मेगस्थनीज ने मौर्य प्रशासन पर 'इण्डिका'** नामक पुस्तक लिखी। इण्डिका में मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को 7 भागों में विभाजित किया था। चन्द्रगुप्त ने भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा ली तथा 298 ई. पू. उसकी मृत्यु हो गई।

II. बिन्दुसार (Bindusara) (297-273 ई.पू.)

यह चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी पुत्र था। उसे **'अमित्रघात'** भी कहा जाता है। अभित्रचेटस या अमितकेडीज भी कहा गया है।

III. अशोक (Ashoka) (273-232 ई.पू.)

अशोक राजा बनने से पूर्व, अपने पिता बिन्दुसार के समय अवन्ति का राज्यपाल था।

सिंहली अनुश्रुति और महावंश के अनुसार।

अशोक ने अपने **99 भाइयों** की हत्या कर राजगद्दी प्राप्त की। अपने शासनकाल के चार वर्षों बाद **269 ई.पू. में राज्याभिषेक** कराया। उसने **261 ई.पू.** में **कलिंग पर विजय** प्राप्त की, परन्तु भयानक रक्तपात व नरसंहार देखकर वह द्रवित हो उठा जिसके फलस्वरूप उसने **उपगुप्त** से शिक्षा प्राप्त कर बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। अशोक को 'देवनाम प्रियदर्शी' के नाम से भी जाना जाता है।

11. मौर्योत्तर काल (Later Maurya Age)

अशोक की मृत्यु के बाद धीरे–धीरे मौर्य साम्राज्य का पतन होने लगा। ई.पू. 185 ई. पू. में अन्तिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या उसके महासेनापति ने पुष्यमित्र शुंग ने कर दी तथा शुंग वंश की नींव रखी।

I. शुंग वंश (Shunga Dynasty)

- शुंग ब्राह्मण वंशीय शासक थे। इस राजवंश का अन्तिम राजा देवभूति था।
- भरहुत स्तूप का निर्माण **पुष्यमित्र शुंग** ने करवाया था।
- इंडो–यूनानी शासक मिनांडर को पुष्यमित्र शुंग ने पराजित किया था।
- शुंग शासकों ने अपनी राजधानी **विदिशा** में स्थापित की थी।

II. आन्ध्र सातवाहन वंश (Andhra-Satvahana Dynasty)

- सुशर्मा कण्व के सेनापति **सिमुक** ने 27 ई.पू. में उसका वध कर सातवाहन वंश की नींव डाली। सिमुक शातकर्णी, गौतमीपुत्र शातकर्णी, वसिष्ठीपुत्र, पुलुमावी तथा यज्ञश्री शातकर्णी इस वंश के प्रमुख शासक थे, जिन्होंने लगभग **250 ई.** तक शासन किया। **यज्ञश्री शातकर्णी** इस वंश का अन्तिम महत्त्वपूर्ण शासक था।
- गौतमी पुत्र **शातकर्णी** (106–130 ई.) इस वंश का सर्वाधिक महान शासक था। कहा जाता है कि इसके घोड़े तीन समुद्र का पानी पिया करते थे।
- सातवाहन शासक **'हाल'** ने **'गाथासप्तशती'** नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- इस काल में **ताँबे, काँसे** के अलावा **शीशे के सिक्के** काफी प्रचलित थे।

12. भारत के यवन राज्य (Greek States in India)

I. शक (Shaka)

- भारत के शक राजा अपने आपको **क्षत्रप** कहते थे।

- रुद्रदामन ने सातवाहन नरेश शतकर्णी को दो बार हराया तथा चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री द्वारा बनवाई गई सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण में भारी धन व्यय किया। जूनागढ़ का अभिलेख रुद्रदामन प्रथम से सम्बन्धित है।

II. कुषाण (Kushanas)

- कुषाण वंश का संस्थापक **कुजुल कडफिसेस** था।
- सर्वप्रथम **विम कडफिसेस** ने भारत में कुषाण सत्ता की स्थापना की और **सर्वप्रथम बड़ी मात्रा में सोने के सिक्के जारी किये।**
- कनिष्क ने 78 ई. में शक सम्वत् प्रचलित किया था, तथा इसी वर्ष कनिष्क का राज्याभिषेक हुआ था।
- कनिष्क के शासनकाल के तीसरे वर्ष में बौद्ध सन्त वाला द्वारा सारनाथ में बोधिसत्व प्रतिमा लेख स्थापित किया गया।
- कनिष्क की प्रथम राजधानी **पेशावर (पुरुषपुर)** तथा दूसरी राजधानी मथुरा थी।
- कनिष्क के दरबार में **पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष** तथा **नागार्जुन** जैसे बौद्ध दार्शनिक भी निवास करते थे।
- बुद्धचरित अश्वघोष की प्रमुख रचना है।
- नागार्जुन को **भारत का आइन्सटीन** कहा जाता है। इन्होंने अपनी पुस्तक **माध्यमिक सूत्र में 'सापेक्षता का सिद्धान्त'** प्रतिपादित किया।
- भारत में सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्कों का **प्रचलन कुषाणों ने चलवाया।**
- प्रसिद्ध पुस्तक **'कामसूत्र'** की रचना **'वात्स्यायन'** द्वारा इसी काल में की गई।
- कनिष्क के **राजवैद्य चरक (चरक संहिता के रचनाकार)** थे।
- यह काल गांधार शैली की उत्पत्ति का काल भी था।

13. गुप्त वंश (240-480 ई.) (Gupta Dynasty)

I. श्रीगुप्त (240-280 ई.) (Srigupta)

श्रीगुप्त गुप्त वंश का संस्थापक था, जिसे गुप्तों का आदि पुरुष कहा गया है। उसने 240–280 ई. तक शासन किया। उसने महाराज की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद उसका पुत्र घटोत्कच शासक बना।

II. चन्द्रगुप्त प्रथम (320–335 ई.) (Chandragupta I)

चन्द्रगुप्त प्रथम इस वंश का प्रथम प्रमुख शासक था तथा उसे **गुप्त संवत्** का संस्थापक माना जाता है।

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमार गुप्त प्रथम द्वारा कराई गई।

III. समुद्रगुप्त (335–375 ई.) (Samudragupta)

उसे **भारत का नेपोलियन** भी कहते हैं।

अप्रतिरथ व्याघ्र परक्रमांक आदि उपाधि समुद्रगुप्त ने धारण की थी। समुद्रगुप्त ने बौद्ध भिक्षु वसुबन्धु को संरक्षण प्रदान किया था और श्रीलंका के शासक के यहाँ अपने दूत भेजे थे।

(i) हरिषेण के **'प्रयागप्रशस्ति'** , इलाहाबाद का स्तंभ समुद्रगुप्त से सम्बन्धित है।
   - समुद्रगुप्त की एक अन्य उपाधि पृभित्या प्रथम वीर भी थी।

(ii) समुद्रगुप्त उच्चकोटि का कवि एवं संगीतज्ञ भी था, इसी कारण उसे **'कविराज'** कहा जाता था।

(iii) समुद्रगुप्त को सिक्कों पर **वीणा बजाते हुए** चित्रित किया गया है।

IV. चन्द्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.) (Chandragupta II)

समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय शासक बना। चद्रगुप्त द्वितीय के अन्य नाम देवगुप्त, देवराज, तथा देवश्री और उपधियाँ क्रमशः विक्रमांक, विक्रमादित्य और परमभागवत थी। प्राचीन भारत की श्रेष्ठतम साहित्य प्रतिभा **कालिदास** उसकी राज्यसभा के रत्न थे। **धनवन्तरि** जैसे प्रसिद्ध चिकित्सक इसी के शासनकाल में हुए थे। चीनी यात्री फाह्यान भी इसी के शासनकाल में आया था।

फाह्यान गुप्तकाल में गौतम बुद्ध की शिक्षाओं के अध्ययन के लिए भारत आया था।

- दिल्ली में कुतुबमीनार के समीप **महरौली का स्तम्भ** का निर्माण चन्द्रगुप्त द्वितीय ने करवाया था। इसके पुत्र कुमार गुप्त प्रथम ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इसे **ऑक्सफोर्ड ऑफ महायान बौद्ध** कहा गया।
- इसी वंश के शासक स्कंदगुप्त के शासनकाल में **हूण जाति के लोगों ने अपने आक्रमण गुप्त राज्य पर आरम्भ** कर दिये थे।
- स्कन्दगुप्त ने गिरनार पर्वत पर स्थित **सुदर्शन झील** का पुनरुद्धार करवाया।
- गुप्त युग में शान्ति, समृद्धि का चतुर्मुखी विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप इस काल को भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है।
- गुप्त वंश के पश्चात् ईसा की छठी सदी के मध्य हूणों ने पंजाब पर अपना वर्चस्व स्थापित किया। हूण खानाबदोश लोग थे।
- हूणों द्वारा सर्वप्रथम 455 ई. में भारत पर आक्रमण किया गया, किन्तु स्कन्दगुप्त के पराक्रम के सामने उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। भारत पर आक्रमण करने वाले हूणों के नेता क्रमशः तोरमाण व मिहिर कुल थे। इसके अतिरिक्त खुशनबाज को हूणों का प्रथम राजा माना जाता है।
- विक्रम संवत् की शुरुआत 57 ई. पू. में हुई। विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने की उपलब्धि के रूप में इसकी शुरुआत की।
- गुप्त वंश का अन्तिम शासक विष्णुगुप्त III था।

14. पुष्यभूति या वर्धन राजवंश (Pushyabhuti or Vardhan Dynasty)

हर्षवर्धन (606-647 ई.) (Harsh Vardhan)

- पुष्यभूति, वर्धन वंश का संस्थापक था। पुष्यभूति ने थानेश्वर को अपनी राजधानी बनाया। वह 'शिव' का परम भक्त था।
- हर्षवर्धन, राज्यवर्धन के बाद थानेश्वर के सिंहासन पर बैठा। हर्षवर्धन के विषय में बाणभट्ट के 'हर्षचरित' से व्यापक जानकारी मिलती है। हर्षवर्धन ने लगभग 41 वर्ष (606-647AD) शासन किया।
- हर्ष बौद्ध धर्म का अनुयायी था।

15. राजपूत काल (800-1200 ई.)
(Rajput Age)

हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तरी–पश्चिमी भारत में छोटे–छोटे स्वतन्त्र राज्यों का उदय हुआ। इन विभिन्न छोटे–छोटे स्वतन्त्र राज्यों के शासक राजपूत थे, जिन्होंने 1200 ई. तक लगभग 500 वर्षों तक शासन किया। भारतीय इतिहास में इस काल को **'राजपूत युग'** के नाम से भी जाना जाता है।

I. चौहान वंश (Chauhan Dynasty)

यह उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली वंश था। पृथ्वीराज चौहान इस वंश का वीर, प्रतापी एवं अन्तिम शासक था जिसका मोहम्मद गौरी के साथ तराइन का प्रथम तथा द्वितीय युद्ध हुआ था। **इसी राजवंश के शासन काल में हुई।**

- **वासुदेव** ने चौहान वंश की स्थापना की। इसकी राजधानी **अहिक्षत्र** थी।

II. गहड़वाल (राठौर) वंश (Gahadwal/Rathore Dynasty)

- गहड़वाल वंश की स्थापना चन्द्रदेव ने (1080-85 ई.) की थी। इसकी राजधानी **कन्नौज** एवं द्वितीय राजधानी **वाराणसी** थी।

III. बुन्देल या चन्देल वंश (Bundel/Chandel Dynasty)

इस वंश की स्थापना नन्नुक ने की। यशोवर्मन इस वंश का प्रथम प्रतापी एवं स्वतन्त्र शासक था। जिसने बुन्देलखण्ड पर शासन किया। परमाल अथवा परमार्दिदेव चन्देल शासक पमार्दिदेव के समय आल्हा और ऊदल जैसे प्रसिद्ध सेनापति थे। चन्देल शासकों की राजधानी खुजराहों थी। चंदेल इस वंश का अन्तिम शासक था। इसी के शासनकाल में तुर्कों ने चंदेल राज्य पर आक्रमण किया था जिसके फलस्वरूप चन्देल वंश के पतन की शुरुआत हुई। इसी वंश के शासनकाल में खजुराहो मन्दिर का निर्माण हुआ। खजुराहो के मन्दिरों में कंदरिया महादेव सर्वोत्तम हैं।

IV. परमार वंश (Parmar Dynasty)

इस वंश का संस्थापक **उपेन्द्र** था। श्री हर्ष इस वंश का प्रथम स्वतन्त्र शक्तिशाली शासक था जिसने राष्ट्रकूटों को पराजित किया। राजा भोज के नाम पर भोपाल शहर बसा, अपनी दानशीलता, कला एवं विद्यानुराग के **कारण वह इस वंश के सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा थे।**

V. सेन वंश (Sen Dynasty)

सामंत सेन सेन वंश का संस्थापक था जिसने बंगाल तथा बिहार पर अपना शासन किया। इसकी राजधानी नदिया (लखनौती) थी। लक्ष्मण सेन इस वंश का अन्तिम प्रसिद्ध राजा था। **गीतगोविन्द** के रचयिता जयदेव इसके दरबारी कवि थे।

VI. कल्चुरी वंश (Kalchuri Dynasty)

इस वंश का संस्थापक 'कोकल्ल' था। जिसने 'त्रिपुरी' को अपनी राजधानी बनाकर शासन किया। इस वंश की दो शाखाएँ थीं। गंगेयदेव इस वंश का शक्तिशाली शासक था, जिसको विक्रमादित्य की उपाधि प्राप्त हुई।

VII. पल्लव वंश (Pallava Dynasty)

- पल्लव वंश का वास्तविक संस्थापक **सिंहविष्णु** (574-600 ई.) को माना जाता है। इसकी राजधानी **कांचीपुरम्** थी।
- पल्लव नरेश **महेन्द्र वर्मन प्रथम** (600-630 ई.) महान निर्माता कवि और संगीतज्ञ था। इसने **मत्त विलास प्रहसन** नामक हास्य ग्रंथ की रचना की, इसने **भगवदज्जुकीयम** नामक ग्रंथ भी लिखा।
- **नरसिंहवर्मन प्रथम** (630-668 ई.) पल्लव वंश का सर्वाधिक यशस्वी शासक था। उसने बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय पराजित करने के बाद **'विजय स्तम्भ'** स्थापित किया तथा **'वातापीकोण्ड'** की उपाधि धारण की।
- नरसिंहवर्मन ने **महाबलीपुरम् नगर** की स्थापना की तथा महाबलीपुरम के प्रसिद्ध एकात्मक **रथों (सात पैगोडा)** का निर्माण भी उसी ने करवाया।

VIII. गुजरात के चालुक्य (Chalukayas of Gujarat)

गुजरात में इस वंश का संस्थापक **'मूलराज प्रथम'** था। जयसिंह सिद्धराज इस वंश का **सर्वाधिक शक्तिशाली** एवं कुमारपाल इस वंश का **अन्तिम शासक** था। इसकी मृत्यु के बाद इस वंश का क्रमशः पतन हो गया। हेमचन्द्र कुमारपाल के सलाहकार थे।

16. मध्य भारत, उत्तर भारत और दक्कन : तीन साम्राज्यों का युग (8वीं से 10वीं सदी तक)
(Central India, Northern India & Deccan Age of Three Empires)

सातवीं सदी में हर्ष के साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत, दक्कन और दक्षिण भारत में अनेक साम्राज्य उत्पन्न हुए। इसमें पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट प्रमुख थे।

I. पाल साम्राज्य (Pala Empire)

- पाल साम्राज्य की स्थापना 750 ई. में **गोपाल** के द्वारा बंगाल में हुई थी।
- धर्मपाल के शासनकाल में कन्नौज पर नियंत्रण के लिए पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूटों में त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ जिसमें धर्मपाल विजयी हुआ।
- धर्मपाल ने **नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरुत्थान किया** और **विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना** की जहाँ वज्रयान शाखा की पढ़ाई कराई जाती थी।
- बीतपाल व श्रीमान नामक भारत के महान कलाकार इसी युग से सम्बन्धित थे।

II. प्रतिहार (Pratiharas)

- इस वंश की स्थापना **हरिश्चन्द्र** ने की थी।
- प्रतिहार वंश की पहली राजधानी उदमाण्डपुर थी।
- नागभट्ट प्रथम (730 - 756 ई.)—यह गुर्जर प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- नागभट्ट और उसके पुत्र महेन्द्र पाल के समय उनके दरबार में **राजशेखर** निवास करते थे जो उसके राजगुरु भी थे। राजशेखर की रचनाएँ—**कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, हरविलास, भुवनकोश, बाल रामायण।**
- इस वंश का अंतिम शासक **यशपाल** था।

III. राष्ट्रकूट (Rashtrakutas)

- राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक **दंतिदुर्ग** था जिसने शोलापुर के पास **मान्यखेत** या **मलखेड़** को अपनी राजधानी बनाया।

17. चोल साम्राज्य (नवीं से बारहवीं सदी तक) [Chola Empire (9th to 12th Century AD)]

- चोल साम्राज्य का संस्थापक **विजयालय** (850 ई. से 871 ई.) था, ये पहले पल्लवों का सामंत था। उसने 850 ई. में तंजावुर पर कब्जा किया और उसे अपनी राजधानी बनाया।
- विजयालय ने तंजौर पर अधिकार करने के बाद **नरकेसरी** की उपाधि धारण की।
- राजराज प्रथम को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इसने तंजुवर में वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था।
- राजराज-I के पुत्र राजेन्द्र–प्रथम ने पूरे श्रीलंका को चोल साम्राज्य में मिला लिया।
- राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महीपाल को हरा दिया। उसने उत्तरी–पूर्वी पराजित राजाओं को गंगाजल से भरे कलश अपनी राजधानी **गंगैकोण्डचोलपुरम्** लाने को कहा और उसे चोलगंग नामक तालाब में एकत्रित करवाया। इस उपलक्ष्य में उसने **गंगैकोंडचोल** की उपाधि भी ग्रहण की। चोल राजवंश द्वारा सुदृढ़ स्थानीय शासन व्यवस्था लागू की गई थी।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र की लड़ाई, कितने दिन तक लड़ी गई थी ?
(A) 16 दिन (B) 18 दिन
(C) 20 दिन (D) 24 दिन

2. सतपथ ब्राह्मण और तैत्रिय ब्राह्मण........के ब्राह्मण मूलपाठ हैं–
(A) सामवेद (B) अथर्ववेद
(C) ऋग्वेद (D) यजुर्वेद

3. ऋग्वेद में निम्नलिखित में से किस देवता की सर्वाधिक महत्ता का वर्णन है?
(A) वरुण (B) इंद्र
(C) अग्नि (D) शिव

4. 'मोहनजोदड़ो' शब्द का अर्थ क्या है ?
(A) पसंदीदा शहर
(B) माउंट ऑफ़ द डेड
(C) रहने की जगह
(D) एक बाजार क्षेत्र

5. बुद्ध ने _______ में अपना पहला धर्मोपदेश देते हुए, अपने मत की आधारशिला रखी थी।
(A) झाँसी (B) बोधगया
(C) कौशाम्बी (D) सारनाथ

6. जैन धर्म में, तीन रत्न (त्रिरत्न) दिए जाते हैं और उन्हें निर्वाण का मार्ग कहा जाता है। वे क्या हैं ?
(A) सही भाषण, सही ज्ञान और सही आचरण
(B) सही विश्वास, सही ज्ञान और सही व्यवहार
(C) सही विश्वास, सही पथ और सही आचरण
(D) सही विश्वास, सही ज्ञान और सही आचरण

7. 'महाजनी प्रथा' का सर्वप्रथम उल्लेख निम्नलिखित में से किस प्राचीन ग्रंथ में हुआ है?
(A) शतपथ ब्राह्मण (B) उपनिषद्
(C) रामायण (D) महाभारत

8. किस शासक ने भारत में तुगलक वंश की नींव रखी थी ?
(A) फ़िरोज़ शाह तुगलक
(B) ग्यासउद्दीन तुगलक
(C) अलाउद्दीन सिकन्दर शाह
(D) मुहम्मद बिन तुगलक

9. राजा बिंबिसार के दरबार में उस प्रसिद्ध चिकित्सक का क्या नाम है जो भगवान बुद्ध के निजी चिकित्सक थे ?
(A) अजातशत्रु (B) सारिपुत्त
(C) जीवक (D) राहुला

10. मौर्य अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से .... पर निर्भर थी।
(A) कृषि अर्थव्यवस्था
(B) व्यापार आधारित अर्थव्यवस्था
(C) उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था
(D) युद्ध आधारित अर्थव्यवस्था

11. दिल्ली में अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल की अवधि क्या थी ?
(A) 1296–1316 (B) 1286–1316
(C) 1303–1334 (D) 1410–1437

12. निम्न में से कौन-से वंश ने भारत के दक्षिणी भाग पर शासन नहीं किया है ?
(A) चेर (B) पांड्या
(C) राजपूत (D) चोल

13. कन्नौज से पूर्व हर्षवर्धन कहाँ का शासक था?
(A) कौशाम्बी (B) कुशीनगर
(C) श्रावस्ती (D) थानेश्वर

14. सिंचाई के लिए सोलह मील लम्बी 'चोल झील' का निर्माण इनमें से किस चोल शासक ने करवाया था?
(A) अधिराज (B) राजेन्द्र प्रथम
(C) राजराज प्रथम (D) इनमें से कोई नही

15. प्राचीनतम वेद कौन–सा है?
(A) ऋग्वेद (B) अथर्ववेद
(C) यजुर्वेद (D) सामवेद

16. बौद्धों के लिए उत्तर प्रदेश में स्थित सारनाथ क्यों महत्वपूर्ण है ?
(A) भगवान बुद्ध ने सारनाथ में ज्ञान प्राप्त किया था
(B) भगवान बुद्ध का जन्म सारनाथ में हुआ था
(C) भगवान बुद्ध का सारनाथ में महापरिनिर्वाण (देहांत) हुआ था
(D) ज्ञान प्राप्त करने के बाद, भगवान बुद्ध ने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था

17. हड़प्पाकाल को इनमें से कौन–सा नगर तीन भागों में विभाजित था ?
(A) लोथल (B) मोहन जोदड़ो
(C) कालीबंगा (D) धौलावीरा

उत्तरमाला

1. (B) **2.** (D) **3.** (B) **4.** (B) **5.** (D)
6. (D) **7.** (A) **8.** (B) **9.** (C) **10.** (A)
11. (A) **12.** (C) **13.** (D) **14.** (B) **15.** (A)
16. (D) **17.** (D)

अध्याय
1

भाषा एवं व्याकरण

संज्ञा का अर्थ

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है—'सम् + ज्ञा' अर्थात् सम्यक् ज्ञान कराने वाला। संज्ञा का पर्याय है—नाम। अतः किसी भी व्यक्ति, वस्तु, गुण, भाव, स्थिति के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा की परिभाषा

किसी भी व्यक्ति, वस्तु, गुण, भाव, स्थिति का परिचय कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं, जैसे—

व्यक्ति—राम, सीता, हरि, पुरुष, स्त्री, तोता, बतख, अध्यापक आदि।

वस्तु—कलम, मेज, कुर्सी, पैन, किताब, पंखा आदि।

स्थान—आगरा, दिल्ली, नगर, गाँव, द्वीप, जापान आदि।

भाव—खटास, मिठास, बुढ़ापा, सुख, दुःख, लम्बाई, सर्दी आदि।

संज्ञा के भेद

संज्ञा को पाँच भागों में वर्गीकृत किया गया है—

संज्ञा
↓

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	समुदाय/ समूहवाचक संज्ञा	द्रव्यवाचक संज्ञा

उपरोक्त वर्गीकृत संज्ञा के भेदों को निम्नांकित परिभाषित किया गया है—

I. व्यक्तिवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों द्वारा किसी एक व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे—ताजमहल, राम, काशी, रामायण आदि।

व्यक्तिवाचक संज्ञा निम्नलिखित रूपों में परिलक्षित होती है—

- **व्यक्तियों के नाम**—राम, रोहन, निशा, रवि, मंजू आदि।
- **नदियों के नाम**—गंगा, यमुना, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र आदि।
- **दिनों के नाम**—रविवार, सोमवार, मंगलवार आदि।
- **दिशाओं के नाम**—पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।
- **महीनों के नाम**—सावन, भादों, जनवरी, फरवरी आदि।
- **देशों के नाम**—रूस, चीन, अमेरिका, भारत आदि।
- **समुद्रों के नाम**—हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर, काला सागर आदि।
- **पर्वतों के नाम**—हिमालय, अरावली, कंचनजंगा आदि।
- **ऐतिहासिक युद्ध व घटनाओं के नाम**—प्लासी का युद्ध, हल्दी घाटी का युद्ध, 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम आदि।
- **प्रमुख नगरों व सड़कों के नाम**—लखनऊ, इलाहाबाद (प्रयागराज), न्यू राजामंडी रोड, दयालबाग रोड आदि।
- **पुस्तकों एवं समाचार पत्रों के नाम**—रामचरितमानस, गीता, अमर उजाला आदि।
- **त्योहारों एवं उत्सवों के नाम**—होली, दीवाली, ईद, स्वतन्त्रता दिवस आदि।

> **विशेष—**
> व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग एकवचन के रूप में ही किया जाता है।

II. जातिवाचक संज्ञा—जिस शब्द से एक ही जाति के समस्त पदार्थों अथवा प्राणियों का बोध हो, वह जातिवाचक संज्ञा के अन्तर्गत आता है।

जैसे—मनुष्य, डॉक्टर, गाँव, लड़का, अध्यापक आदि।

III. भाववाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा गुण, दशा, व्यापार या भाव का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण चार प्रकार के शब्दों से किया जा सकता है—

(i) जातिवाचक से निर्मित भाववाचक संज्ञा—उपरोक्त क्रम में जाति-वाचक संज्ञा का भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित रूप के उदाहरण निम्नांकित हैं—

जातिवाचक	भाववाचक संज्ञा
पशु	पशुता
प्रभु	प्रभुता
लड़का	लड़कपन
बालक	बालकपन
मित्र	मित्रता
दुश्मन	दुश्मनी

(ii) सर्वनाम से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ—सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा के परिवर्तन के निम्नांकित उदाहरण हैं—

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
पराया	परायापन
सर्व	सर्वस्व
अहं	अहंकार
मम	ममत्व

(iii) विशेषण से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ—विशेषण के भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित स्वरूप के उदाहरण निम्नांकित हैं—

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
मधुर	मधुरता
ऊँचा	ऊँचाई
सफल	सफलता
चतुर	चतुराई

(iv) क्रिया से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ—उदाहरण निम्नांकित हैं—

क्रिया	**भाववाचक संज्ञा**
खेलना	खेल
सुनना	सुनाई
बुनना	बुनाई
चमकना	चमका
कमाना	कमाई
मिलना	मिलावट

(v) अव्यय से निर्मित भाववाचक संज्ञाएँ—उदाहरण निम्नांकित हैं—

अव्यय	**भाववाचक संज्ञा**
दूर	दूरी
ऊपर	ऊपरी
धिक्	धिक्कार
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही
निकट	निकटता
नीचे	निचाई
समीप	सामीप्य

IV. समुदायवाचक/समूहवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा अनेक प्राणियों, पदार्थों आदि के समूह का बोध हो, उन्हें समूहवाचक अथवा समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे—सेना, कक्षा, भीड़, मेला, पुस्तकालय आदि।

विशेष—
यद्यपि समूहवाचक संज्ञा में अनेक प्राणियों या पदार्थों के समूह की कल्पना की जाती है, लेकिन इनका उच्चारण एक ही शब्द में किया जाता है।

V. द्रव्यवाचक संज्ञा—जिन संज्ञा शब्दों से किसी धातु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा के अन्दर रखा जाता है।

विशेष—
कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं तो उनकी संज्ञा जातिवाचक हो जाती है।
वह लुकमान था। अर्थात् अपने समय का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति।

सर्वनाम

परिभाषा—भाषा में सुन्दरता, संक्षिप्तता एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह 'सर्वनाम' होता है। सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है 'सब का नाम'। अर्थात् सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। इससे वाक्य सहज एवं सरल हो जाता है; जैसे—सीता आज शाला नहीं आई क्योंकि सीता बीमार है। इसके स्थान पर यदि यह कहा जाए 'सीता आज शाला नहीं आई क्योंकि 'वह' बीमार है तो सर्वनाम के प्रयोग से यह वाक्य अधिक सरल एवं सुन्दर बन जाएगा।'

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम को छः भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो निम्नांकित सारणी में द्रष्टव्य हैं—

सर्वनाम
- पुरुषवाचक सर्वनाम
  - उत्तम ↓ (मैं, हम)
  - मध्यम ↓ (तू, तुम)
  - अन्य ↓ (आप, वह, वे)
- निश्चयवाचक सर्वनाम ↓ (यह, वह)
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम ↓ (कोई, कुछ)
- प्रश्नवाचक सर्वनाम ↓ (कौन, क्या)
- सम्बन्धवाचक सर्वनाम ↓ (जो, सो)
- निजवाचक सर्वनाम ↓ (आप, स्वयं, खुद)

सर्वनाम : विविध रूप

सर्वनाम	कर्ता कारक	कर्म कारक	करण कारक	सम्प्रदान कारक	अपादान कारक	सम्बन्ध कारक	अधिकरण कारक	वचन
मैं	मैं, मैंने	मुझको, मुझे	मुझसे	मुझको, मुझे, मेरे लिए	मुझसे	मेरा, मेरी, मेरे	मुझमें, मुझ पर	एकवचन
हम	हम, हमने	हमको, हमें	हमसे	हमको, हमें हमारे लिए	हमसे	हमारा, हमारी, हमारे	हममें, हम पर	बहुवचन
तुम	तुम, तुमने	तुमको	तुमसे	तुमको, तुम्हें	तुमसे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे	तुमसे, तुम पर	एकवचन
वह	वह, उसने	उसको, उसे	उससे	उसको, उसे, उसके लिए	उससे	उसका, उसकी, उसके	उसमें, उस पर	एकवचन
वे	वे, उन्होंने	उनको, उन्हें	उनसे	उनको, उन्हें, उनके लिए	उनसे	उनका, उनकी, उनके	उनमें, उन पर	बहुवचन
आप (निजवाचक)	आप	अपने को	अपने से	अपने लिए	अपने से	अपना, अपनी, अपने	अपने में, अपने पर	एकवचन

उपरोक्त सारणी के द्वारा सर्वनाम के प्रयोग को भली-भाँति समझा जा सकता है। सर्वनाम के उपरोक्त भेदों का विवरण निम्न प्रकार दिया गया है—

I. पुरुषवाचक सर्वनाम—जो सर्वनाम बोलने वाले, सुनने वाले अथवा जिसके विषय में कुछ कहा जाये अर्थात् जिनका प्रयोग लेखक, वक्ता, श्रोता या

स्वयं के लिए करता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम होते हैं। इसके तीन भेद होते हैं—

(i) उत्तम पुरुष—मैं, हम।

(ii) मध्यम पुरुष—तू, तुम।

(iii) अन्य पुरुष—वह, वे।

II. निश्चयवाचक सर्वनाम—जिन सर्वनाम शब्दों के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु आदि की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करे, वह निश्चयवाचक सर्वनाम के अन्तर्गत आते हैं। निश्चयवाचक सर्वनाम के दो भेद होते हैं—

(i) निकटवर्ती निश्चयवाचक—जिनके द्वारा समीप की वस्तुओं का बोध होता है।

जैसे— यह बात सत्य है।

(ii) दूरवर्ती निश्चयवाचक—जिनके द्वारा दूर की वस्तुओं का बोध कराया जाये।

जैसे— वे लड़कियाँ खेल रही हैं।

III. अनिश्चयवाचक सर्वनाम—जिन सर्वनाम शब्दों के द्वारा किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का उचित बोध न हो, वह अनिश्चयवाचक सर्वनाम की श्रेणी में आते हैं।

जैसे— कुछ प्रश्न बहुत कठिन हैं।
कोई आया है।

IV. प्रश्नवाचक सर्वनाम—जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर तो आते हैं, लेकिन वाक्य को प्रश्न (?) में परिवर्तित कर देते हैं।

जैसे— वे क्या कर रहे हैं ?
कौन आ रहा है ?

V. सम्बन्धवाचक सर्वनाम—जो सर्वनाम अन्य सर्वनामों से सम्बन्ध सूचित करते हैं अर्थात् जिनका प्रयोग परस्पर एक-दूसरे की बात का सम्बन्ध बताने के लिए किया जाता है, सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे— जैसी करनी वैसी भरनी।
मैं जिस स्कूल में पढ़ता हूँ वह दिल्ली में है।

VI. निजवाचक सर्वनाम—जो सर्वनाम शब्द अपने विषय में बतायें अर्थात् जहाँ अपने लिए आप शब्द 'अपना' अथवा अपने आप का प्रयोग हो, वे निजवाचक सर्वनाम की श्रेणी में आते हैं।

जैसे— अपना कार्य अपने आप करो।
तुम अपनी किताब पढ़ो।

विशेषण और विशेष्य

परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषताओं का वर्णन करने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

विशेष

यह विशेषता संज्ञा के आकार, अवस्था, रूप, गुण, स्वभाव, स्थिति आदि से सम्बन्धित हो सकती है।

उदाहरण— **संज्ञा से सम्बन्धित**—मोटा, बुद्धिमान, काला, गोरा, मूर्ख आदि।

सर्वनाम से सम्बन्धित—इतना, वह, यह, मेरा, तुम्हारा।

क्रिया से सम्बन्धित—गाना गाती हुई, लड़ाई लड़ता हुआ सैनिक, भागती हुई गाड़ी।

अव्यय से सम्बन्धित—वह सारी स्थितियाँ जो किसी भी वस्तु विशेष के अन्तः और बाह्य अस्तित्व से सम्बन्ध रखती हैं।

जैसे—मनुष्य को झूठ नहीं बोलना चाहिए।

'विशेष्य' की परिभाषा

विशेषण जिस शब्द की विशेषता बतलाता है, उसे विशेष्य कहते हैं।
जैसे—राम बुद्धिमान है।
इसमें बुद्धिमान विशेषण है तथा राम विशेष्य है।

विशेष

विशेष्य शब्द का प्रयोग विशेषण से पूर्व भी हो सकता है और बाद में भी।

जैसे—**पूर्व में**—थोड़ा-सा जल लाओ।, सुन्दर फल है।

बाद में—यह रास्ता लम्बा है।, रास्ता लम्बा है।

विशेषण के प्रकार

विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते हैं जिन्हें गुण, संख्या और परिमाण के आधार पर विशेषण के भेदों को निम्नांकित प्रकार से वर्गीकृत किया गया है—

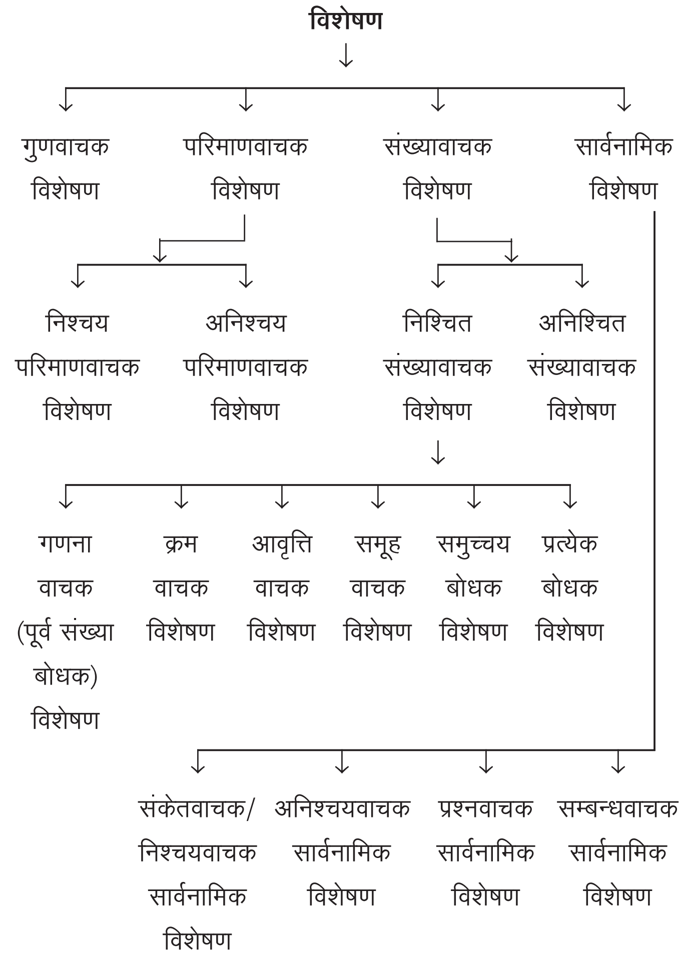

पिछले पृष्ठ पर दी गई सारणी का विस्तृत विवरण (विशेषताएँ, उदाहरण) निम्नांकित है—

क्र. सं.	विशेषण के प्रकार	विशेषताएँ	उदाहरण
I.	गुणवाचक विशेषण	जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, रूप, रंग आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। **विशेष**—गुण का अर्थ केवल अच्छाई ही नहीं, अपितु कोई भी विशेषता हो।	जैसे—बगीचे में सुन्दर फूल हैं, आगरा स्वच्छ नगर है, नीलम बुद्धिमान है, गली गंदी है। उपर्युक्त वाक्यों में सुन्दर, स्वच्छ, बुद्धिमान, गंदी शब्द गुणवाचक विशेषण हैं।
II.	संख्यावाचक विशेषण	जो शब्द संज्ञा, सर्वनाम शब्द संख्या का बोध करायें उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।	जैसे—दोनों भाई लड़ रहे हैं, देश का हरेक बालक वीर, आज कक्षा में तीन विद्यार्थी अनुपस्थित हैं।
	(i) निशिचित संख्यावाचक विशेषण	जो एक निश्चित नम्बर को बताये, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।	जैसे—एक, दो, सात आदि।
	निश्चित संख्यावाचक विशेषण के भेद		
	• पूर्णांकबोधक विशेषण	जो संज्ञा या सर्वनाम शब्द एक पूर्ण संख्या की तरफ संकेत करे, उसे पूर्णांकबोधक विशेषण कहते हैं।	जैसे—एक लड़का स्कूल जाता है, चार आम ले आओ।
	• अपूर्णांकबोधक विशेषण	जो संज्ञा या सर्वनाम शब्द एक संख्या को न बताते हुए संख्या के संकेतक बताये उसे अपूर्णबोधक विशेषण कहते हैं।	जैसे—पौन, सवा, डेढ़, ढाई, मेरे पास सवा सौ रुपये हैं, अभी पौने चार बजे हैं आदि।
	• क्रमचाचक विशेषण	जिसमें संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के द्वारा क्रमबद्धता को दर्शाया जाये उसे क्रमवाचक विशेषण कहते हैं।	जैसे—पहला लड़का यहाँ आया, नीता कक्षा में प्रथम आयी आदि।
	• आवृत्तिवाचक विशेषण	जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के द्वारा निर्धारित आवृत्ति को बताया जाये।	जैसे—मोहन तुमसे दुगुना कमाता है, राम श्याम से दस गुना गोरा है।
	• समूहवाचक विशेषण	जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु को समूह में होने का बोध हो, उसे समूह-वाचक विशेषण कहते हैं।	जैसे—मेरे तीनों भाई आज आयेंगे। तुम चारों विद्यालय जाओ।
	• प्रत्येकबोधक विशेषण	जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द में हर एक का बोध कराया जाये वहाँ प्रत्येकबोधक विशेषण होता है।	जैसे—राम मेरे प्रति बहुत दयालु है। एक-एक व्यक्ति ने पानी पिया।
	(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण	इन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से बहुत्व का बोध होता है, उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। **विशेष**—कभी-कभी दो पूर्णांकबोधक साथ में आकर अनिश्चयवाचक बन जाते हैं।	जैसे—पुस्तकालय में असंख्य वस्तुएँ हैं। युद्ध में बहुत सारे सैनिक मारे गये। जैसे—दो-चार दिन लगेंगे, चालीस-पचास रुपये दे दो।
III.	परिमाणवाचक विशेषण	जिस विशेषण से किसी नाप-तौल का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।	जैसे—वह दो लीटर तेल लाया। बीमार को थोड़ा पानी देना चाहिए। उपर्युक्त वाक्यों में दो लीटर, थोड़ा पानी परिमाणवाचक है।
	परिमाणवाचक विशेषण के प्रकार		
	• निश्चित परिमाणवाचक विशेषण	जिसमें एक निश्चित संख्या या नाप को विशेषण के रूप में प्रयोग किया जाये।	जैसे—दो किलो बेसन, एक लीटर तेल आदि।
	• अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण	जहाँ विशेषण में शब्दों का प्रयोग अनिश्चितता के आधार पर किया जाये। **विशेष**—परिमाणबोधक विशेषण अधिकांशतः भाव वाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक संज्ञा के साथ प्रयोग किये जाते हैं।	जैसे—थोड़ा पानी दो, कम खाना खाना चाहिए, अधिक परिश्रम करना चाहिए।

क्र. सं.	विशेषण के प्रकार	विशेषताएँ	उदाहरण
IV.	सार्वनामिक विशेषण	जब कोई सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्द से पहले आये तथा विशेषण शब्द की तरह संज्ञा की विशेषता बताये, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।	जैसे—वह आदमी क्रोधी प्रवृत्ति का है। किस छात्र ने गृह कार्य नहीं किया। उपर्युक्त वाक्यों में 'वह' और 'किस' शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं।
	सार्वनामिक विशेषण के प्रकार		
	• निश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण	जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों में निश्चय की स्थिति हो, उसे निश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।	जैसे—ये पुस्तक, वह पुस्तकें आदि।
	• अनिश्चियवाचक सार्वनामिक विशेषण	जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों में प्रयुक्त विशेषण में अनिश्चय की स्थिति हो, उसे अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है।	जैसे—कोई लड़का, कौन-सा कार्य, कोई व्यक्ति आदि।
	• प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण	जहाँ संज्ञा एवं सर्वनाम शब्द में विशेषण शब्द के रूप में प्रश्न पूछा जाये वहाँ प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है।	जैसे—कौन आदमी, कितने रुपये, क्या काम आदि।
	• सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण	जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों में विशेषण के रूप में सम्बन्धों को व्यक्त किया जाये, वहाँ सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण होता है।	जैसे—जो पुस्तक, वह कलम आदि।

प्रविशेषण—ऐसे शब्द जो विशेषण की विशेषता बतलाते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे—वह बहुत परिश्रमी है। शीला अति विनम्र लड़की है। इन दोनों वाक्यों में परिश्रमी व विनम्र विशेषण हैं तथा 'बहुत' व 'अति' प्रविशेषण हैं।

क्रिया

परिभाषा—जिन शब्दों से किसी कार्य के होने, करने अथवा किसी स्थिति का बोध हो, क्रिया कहते हैं। जैसे—सोना, खाना, पढ़ना आदि।

क्रिया के भेद

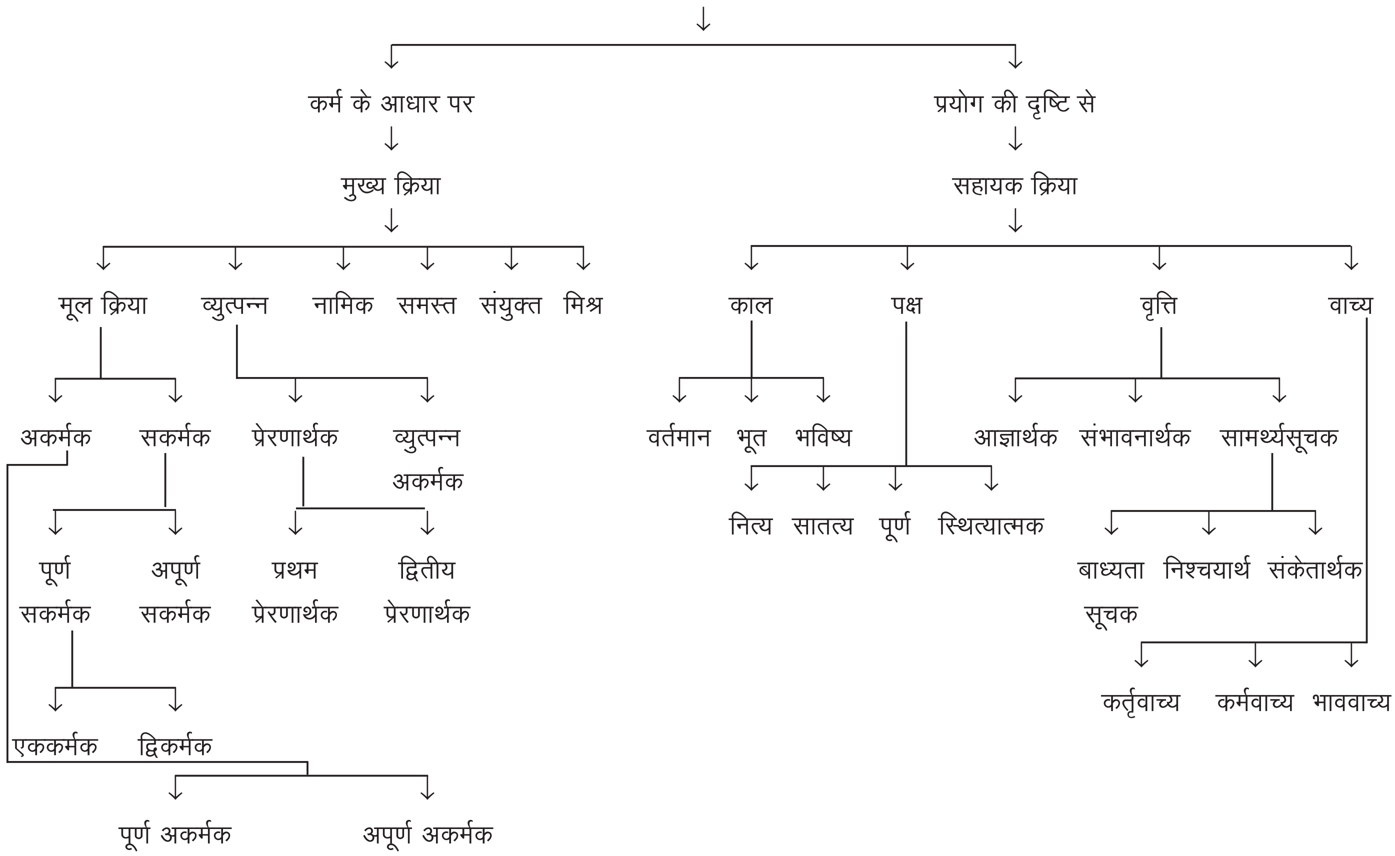

संक्षेप में उपरोक्त क्रियाओं को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है—

कर्म के आधार पर

I. सकर्मक क्रिया—जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे— बच्चा चित्र बना रहा है या गीता सितार बजा रही है।

अब यदि प्रश्न किया जाए कि बच्चा क्या बना रहा है तो उत्तर होगा–'चित्र' (कर्म) तथा गीता क्या बजा रही है तो उत्तर होगा–'सितार' (कर्म)।

(i) पूर्ण सकर्मक क्रिया—जिस क्रिया के द्वारा पूर्ण अर्थ का बोध कराया जाता है।

जैसे—गीता गाना गाती है।

पूर्ण सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं—

(A) एककर्मक क्रिया—जिन वाक्यों में एक ही कर्म प्रयुक्त होता है।

जैसे— ''रोहित गाना गाता है।''

(B) द्विकर्मक क्रिया—जिन वाक्यों में एक ही समय में दो कर्म होते हैं।

जैसे— ''श्याम ने राम को पुस्तक पढ़ाई।''
मैं लड़के को तमाशा दिखाता हूँ।

(ii) अपूर्ण सकर्मक क्रिया—जिस क्रिया के पूर्ण अर्थ का बोध कराने के लिए कर्ता के अतिरिक्त अन्य संज्ञा या विशेषण की आवश्यकता हो।

जैसे— ''आपने उसे महान बनाया।''

II. अकर्मक क्रिया—जिन क्रियाओं का असर कर्ता पर ही पड़ता है, वे अकर्मक क्रिया कहलाती है। इनको कर्म की आवश्यकता नहीं होती।

जैसे— ''राकेश रोता है।''
''बस चलती है।''

अकर्मक क्रिया के दो भेद हैं—

(i) पूर्ण अकर्मक क्रिया—जिस पूर्ण अकर्मक क्रिया का पूरा आशय स्पष्ट करने के लिए संज्ञा या विशेषण का पूर्ति के रूप में प्रयोग नहीं होता।

जैसे— ''गंगाधर को मंत्री बनाया।''

(ii) अपूर्ण अकर्मक क्रिया—जिस अकर्मक क्रिया का पूर्ण आशय स्पष्ट करने के लिए संज्ञा या विशेषण का पूर्ति के रूप में प्रयोग होता है।

जैसे— ''राजा ने गंगाधर को मंत्री बनाया।''

प्रयोग की दृष्टि से—प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के निम्नलिखित भेद हैं—

I. पूर्वकालिक क्रिया—ये क्रियायें पूर्व काल में सम्पन्न हो चुकी हैं।

जैसे— ''वह खाना खाकर बाजार गया।''
''हम खेलकूद कर घर गये।''

II. सामान्य क्रिया—यहाँ क्रिया का साधारण प्रयोग होता है।

जैसे— ''मैं आया।''
''वह गया।''

III. संयुक्त क्रिया—दो या दो से अधिक क्रियाओं के योग से जो पूर्ण क्रिया बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

जैसे–''राम खाना खा चुका।''

इस वाक्य में 'खाना' और 'चुकना' दो क्रियाओं के योग से पूर्ण क्रिया बनी है। अतः यह संयुक्त क्रिया है।

IV. प्रेरणार्थक क्रिया—इस प्रकार के वाक्यों में कर्ता अपना कार्य स्वयं न करके दूसरों को करने की प्रेरणा देता है।

जैसे— ''सीता रसोइये से खाना बनवाती है।''

विशेष—इसके अन्तर्गत दो तरह के प्रेरक होते हैं। प्रथम प्रेरक एवं द्वितीय प्रेरक।

जैसे—	**धातु**	**प्रथम प्रेरक**	**द्वितीय प्रेरक**
	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना

V. नामधातु क्रिया अथवा नामित क्रिया—जो क्रियाएँ संज्ञा या विशेषण से बनती हैं उन्हें 'नाम धातु क्रिया' कहते हैं।

संज्ञा से–हाथ से हथियाना, दुःख से दुखाना

विशेषण से–गरम से गरमाना, चिकना से चिकनाना।

VI. अपूर्ण क्रिया—ऐसी क्रियायें जो अपने आप में अपूर्ण होती हैं।

जैसे— ''मदन मोहन मालवीय थे।''

इस वाक्य में क्रिया अपूर्ण है। अभीष्ट अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पा रही है। यह अपूर्ण क्रिया है।

क्रिया-विशेषण

परिभाषा—जिन शब्दों से क्रिया, विशेषण या अन्य क्रिया विशेषण की विशेषता प्रकट करते हो, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

क्रिया-विशेषण के भाग

अर्थ के और परिभाषा के आधार पर इन्हें चार भागों में बाँटा गया है—

I. कालवाचक क्रिया-विशेषण—

परिभाषा—जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया में लगने वाले समय या काल का पता लगता हो, कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे— तुम कल जाओगे।
मैं फिर आऊँगा।
वह अभी आएगी।

उपरोक्त वाक्यों में 'कल', 'फिर', 'अभी' शब्द काल को इंगित कर रहे हैं। अतः कालवाचक क्रिया-विशेषण में जब, तब, हमेशा, कभी, अभी, बाद, पहले, कई बार, फिर कभी, बहुधा, निरन्तर आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

II. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण—

परिभाषा—जिन क्रिया विशेषण शब्दों के द्वारा क्रिया के होने का स्थान ज्ञात हो, वह स्थानवाचक क्रिया-विशेषण के अन्तर्गत आते हैं।

जैसे— तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए।
कनिका यहाँ चल रही है।
अन्दर जाकर बैठ जाओ।
कल कहाँ जाओगे ?

उपर्युक्त वाक्यों में 'यहाँ', 'अन्दर', 'कहाँ' आदि शब्द समय को बता रहे हैं। अतः स्थानवाचक क्रिया-विशेषण है। इनमें अधिकतर यहाँ, वहाँ, जहाँ,

कहाँ, इधर, उधर, ऊपर, नीचे आदि स्थान संकेतक शब्दों का प्रयोग होता है।

III. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण—

परिभाषा—क्रिया के परिमाण का ज्ञान कराने वाले शब्द परिमाणवाचक क्रिया विशेषण की श्रेणी में आते हैं।

जैसे— आपने कुछ खा लिया।

थोड़ा पानी दे दो।

शिखा ज्यादा बोलती है।

धीरे-धीरे चलो।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त शब्द (कुछ, थोड़ा, ज्यादा, धीरे) आदि शब्द क्रिया के परिमाण को स्पष्ट कर रहे हैं। इनमें अधिकांशतः प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं—थोड़ा, ज्यादा, कम, धीरे, कुछ, न्यून, केवल, प्रायः आदि। जो क्रिया विशेषण को परिमाणवाचक क्रिया विशेषण बनाते हैं।

IV. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण—

परिभाषा—क्रिया के जिन शब्दों के द्वारा क्रिया के होने या करने का तरीका (ढंग) पता चले, वे रीतिवाचक क्रिया विशेषण की श्रेणी में आते हैं।

जैसे— घोड़ा तेज दौड़ता है।

तुम कल तक अवश्य आ जाओगे।

हाथी जोर से चिंघाड़ता है।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त शब्द (तेज, अवश्य, जोर) क्रिया के सम्पन्न करने के तरीके को बता रहे हैं। रीतिवाचक क्रिया विशेषण में ठीक, सच, जरूर, अतएव, धीरे, जोर से, बेशक, शायद, वास्तव, कदाचित्, सम्भव आदि शब्दों का प्रयोग अधिकांशतः क्रिया करने के तरीके को बताते हैं।

अव्यय

अर्थ—अव्यय शब्द अ + व्यय से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—न खर्च होना अर्थात् अव्यय वे शब्द हैं, जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, वे ज्यों के त्यों रहते हैं।

अव्यय के भेद

अव्यय के भेद निम्न प्रकार हैं—

I. सम्बन्धबोधक अव्यय—

परिभाषा—जिन संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता हैं अर्थात् ये संज्ञा और सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध बताते हैं, उन्हें सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं। अर्थ के अनुसार इनके निम्नांकित भेद हैं—

सम्बन्धबोधक अव्यय के भेद—

(i) कालवाचक—के आगे, के पीछे, के पश्चात्, के पूर्व, लगभग आदि।

(ii) स्थानवाचक—ऊपर, नीचे, यहाँ, वहाँ, बीच, तले आदि।

(iii) कारणसूचक—के मारे, के कारण, के लिए आदि।

(iv) व्यक्तिवाचक—के बिना, के अलावा, बगैर उसके, के अतिरिक्त आदि।

(v) दिशावाचक—ऊपर की ओर, चारों ओर, तरफ, आस-पास, समीप, समाने आदि।

(vi) संग्रहवाचक—समेत, तक, पर्यन्त, भर आदि।

(vii) विषयसूचक—के विषय में, लेखे, बावत आदि।

(viii) समानतासूचक—के सदृश, के समान, के तुल्य, के भाँति आदि।

(ix) विरोधवाचक—के प्रतिकूल, के विपरीत, के उल्टा, के विरुद्ध आदि।

(x) उद्देश्यसूचक—के हेतु, के लिए, के खातिर, के निमित्त आदि।

(xi) तुलनावाचक—की अपेक्षा, के वनिस्बत, की तुलना, के आगे आदि।

(xii) विनिमयवाचक—के बदले, के जगह, के एवज आदि।

(xiii) सम्बन्धसूचक—संग, साथ, समेत, वश, अधीन आदि।

(xiv) साधनवाचक—द्वारा, सहारे, मारे, के लिए, निमित्त आदि।

II. समुच्चयबोधक अव्यय—

परिभाषा—जिन शब्दों का प्रयोग वाक्यों को जोड़ने के लिए किया जाये, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय की श्रेणी में रखा जाता है। इसके तीन भेद हैं—

(i) संयोजक—

परिभाषा—जो अव्यय शब्द दो या दो से अधिक शब्दों या वाक्यों को और, तथा, एवं, व आदि शब्दों के द्वारा जोड़ते हैं, वे संयोजक के अन्तर्गत आते हैं।

जैसे— मैं और मेरा मित्र कल आए थे।

राम एवं उसके भाई कल गये थे।

सीता तथा गीता स्कूल गयीं।

उपरोक्त वाक्यों में (और, एवं, तथा) आदि शब्दों में योजक की तरह प्रयुक्त किये गये हैं।

विशेष—

संयोजक समानता के आधार पर एक-दूसरे को जोड़ते हैं।

(ii) विभाजक—

परिभाषा—जो शब्द दो या दो से अधिक व्यक्ति, वस्तु, वाक्यों आदि में किसी एक के ग्रहण या त्याग का बोध कराते हुए दो उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें विभाजक कहा जाता है।

जैसे— या मैं घड़ी लूँगी या कम्प्यूटर।

न वह मुझसे बोली न मैं उससे।

चाहे चाकलेट ले लो चाहे आइसक्रीम।

करो या मरो।

उपरोक्त वाक्यों में प्रयुक्त (या, न, चाहे, या) शब्द भेद प्रकट करते हुए जोड़ने के अर्थ में विभाजक की तरह प्रयोग किये गये हैं।

विशेष—

किन्तु, परन्तु, अगर, मगर, क्योंकि, इसलिए आदि शब्दों का प्रयोग विभाजक की तरह किया जाता है।

(iii) विकल्पसूचक—

परिभाषा—जिन अव्यय शब्दों को विकल्प की तरह प्रयोग किया जाता है, उन्हें विकल्पसूचक अव्यय कहते हैं। या, अथवा, अन्यथा, न कि इत्यादि शब्दों का प्रयोग विकल्प की तरह किया जाता है।

जैसे— तुम जाओ या मैं जाऊँ।

आप आ रहे हो अन्यथा में आऊँगा।

उपरोक्त वाक्यों में 'या', 'अन्यथा' का प्रयोग विकल्पसूचक शब्दों की तरह किया गया है।

III. विस्मयादिबोधक अव्यय—

परिभाषा—जो अव्यय शब्द अधिकांशतः वाक्य के प्रारम्भ में आयें एवं आश्चर्य, शोक, घृणा, हर्ष आदि भावों का बोध करायें, उन्हें विस्मयादि-बोधक अव्यय कहा जाता है।

विशेष—

इन्हें द्योतक भी कहा जाता है।

जैसे— हे राम ! भयानक दुर्घटना।

वाह ! मजा आ गया।

विस्मयादिबोधक अव्यय के भेद—इनके द्वारा होने वाले भावों के आधार पर इनके निम्नलिखित भेद हैं—

(i) विस्मयादिबोधक—अरे !, वाह !, क्या !, ऐं !, ओहो !

(ii) शोकबोधक—ओह !, हाय !, हाय-हाय !, राम-राम !

(iii) भयबोधक—ओह !, बाप रे !

(iv) हर्षबोधक—धन्य !, वाह !, वाह-वाह !, शाबाश !, आहा !

(v) घृणाबोधक—थू-थू !, छिः-छिः !, रे, धिक् !

(vi) क्रोधबोधक—चल !, जा-जा !, चुप !

(vii) स्वीकृतिबोधक—हाँ, जी हाँ, अवश्य, हाँ-हाँ।

(viii) सम्बोधबोधक—ओ, हे, ए, एजी।

(ix) अभिवादनबोधक—जय राम जी, नमस्कार, प्रणाम।

(x) आशीर्वादबोधक—दीर्घायु हो, खुश रहो, जीते रहो।

क्रिया-विशेषण और सम्बन्धबोधक अव्यय में अन्तर

जब इनको क्रिया की विशेषता प्रकट करने के लिए प्रयोग किया जाता है तब ये क्रिया-विशेषण की श्रेणी में आते हैं, वहीं अन्य ओर जब ये संज्ञा या सर्वनाम के साथ आते हैं तब ये सम्बन्धबोधक अव्यय के अन्तर्गत आते हैं।

जैसे— फिर कभी (क्रिया-विशेषण)

फिर कभी घर चलेंगे। (सम्बन्धबोधक)

इस प्रकार उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि किस प्रकार क्रिया विशेषण और सम्बन्धबोधक का प्रयोग किया जाता है।

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न

1. दिए गए वाक्य में से क्रिया ज्ञात कीजिए।
अजीब उलझन को तुम सुलझाओ।
(A) अकर्मक क्रिया (B) सकर्मक क्रिया
(C) प्रेरणार्थक क्रिया (D) द्विकर्मक क्रिया

2. दिए गए वाक्य में किस प्रकार का पुरुष है, ज्ञात कीजिए।
हम तो आपके सेवक हैं, आज्ञा तो कीजिए।
(A) प्रथम (B) उत्तम
(C) अन्य (D) मध्यम

3. दिए गए वाक्य में किस प्रकार का पुरुष है ज्ञात कीजिए—
आपके आने से मुझे बहुत खुशी हुई।
(A) अन्य पुरुष (B) प्रथम पुरुष
(C) मध्यम पुरुष (D) उत्तम पुरुष

4. दिए गए वाक्य में परिमाणवाचक विशेषण ज्ञात कीजिए।
राम ने राजू से दो लीटर दूध लाने को कहा।
(A) दो लीटर (B) लाने
(C) राम (D) दूध

5. दिए गए वाक्य में से गुणवाचक विशेषण ज्ञात कीजिए—
कालीदास विद्वान व्यक्ति थे।
(A) थे (B) कालिदास
(C) व्यक्ति (D) विद्वान

6. दिए गए वाक्य की क्रिया ज्ञात कीजिए—
चुटकुला सुनकर बालक मुस्कुराया
(A) अकर्मक क्रिया (B) प्रेरणार्थक क्रिया
(C) सकर्मक क्रिया (D) संयुक्त क्रिया

7. दिए गए वाक्य में रेखांकित शब्द का पुरुष ज्ञात कीजिए।
बारिश में <u>**हमारी**</u> पुस्तकें भीग गईं।
(A) उत्तम पुरुषवाचक
(B) मध्यम पुरुषवाचक
(C) प्रथम पुरुषवाचक
(D) अन्य पुरुषवाचक

8. दिए गए वाक्य में रेखांकित शब्द की संज्ञा ज्ञात कीजिए।
ताजमहल की <u>सुन्दरता</u> का वर्णन करना बहुत ही कठिन है।
(A) द्रव्यवाचक संज्ञा (B) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(C) भाववाचक संज्ञा (D) समुदायवाचक संज्ञा

9. 'कल कोई आया था' इस वाक्य में सर्वनाम है—
(A) कल (B) कोई
(C) आया (D) था

10. उसने <u>ऊँचा</u> महल देखा।
(A) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन
(B) विशेषण, परिमाणवाचक, पुल्लिंग एकवचन
(C) विशेषण, संख्यावाचक, पुल्लिंग एकवचन
(D) विशेषण, सार्वनामिक, स्त्रीलिंग, एकवचन

11. <u>कौन</u> आया है ?
(A) सर्वनाम, प्रश्नावाचक, पुल्लिंग, एकवचन
(B) सर्वनाम, पुरुषवाचक, पुल्लिंग, एकवचन
(C) सर्वनाम, निश्चयवाचक, स्त्रीलिंग एकवचन
(D) सर्वनाम, सम्बन्धवाचक, पुल्लिंग एकवचन

12. गुलाम शब्द का भाववाचक रूप _____ है।
(A) गुलामे (B) गुलामी
(C) गुलामपन (D) गुलामिं

13. 'तिरछा' किस प्रकार का विशेषण है?
(A) सार्वनामिक (B) परिमाण बोधक
(C) गुणवाचक (D) संख्यावाचक

14. 'नया' किस प्रकार का विशेषण है?
(A) सार्वनामिक (B) संख्यावाचक
(C) गुणवाचक (D) परिमाण बोधक

15. सही शब्द से खाली जगह भरिए।
राम .... लड़का है।
(A) अच्छे (B) अच्छा
(C) अच्छी (D) अच्चा

16. इनमें से कौन–सा शब्द भाववाचक संज्ञा नहीं है ?
(A) मनाही (B) विद्वता
(C) सोना (D) खुशी

17. निम्न में प्रश्नवाचक सर्वनाम कौन–सा है ?
(A) जो (B) सो
(C) कोई (D) कौन

18. किस वाक्य में सम्बन्ध बोधक अव्यय का प्रयोग हुआ है ?
(A) ऐसा काम मत करो।
(B) मैं पीछे आया था।
(C) मैं यह काम नहीं करूँगा।
(D) मैं काम के पीछे आया था।

19. रूप के अनुसार क्रिया–विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ?
(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार

20. अर्थ के अनुसार क्रिया–विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ?
(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार

21. हिन्दी में कुल कितने सर्वनाम हैं ?
(A) 9 (B) 10
(C) 11 (D) 12

22. 'वह एक सप्ताह बाद आया' – इस वाक्य में कौन–सा शब्द क्रिया–विशेषण है ?
(A) वह (B) एक
(C) बाद (D) आया

23. 'हाय! अब मैं क्या करूँ।' – इस वाक्य में विस्मयबोधक शब्द बताइए।
(A) हाय (B) अब
(C) मैं (D) क्या

24. निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द समूह वाचक संज्ञा नहीं है ?
(A) सभा (B) कक्षा
(C) भीड़ (D) दौड़

25. 'वह आप ही चला गया।'– वाक्य में रेखांकित शब्द सर्वनाम के किस भेद का उदाहरण है।
(A) पुरुषवाचक (B) निजवाचक
(C) निश्चयवाचक (D) सम्बन्धवाचक

26. अफसोस! मैं नहीं जा सका।
रेखांकित शब्द का अव्यय का प्रकार बताइए–
(A) सम्बोधनसूचक अव्यय
(B) शोकसूचक अव्यय
(C) आश्चर्यसूचक अव्यय
(D) हर्षसूचक अव्यय

27. पशु चर रहे हैं। रेखांकित पद है :
(A) व्यक्तिवाचक संज्ञा (B) जातिवाचक संज्ञा
(C) भाववाचक संज्ञा (D) द्रव्यवाचक संज्ञा

28. अचूक विशेषण के साथ उपयुक्त संज्ञा है–
(A) चोट (B) नेत्र
(C) निशाना (D) जवाब

29. निम्न में सर्वनाम शब्द है–
(A) दान (B) भजन
(C) कुछ (D) पढ़ना

30. **वाह ! वाह !** कितना सुंदर दृश्य है। रेखांकित शब्द में कौन–सा अव्यय है ?
(A) हर्षबोधक अव्यय
(B) शोक बोधक अव्यय
(C) सम्बोधित अव्यय
(D) तिरस्कार बोधक अव्यय

31. निम्नलिखित जोड़ों में से उत्तम पुरुष वाले जोड़ों को पहचानिए।
(A) मैं–हम (B) तू–तुम
(C) वह–वे (D) इससे–इन्होंने

32. माधवी अत्यंत सुंदर गाती है। रेखांकित शब्द है–
(A) संज्ञा (B) संबंधबोधक
(C) समुच्चबोधक (D) क्रिया–विशेषण

33. 'स्वतंत्रता सबको प्यारी होती है।' वाक्य के रेखांकित शब्द का संज्ञा भेद है–
(A) जातिवाचक संज्ञा
(B) भाववाचक संज्ञा
(C) गुणवाचक संज्ञा
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

34. 'शीला अपने कपड़े स्वयं धोती है।' रेखांकित शब्द सर्वनाम शब्द का उचित भेद है–
(A) पुरुषवाचक सर्वनाम
(B) निजवाचक सर्वनाम
(C) निश्चयवाचक सर्वनाम
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

35. निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी शब्द भाववाचक संज्ञा शब्द हैं ?
(A) अमीर, गरीब, समूह, मिठास
(B) जवानी, खट्टास, पुस्तक, गंगा
(C) रसीला, कड़वाहट, बुढ़ापा, उन्नति
(D) धैर्य, चालाकी, उदासी, सूर्य

36. 'वह बहुत मधुर गाता है।' इनमें प्रविशेषण शब्द का चयन कीजिए–
(A) वह (B) बहुत
(C) मधुर (D) गाता

37. मैंने रमेश से पत्र लिखवाया। इस वाक्य में 'लिखवाया' कौन से प्रकार की क्रिया है ?
(A) अनुकरणात्मक क्रिया
(B) नग्मधातु क्रिया
(C) प्रेरणार्थक क्रिया
(D) संयुक्त क्रिया

38. निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में सभी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं ?
(A) राम, रामचरितमानस, गंगा
(B) कृष्ण, कामायनी, मिठास
(C) लखनऊ, आम, बुढ़ापा
(D) ममता, वकील, पुस्तक

39. 'मुझे' किस प्रकार का सर्वनाम है ?
(A) उत्तम पुरुष (B) मध्यम पुरुष
(C) अन्य पुरुष (D) इनमें से कोई नहीं

40. निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द जातिवाचक संज्ञा नहीं है?
(A) जवान (B) बालक
(C) सुन्दर (D) मनुष्य

41. 'उसका दिव्यांग पति चलने में असमर्थ है' में 'दिव्यांग' क्या है ?
(A) संज्ञा (B) विशेषण
(C) क्रियाविशेषण (D) सर्वनाम

42. दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द कौन-से शब्द होते हैं ?
(A) समुच्चयवाचक (B) सर्वनाम
(C) संबंध सूचक (D) इनमें से कोई नहीं

43. जिसमें किसी भी प्रकार का व्यय अर्थात् परिवर्तन या विकार न हो, वह है–
(A) सर्वनाम (B) प्रत्यय
(C) विशेषण (D) अव्यय

44. 'चालाकी' शब्द .... है।
(A) विशेषण (B) क्रिया
(C) सर्वनाम (D) संज्ञा

उत्तरमाला

1. (B)	**2.** (B)	**3.** (C)	**4.** (A)	**5.** (D)
6. (C)	**7.** (A)	**8.** (C)	**9.** (B)	**10.** (A)
11. (A)	**12.** (B)	**13.** (C)	**14.** (C)	**15.** (B)
16. (C)	**17.** (D)	**18.** (D)	**19.** (C)	**20.** (D)
21. (C)	**22.** (C)	**23.** (A)	**24.** (D)	**25.** (B)
26. (B)	**27.** (B)	**28.** (C)	**29.** (C)	**30.** (A)
31. (A)	**32.** (D)	**33.** (B)	**34.** (B)	**35.** (C)
36. (B)	**37.** (C)	**38.** (A)	**39.** (A)	**40.** (C)
41. (B)	**42.** (A)	**43.** (D)	**44.** (D)	

❑❑

अध्याय
1

सादृश्यता परीक्षण

सादृश्यता परीक्षण का अभिप्राय 'एक समान गुण' या 'समानता' रखने से है। अतः इस अध्याय के अन्तर्गत एक–दूसरे के मध्य सम्बन्धों को दर्शाना होता है। ऐसे प्रश्नों का समावेश परीक्षाओं में परीक्षार्थी के ज्ञान व उसके तर्क एवं चिन्तन की सामर्थ्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है।

किसी तत्व के किसी अन्य तत्व के गुण, रूप, आकार, प्रकार, लक्षण आदि में निहित किसी भी प्रकार की समानता को सादृश्यता कहते हैं।

सादृश्यता के प्रश्न एक निश्चित सम्बन्ध पर आधारित होते हैं, परीक्षार्थी को ऐसे प्रश्नों को आसानी से हल करने के लिए निम्न दो चरणों का अनुसरण करना चाहिए।

चरण–1 : प्रश्न में दिये गए प्रथम दो पदों के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करें।

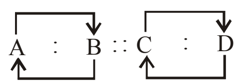

A : B : : C : D में, A से B या B से A में जिस प्रकार का सम्बन्ध होगा, उसी प्रकार का सम्बन्ध C से D या D से C में होगा।

चरण–2 : ज्ञात सम्बन्ध के आधार पर अन्य पदों में सम्बन्ध लागू कर सही उत्तर का चयन करें।

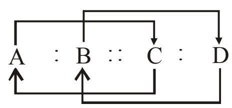

A : B : : C : D में, A से C या C से A में जिस प्रकार का सम्बन्ध होगा, उसी प्रकार का सम्बन्ध B से D या D से B में होगा।

1. शब्द सादृश्यता

शब्द सादृश्यता के अन्तर्गत पूछे जाने वाले प्रश्न मुख्यतः सामान्य जानकारी पर आधारित होते हैं, अतः इस प्रकार के प्रश्नों के लिए शब्दकोश व सामान्य ज्ञान का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

I. समानार्थी सम्बन्ध

उदा. जिस प्रकार 'आनंद' का सम्बन्ध 'खुशी' से है, उसी प्रकार 'असुर' का सम्बन्ध किससे होगा ?

(A) देव (B) गगन
(C) दैत्य (D) पंचशर

हल (C): जिस प्रकार 'आनंद' व 'खुशी' समानार्थक शब्द हैं, उसी प्रकार 'असुर' व 'दैत्य' भी समानार्थक शब्द हैं।

II. विपरीतार्थक सम्बन्ध

उदा. जिस प्रकार 'मृत्यु' का सम्बन्ध 'जीवन' से है, उसी प्रकार 'आजादी' का सम्बन्ध किससे होगा ?

(A) स्वतन्त्रता (B) गुलामी
(C) सरल (D) विरल

हल (B) : जिस प्रकार 'मृत्यु' का विपरीत शब्द 'जीवन' है, उसी प्रकार 'आजादी' का विपरीत शब्द 'गुलामी' है।

III. कामगार तथा औजार

उदा. जिस प्रकार 'डॉक्टर', 'स्टेथोस्कोप' से संबंधित है, उसी प्रकार 'कलम' किससे सम्बन्धित है ?

(A) किताब (B) लेखक
(C) कवि (D) डॉक्टर

हल (B) : जिस प्रकार डॉक्टर किसी बीमार व्यक्ति को देखने के लिए स्टेथोस्कोप का उपयोग करता है। उसी प्रकार 'लेखक' लिखने के लिए 'कलम' का उपयोग करता है।

IV. देश तथा मुद्राएँ

उदा. जिस प्रकार 'रूस', 'रूबल' से संबंधित है, उसी प्रकार 'नेपाल' किससे सम्बन्धित है ?

(A) टका (B) यूआन
(C) रुपया (D) दीनार

हल (C) : जिस प्रकार 'रूस' की मुद्रा 'रूबल' है, उसी प्रकार 'नेपाल' की मुद्रा 'रुपया' है।

V. भारत के राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश तथा उनकी राजधानियाँ

उदा. जिस प्रकार 'महाराष्ट्र', 'मुम्बई' से संबंधित है, उसी प्रकार 'चण्डीगढ़' किससे सम्बन्धित है ?

(A) हरियाणा (B) दिल्ली
(C) अम्बाला (D) हिमाचल प्रदेश

हल (A) : महाराष्ट्र' की राजधानी 'मुम्बई' तथा 'हरियाणा' की राजधानी 'चण्डीगढ़' है।

VI. व्यक्तिगत और समूह संबंध

उदा. जिस प्रकार 'झुण्ड' 'मवेशी', से संबंधित है, उसी प्रकार 'दल' किससे संबंधित है ?

(A) भेड़ (B) मछली
(C) मैदान (D) घास

हल (A) : जिस प्रकार 'मवेशियों' के समूह को 'झुण्ड' कहा जाता है, उसी प्रकार भेड़ के समूह को 'दल' कहा जाता है।

VII. उपकरण तथा उनके उपयोग

उदा. जिस प्रकार 'सुई' का सम्बन्ध 'सिलाई' से है उसी प्रकार 'पेन' का सम्बन्ध किससे होगा ?

(A) कढ़ाई (B) काटना
(C) लिखना (D) देखना

हल (C) : जिस प्रकार 'सिलाई' के लिए 'सुई' की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार 'लिखने' के लिए 'पेन' की आवश्यकता होती है।

VIII. उपकरण तथा माप

उदा. जिस प्रकार 'घड़ी' का सम्बन्ध 'समय' से है, उसी प्रकार 'मीटर' का सम्बन्ध किससे है ?

(A) रफ्तार (B) दूरी

(C) कलाई (D) रेत

हल (B) : जिस प्रकार 'घड़ी' से 'समय' की माप की जाती है, उसी प्रकार 'मीटर' से 'दूरी' की 'माप' की जाती है।

IX. जानवर तथा उनकी आवाज

उदा. जिस प्रकार 'कुत्ता', 'भौंकना' से सम्बन्धित है, उसी प्रकार 'भालू' किससे सम्बन्धित है ?

(A) रंभाना (B) कटकटाना

(C) गुर्राना (D) चिंघाड़ना

हल (C) : जिस प्रकार 'कुत्ता' भौंकता है, उसी प्रकार 'भालू' गुर्राता है।

X. जानवर और उनका व्यवहार

उदा. जिस प्रकार 'खरगोश' का सम्बन्ध 'उछलना' से है, उसी प्रकार 'हाथी' का सम्बन्ध किससे होगा ?

(A) तेज चलना (B) धीरे चलना

(C) केला (D) बड़ा

हल (B) : जिस प्रकार 'खरगोश' उछलता है, उसी प्रकार 'हाथी' धीरे–धीरे चलता है।

2. अक्षर सादृश्यता

अक्षर सादृश्यता के अन्तर्गत पूछे जाने वाले प्रश्न मुख्यतः अंग्रेजी भाषा के 26 अक्षरों पर आधारित होते हैं, इनमें एक या एक से अधिक अक्षरों के समुच्चय होते हैं।

I. तीन अक्षरों के समुच्चय पर आधारित

उदा. FIT : HKV : : JOB : ?

(A) LQD (B) OSH

(C) OKI (D) QRS

हल (A): पहले दो शब्दों के समूह में प्रत्येक अक्षरों के बीच 2 अक्षर आगे बढ़ते जा रहे हैं।

जिस प्रकार,

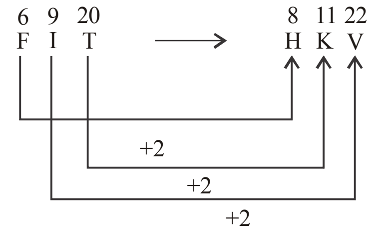

उसी प्रकार,

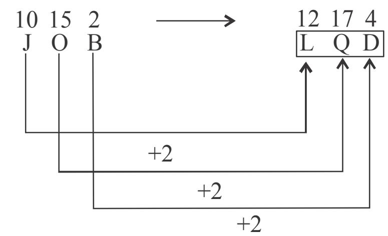

∴ ? = LQD

3. संख्या सादृश्यता

संख्या सादृश्यता के अन्तर्गत पूछे जाने वाले प्रश्न मुख्यतः संख्याओं के वर्ग–वर्गमूल, घन–घनमूल, जोड़–घटाव, गुणा–भाग, सम–विषम आदि पर आधारित होते हैं।

उदा. 4 : 64 : : 9 : ?

(A) 729 (B) 81

(C) 69 (D) 540

हल (A): $4^3 = 64$

$9^3 = 729$

∴ ? = 729

उदा. 8 : 56 : : 9 : ?

(A) 58 (B) 63

(C) 65 (D) 55

हल (B) : $8 \times 7 = 56$

$9 \times 7 = 63$

∴ ? = 63

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से सम्बन्धित अक्षर युग्म को चुनिए–

MOK : STS : : ?

(A) RGM : XLU

(B) RAP : XFY

(C) GOM : MNU

(D) LIP : RQH

2. दिये गये विकल्पों से सम्बन्धित अक्षरों का चयन करें।

KG : NE : : RO : ?

(A) UN (B) UM

(C) VN (D) VM

3. दिये गये विकल्पों से सम्बन्धित अक्षर-युग्म का चयन करें–

GRO : LKX : : ?

(A) RHT : WAB (B) APM : FWV

(C) KLB : PEK (D) HGO : MYX

4. दिये गये विकल्पों से सम्बन्धित शब्द युग्म का चयन करें–

Goat : 2 : : ?

(A) Dog : 5 (B) 2 : Hen

(C) Eagle : 2 (D) Crow : 3

5. दिये गये विकल्पों से सम्बन्धित शब्द का चयन करें।

माँद : शेर : : घोंसला : ?

(A) कुत्ता (B) मगरमच्छ

(C) बिल्ली (D) चिड़िया

6. दिये गये विकल्पों से सम्बन्धित शब्द युग्म का चयन करें।

खेत : किसान : : ?

(A) फैक्ट्री : कर्मचारी

(B) थियेटर : वैज्ञानिक

(C) रेस्टोरेन्ट : डॉक्टर

(D) नौकर : घर

7. दिये गये विकल्पों में से सम्बन्धित शब्द का चयन करें–

वाहन : कार : : उपकरण : ?

(A) घेरा (B) चाकू
(C) काटना (D) बाइक

8. गुप्त जैसे खुला के लिए है, वैसे चुपचाप किसके लिए है ?

(A) शायद (B) अशिष्टता
(C) शोर (D) चुपचाप

9. सरीसृप जैसे छिपकली के लिए है, वैसे ही फूल किसके लिए है ?

(A) पत्ती
(B) तना
(C) गुलबहार
(D) घड़ियाल (मगरमच्छ)

10. निम्नलिखित के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प को चुनिए –

एक बीमारी हमेशा _____ रखती है।

(A) नर्स (B) इलाज
(C) दवा (D) कारण

11. समरूपता पूर्ण कीजिए–

100 : 625 : : 80 : ?

(A) 216 (B) 400
(C) 500 (D) 640

12. 13 : 93 : : 17 : ?

(A) 45 (B) 15
(C) 31 (D) 51

13. निम्नलिखित के लिए सही विकल्प चुनें–

46 : 22 : : 88 : ___

(A) 45 (B) 44
(C) 43 (D) 42

14. उस विकल्प को चुनिए जो 3rd संख्या से समान तरीके से सम्बन्धित है। जिस प्रकार से 2nd संख्या, पहली संख्या से सम्बन्धित है।

12 : 72 : : 16 : ?

(A) 182 (B) 256
(C) 84 (D) 96

15. लुप्त संख्या का पता कीजिए–

5 : 125 : : 3 : ?

(A) 9 (B) 12
(C) 36 (D) 27

16. वह युग्म चुनिए, जिसमें संख्याएँ 11 : 1210 से समान रूप से संबंधित हों

(A) 6: 216 (B) 7: 1029
(C) 8: 448 (D) 9: 729

व्याख्यात्मक हल

1. (A) जिस प्रकार;

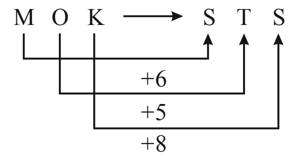

उसी प्रकार;

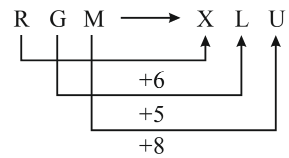

2. (B) जिस प्रकार,

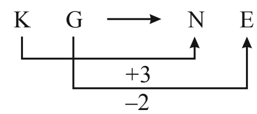

उसी प्रकार,

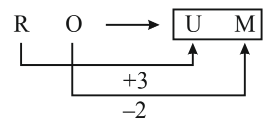

3. (C) जिस प्रकार,

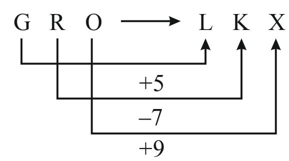

उसी प्रकार,

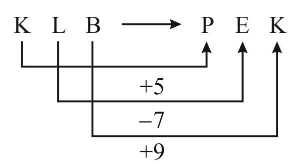

4. (C) जिस प्रकार,

'Goat' में दो स्वर a और o हैं तथा दो व्यंजन 'G' और 't' हैं।

'Goat' में कुल अक्षर = 4

कुल अक्षर–स्वर की संख्या = 4 – 2 = 2

उसी प्रकार,

Eagle में कुल अक्षर = 5

स्वरों की संख्या = 3

कुल अक्षर – स्वरों की संख्या

= 5 – 3 = 2

5. (D) जिस प्रकार, शेर माँद में रहता है, उसी प्रकार, चिड़िया घोंसले में रहती है।

6. (A) जिस प्रकार किसान खेत में काम करता है, उसी प्रकार कर्मचारी फैक्ट्री में काम करते हैं। अतः विकल्प (A) सही शब्द युग्म है।

7. (B) जिस प्रकार, कार वाहन है, उसी प्रकार, चाकू उपकरण है।

8. (C) जिस प्रकार गुप्त का विलोम खुला है। उसी प्रकार चुपचाप का विलोम शोर होगा।

9. (C) जिस प्रकार छिपकली सरीसृप है। उसी प्रकार गुलबहार फूल है।

10. (D) एक बीमारी हमेशा एक कारण रखती है कि किस बजह से उत्पन्न हुई है; जैसे–मच्छर काटने से मलेरिया, सर्दी में ठण्डा पानी पीने से खाँसी, जुकाम आदि होते हैं।

11. (C) 100 : 625 : : 80 : ?

$\frac{625}{100} = 6.25$

अतः सही विकल्प वही होगा, जिसके लिये अनुपात का मान 6.25 है

$\frac{216}{80} = 2.7 \neq 6.25$

$\frac{400}{80} = 5 \neq 6.25$

$\frac{500}{80} = 6.25$

$\frac{640}{80} = 8 \neq 6.25$

अतः अभीष्ट उत्तर 500 होगा।

12. (B) 3 × 13 = 39 → 93 (संख्या 39 को पलटने पर)

3 × 17 = 51 → 15 (संख्या 51 को पलटने पर)

13. (C) $\because \frac{46}{2} - 1 = 22$

$\therefore \frac{88}{2} - 1 = 43$

14. (D) 12 : 72 : : 16 : ?

12 × 6 = 72

16 × 6 = 96

अतः 4th विकल्प सही है।

15. (D) $5 \Rightarrow (5)^3 = 125$

दूसरी संख्या पहली की पूर्ण घन है,

उसी प्रकार,

$3 \Rightarrow (3)^3 = \boxed{27}$

16. (C) जिस प्रकार,

1210 = 121 × 10 = 11 × 11 × (11 – 1)

उसी प्रकार,

448 = 64 × 7 = 8 × 8 × (8 – 1)

❒❒

अध्याय
1

भारत का इतिहास

प्राचीन भारत को मुख्यतः प्राप्त स्रोतों के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है– **प्रागैतिहासिक काल, आद्यऐतिहासिक काल, ऐतिहासिक काल**

1. प्रागैतिहासिक काल (Pre-Historic Period)

प्रागैतिहासिक काल को मानव सभ्यता की दृष्टि से प्रारम्भिक काल माना है। इस काल को पाषाणकालीन सभ्यता भी कहा जाता है।

इस काल को सामान्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है–

- पुरापाषाण काल (5,00,000 से 8000 ई. पू.)
- मध्य पाषाण काल (8000 से 4000 ई. पू.)
- नव-पाषाण काल अथवा उत्तर पाषाण काल (4000 से 1000 ई. पू.)

2. आद्य-ऐतिहासिक काल (Early Historical Period)

- प्रागैतिहासिक काल के बाद का काल-आद्य ऐतिहासिक काल कहलाता है। इस काल में लेखन कला के प्रचलन के प्रमाण तो हैं, लेकिन ये लेख या तो पढ़े नहीं जा सके हैं या उनकी गूढ़ लिपि को समझना कठिन है।
- सिंधु एवं वैदिक सभ्यता इस काल से सम्बन्धित हैं।

3. वैदिक साहित्यों के विशेषध्यानाकर्षयीण तथ्य (Some Important Points of Vedic Literature)

- मैत्रायणी उपनिषद् में **चार** आश्रमों एवं त्रिमूर्ति की चर्चा है।
- श्वेताश्वतर उपनिषद् में परमात्मा को रुद्र बताया गया है।
- मैत्रायणी संहिता में स्त्री की गणना मद्य एवं जुए के साथ की गयी है।
- अथर्ववेद में **चिकित्सा** एवं **औषधि विज्ञान** की चर्चा है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को सभी दुखों का स्रोत बताया गया है।
- जबकि उपनिषद् में चारों आश्रमों की चर्चा मिलती है।
- वृहदारण्यक उपनिषद् में **पुनर्जन्म** की अवधारणा का उल्लेख है।
- काठक संहिता में क्षत्रिय को ब्राह्मण से श्रेष्ठ बताया गया है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में स्पष्ट रूप से बहुपतित्व का निषेध किया गया है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में राजा की उत्पत्ति सम्बन्धी नियमों की चर्चा है।
- वेदों को आर्यों ने **औपरुषेय** कहा है।
- शुक्ल यजुर्वेद को वाजसनेयी संहिता भी कहा जाता है।
- यजुर्वेद के प्रमुख देवता **प्रजापति** हैं।
- मुण्डकोपनिषद् में **छः वेदांगों** की चर्चा है।
- मैत्रायणी संहिता में धनी शूद्रों का उल्लेख है।

4. सिन्धु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization)

- सिन्धु सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक थी।
- सिन्धु सभ्यता अपनी समकालीन सभ्यताओं, यूनानी और मिस्री की तरह एक पूर्ण उन्नत सभ्यता थी।
- सिन्धु सभ्यता को हड़प्पा या हड़प्पा मोहनजोदड़ो सभ्यता भी कहा जाता है।
- सिन्धु घाटी सभ्यता अपने नगर नियोजन के लिए जानी जाती है।
- हड़प्पा सभ्यता की जल निकासी व्यवस्था विशेष प्रकार की थी।
- हड़प्पा सभ्यता में नगरों में प्रवेश पूर्वी सड़क से होता था, जो प्रमुख सड़क से मिलती थी, उसे ऑक्सफोर्ड सर्कस कहा जाता था।
- ईंटें प्रायः पक्की होती थीं, जिनका प्रयोग मकान एवं भवन बनाने के लिए किया जाता था।
- सिन्धु सभ्यता के घर ईंट से बनाये जाते थे। इन ईंटों की लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई का अनुपात 4 : 2 : 1 था।
- मार्टिन ह्वीलर ने सिन्धु प्रदेश के लोगों के शासन को मध्यवर्गीय जनतान्त्रिक शासन कहा है।
- स्टुअर्ट पिगट ने मोहनजोदड़ो के शासन को प्रतिनिधि शासन कहा है।
- सिन्धु सभ्यता के लोगों की सामाजिक इकाई परिवार थे। संयुक्त परिवार की प्रथा थी।
- सिन्धु सभ्यता के लोग अनेक वर्गों में विभाजित थे; जैसे–पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, शिल्पकार, जुलाहा और श्रमिक आदि।
- स्त्रीमृणमूर्तियाँ (मिट्टी की मूर्तियाँ) अधिक मिलने से ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सैंधव समाज मातृसत्तात्मक था।
- सिन्धु सभ्यता के लोग शाकाहारी और माँसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते थे। गेहूँ, जौ, तिल, सरसों, खजूर शाकाहारी पदार्थों के अलावा गाय, सूअर, मछली, घड़ियाल, कछुआ आदि के माँस का प्रयोग करते थे।
- सिन्धु सभ्यता के लोगों की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि और पशुपालन थे।
- व्यापार एवं वाणिज्य भी आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे।
- हड़प्पा के लोग मुख्य रूप से गेहूँ और जौ फसलों का उत्पादन करते थे।
- कालीबंगा से एक ही खेत में दो फसलें जौ और चना एक साथ उगाये जाने के प्रमाण प्राप्त होते हैं।
- लोथल और रंगपुर से चावल की भूसी के प्रमाण प्राप्त होते हैं, जिससे प्रतीत होता है, यहाँ चावल का उत्पादन होता था।
- हड़प्ता सभ्यता के लोग अपनी आवश्यकता से अधिक खाद्यान्न उत्पादन करते थे और अतिरिक्त उत्पाद को अन्नागारों में रखा जाता था।
- सिन्धु सभ्यता के लोग प्रायः पत्थरों और काँसे के औजारों का प्रयोग करते थे।

- सिन्धु सभ्यता के लोग, ताँबे में टिन मिलाकर काँसा तैयार करने की विधि अच्छी तरह जानते थे।
- सिन्धु सभ्यता में आन्तरिक, बाह्य दोनों प्रकार का व्यापार होता था।
- सिन्धु सभ्यता का व्यापार वस्तु विनिमय के माध्यम से होता था।

5. वैदिक काल (Vedic Age)

- 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक के कालखण्ड को भारतीय इतिहास में वैदिक सभ्यता की संज्ञा दी जाती है।
- वैदिक सभ्यता को दो स्पष्ट कालखण्डों में विभाजित किया जाता है। 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक के काल को **ऋग्वैदिक काल** और 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक के काल को उत्तर **वैदिक काल** के नाम से जाना जाता है।
- वैदिक सभ्यता का विकास **ग्रामीण अर्थव्यवस्था** के आधार पर हुआ।
- आर्य शब्द का अर्थ है–श्रेष्ठ, उत्तम, अभिजात्य, कुलीन एवं उत्कृष्ट।
- आर्य लोग स्थायी या **स्थिर निवासी** नहीं थे।
- आर्यों द्वारा विकसित **सभ्यता ग्रामीण** थी और इनकी भाषा **संस्कृत** थी।
- मैक्समूलर ने आर्यों का मूल निवास–स्थान मध्य एशिया को माना है।
- वैदिक सभ्यता के निर्माताओं को ऋग्वेद में 'आर्य' कहा गया है।
- भारतीय संस्कृति में वेदों को **अपौरुषेय** कहा गया है।
- आर्यों का आरम्भिक जीवन मुख्यतः **पशुचारण** था, कृषि उनका गौण व्यवसाय था।

I. ऋग्वैदिक काल (Regvedic Period)

- सिन्धु सभ्यता के पतन के बाद जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आयी उसे हम वैदिक संस्कृति कहते हैं।
- वैदिक संस्कृति के बारे में हमें जानकारी वेदों से प्राप्त होती है।
- आर्यों के आरम्भिक इतिहास की जानकारी ऋग्वेद से प्राप्त होती है।
- ऋग्वेद में हिमालय पर्वत और उसकी एक चोटी मूजवन्त का उल्लेख हुआ है, जहाँ से सोमरस प्राप्त किया जाता था।
- ऋग्वैदिक काल एक कबीलाई पितृसत्तात्मक समाज था।
- ऋग्वेद में आर्यों के पाँच कबीलों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- ग्रामीण प्रशासन छोटी से बड़ी इकाई में विभक्त था जैसे ग्राम–विश–जन।
- राजा का पद आनुवंशिक हो चुका था, वह कबीले का मुखिया था फिर भी उसे असीमित अधिकार नहीं थे।
- सभा समिति विद्थ और गण जैसी संस्था राजा को परामर्श देती थी और उस पर नियन्त्रण का कार्य करती थी।
- ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था के चिह्न दिखाई देते हैं, परन्तु वे इतने कठोर नहीं थे।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुष सूक्त में पहली बार चारों वर्णों की अंग उत्पत्ति का सिद्धान्त प्राप्त होता है।
- ऋग्वेद में वर्ण शब्द रंग या व्यवसाय के रूप में प्रयुक्त हुआ है।
- ऋग्वेद में कुल 10 मण्डल हैं जिसमें पहला और आठवाँ सबसे वाद में जोड़ा गया है, नौवाँ मण्डल सोमदेवता को समर्पित है।
- ऋग्वैदिक लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन था।
- ऋग्वैदिक काल में अर्थव्यवस्था का मूल आधार गाय थी, और अधिकांश लड़ाई गाय के लिए ही लड़ी जाती थी। गाय चोरी को गविष्ठि कहा जाता था। जिस व्यक्ति या कबीले के पास जितनी अधिक गाय होती थीं उतना ही समृद्ध माना जाता था।
- ऋग्वैदिक लोग बहु ईश्वरवादी थे। देवताओं की अपेक्षा देवियों की संख्या नगण्य है। सभी देवता किसी न किसी प्रकार से प्रकृति से सम्बन्धित थे।
- ऋग्वेद का सबसे महत्वपूर्ण देवता इन्द्र था, जिसे पुरंदर कहा जाता था (किलों को नष्ट करने वाला)।
- तीसरा महत्वपूर्ण देवता वरुण था जो जलराशि का प्रतिनिधित्व करता था जिसे ऋतस्यगोया कहा गया है। ऋग्वेद कालीन विभिन्न देवताओं का विवरण सारणी में उल्लेखित है।
- ऋग्वेद में उषा अदति सूर्या जैसी देवियों का भी उल्लेख है।
- ऋग्वेद की सबसे पवित्र नदी सिन्धु थी और दूसरी पवित्र नदी सरस्वती थी, जिसे (नदीतमा) कहा गया है।

II. उत्तर वैदिक काल (Post Vedic Period)

- भारतीय इतिहास के उस कालखण्ड को जिसमें सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद् अरण्यक आदि की रचना हुई, उत्तर वैदिक काल कहा जाता है।
- राजा, उत्तर वैदिक काल में कबीले का स्वामी नहीं था, बल्कि वह राज्य प्रदेश पर शासन करने लगा था।
- उपनिषद्काल में अनेक राजा हुए। विदेह के जनक, कैकेय के अश्वपति, काशी के अजातशत्रु, पंचाल के प्रवाहण जाबाली।
- उत्तर वैदिक काल में भी सभा और समिति नामक संस्था राजा की निरंकुशता को सीमित करती थी।

III. उत्तर वैदिक कालीन सामाजिक व्यवस्था (Social System of Past Vedic Period)

- उत्तर वैदिक काल में चारों वर्णों में स्पष्ट विभाजन हो गया और समाज जातियों में विभाजित हो गया और वर्णों में कठोरता आ गई।
- उत्तर वैदिक काल में ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य को द्विज कहा जाता था। शूद्र वर्ग की स्थिति में गिरावट आयी और उसे तीनों वर्गों की सेवा के लिये माना गया।
- जावलोपनिषद् में पहली बार चार आश्रमों का उल्लेख हुआ जिन्हें 25–25 वर्ष की अवधि में बाँटा गया, मनुष्य का जीवन प्रायः 100 वर्ष माना गया।

IV. उत्तर वैदिक कालीन धार्मिक जीवन (Religious life of Past Vedic Period)

- उत्तर वैदिक काल में इन्द्र का स्थान प्रजापति में ले लिया और प्रजापति सर्वोच्च देवता बन गया।
- उत्तर वैदिक काल में इन्द्र के अलावा अन्य देवताओं की स्थिति में भी परिवर्तन आया।
- ऋग्वैदिक कालीन शिव, उत्तर वैदिक काल में रुद्र के रूप में उच्च देवता के रूप में स्थापित हो गये।
- पूषन जो ऋग्वेद में पशुओं के देवता थे इस समय शूद्रों के देवता के रूप में परिवर्तित हो गये।
- मूर्ति पूजा का आरम्भ उत्तर वैदिक काल से ही माना जाता है।

6. प्राचीन भारत के धार्मिक आन्दोलन (Religious Movements of Ancient India)

ब्राह्मणवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में **छठी** शताब्दी ई.पू. में दो सम्प्रदायों का उदय हुआ। **यथा–जैन** धर्म तथा **बौद्ध** धर्म।

I. जैन धर्म (Jainism)

- जैन धर्म के संस्थापक **ऋषभदेव** हैं, जो कि पहले **जैन तीर्थंकर** (अवतार अथवा गुरु) भी थे।
- पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे।
- महावीर जैन धर्म के **24वें तीर्थंकर** हुए थे। इनको जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक भी माना जाता है।
- जैन धर्म की एक मात्र महिला तीर्थंकर मल्लिनाथ थीं।
- महावीर को 12 वर्ष की गहन तपस्या के पश्चात् जम्भिकग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के तट पर एक वृक्ष के नीचे **ज्ञान (कैवल्य)** की प्राप्ति हुई।
- कैवल्य की प्राप्ति के पश्चात् उन्हें कई नामों से जाना जाने लगा, यथा : **कैवलिन**, **जिन (विजेता)**, **निर्गन्थ** (बन्धन रहित), **महावीर**, अर्हंत (योग्य) आदि। बौद्ध **धर्म में महावीर का नाम** निगंठ–नाथपुत्त **मिलता है।**
- 468 ई.पू. में लगभग 72 वर्ष की आयु में महावीर को राजगृह के समीप पावापुरी में निर्वाण की प्राप्ति हुई।

II. बौद्ध धर्म (Buddhism)

- गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. में **नेपाल के तराई क्षेत्र** में स्थित लुम्बनी नामक ग्राम में हुआ था।
- सिद्धार्थ के जन्म के सातवें दिन ही इनकी **माता महामाया** की मृत्यु हो गई थी, अतः इनका पालन–पोषण इनकी **मौसी प्रजापति गौतमी** ने किया।
- 29 वर्ष की आयु में इन्होंने सत्य की खोज के लिए गृह–त्याग कर दिया, जिसे बौद्ध ग्रन्थों में महाभिनिष्क्रमण कहा जाता है।
- 35 वर्ष की उम्र में **बोधगया (बिहार)** में उरुवेला में पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा की रात्रि में समाधिस्थ अवस्था में इनको सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ (सम्बोधि)।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- गौतम बुद्ध ने अपना सर्वाधिक उपदेश कौशल की राजधानी श्रावस्ती में दिया था।
- बुद्ध ने अनुयायियों में उनके समकालीन शासक, बिम्बसार, प्रसेनजित, अजातशत्रु और उदयन प्रमुख थे।

7. छठी शताब्दी ई. पू. का भारत तथा महाजनपद काल (Indian 6th Century BC and Mahajanpada Age)

I. पूर्व मौर्य काल के महाजनपद (Mahajanpadas of Early Mauryan Age)

छठीं शताब्दी ई. पू. महाजनपदों के उदय को द्वितीय नगरीकरण की संज्ञा दी जाती है। छठीं शताब्दी ई. पू. में भारत राजनीतिक दृष्टिकोण से 16 महाजनपदों मे बँटा हुआ था। जिसका उल्लेख बौद्ध ग्रन्थ 'अंगुत्तर निकाय', 'महावस्तु' एवं जैन ग्रन्थ 'भगवती सूत्र' में मिलता है।

II. मगध महाजनपद का उत्थान (Rise of Magadh Mahajanpada)

16 महाजनपदों में से मगध साम्राज्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

छठी शताब्दी ई. पू. में मगध एक छोटा–सा राज्य था लेकिन यहाँ की भौगोलिक स्थित के कारण तथा योग्य एवं महत्वाकांक्षी शासकों ने इसे एक महान साम्राज्य का स्वरूप प्रदान किया। छठी शताब्दी ईसा पूर्व मगध भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य था।

III. हर्यंक वंश (Haryanaka Dynasty) (544-412 ई. पू.)

(i) बिम्बिसार (Bimbisar)

- यह हर्यंक वंश का संस्थापक था तथा उसका उपनाम श्रेणिक (श्रोणिय) था तथा **राजधानी गिरिव्रज** (राजगृह) थी। नियमित तथा स्थाई सेना रखने के कारण उसे **''श्रोणिय''** भी कहा जाता था।
- महावंश में कहा गया है कि बिम्बिसार का राज्याभिषेक उनके पिता द्वारा 15 वर्ष की आयु में ही हो गया था।
- बिम्बिसार ने अंग राजा **ब्रह्मदत्त** को हराया था।
- बिम्बिसार बौद्ध धर्म का (गौतम बुद्ध का समकालीन) **अनुयायी** था।
- बिम्बिसार ने **राजगृह** (राजधानी बनी) नगर का निर्माण कराया।
- इस नगर का योजनाकार (वास्तुकार) महागोविन्द था।

(ii) अजातशत्रु (Ajatshatru)

- बिम्बिसार की हत्या उसके पुत्र **अजातशत्रु** ने कर दी। वह 493 ई. पू. में मगध की गद्दी पर बैठा। उसने अपने पिता की हत्या गौतम बुद्ध के चचेरे भाई **देवदत्त** के परामर्श से की।
- अजातशत्रु का उपनाम **कुणिक** था। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- **अजातशत्रु** पहले **जैन धर्म** से प्रभावित था, परन्तु बाद में **बौद्ध धर्म** को मानने लगा।
- अजातशत्रु ने राजगृह में विशाल स्तूप का निर्माण करवाया था।
- अजातशत्रु का विवाह कोसल नरेश प्रसेनजित की पुत्री **वाजिरा** के साथ हुआ था।
- वज्जिसंघ में फूट अजातशत्रु के मन्त्री वस्सकार ने डाली थी तथा वज्जि गणराज्य के साथ अजातशत्रु का आजीवन युद्ध रहा।

(iii) उदायिन (Udayin)

- अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र **उदायिन** ने 460 ई. पू. में की और मगध की गद्दी पर बैठा।
- बौद्ध ग्रन्थों में उदायिन को पितृहन्ता कहा गया है, जबकि जैन ग्रन्थों में उसे पितृभक्त कहा गया है।
- उदायिन ने गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना की। उसने ही सर्वप्रथम पाटलिपुत्र का राजधानी के रूप में चयन किया था।

IV. शिशुनाग वंश (Shisunaga Dynasty) (412-344 ई. पू.)

(i) शिशुनाग (412 ई. पू. से 394 ई. पू.)

शिशुनाग ने हर्यंक वंश के अन्तिम शासक नागदशक की हत्या कर 412 ई. में शिशुनाग वंश की स्थापना की।

- इसने अवन्ति तथा वत्स राज्य पर अधिकार कर उसे मगध साम्राज्य में मिला लिया। इसने वैशाली को राजधानी बनाया।
- महावंश के अनुसार, शिशुनाग की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र कालाशोक गद्दी पर बैठा।

(ii) कालाशोक (394 ई. पू. से 366 ई. पू.)

- इसका नाम 'पुराण' तथा 'दिव्यावदान' में काकवर्ण मिलता है।
- इसने वैशाली के स्थान पर पुनः पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। इसने 28 वर्षों तक शासन किया।
- कालाशोक के समय द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन वैशाली में हुआ। द्वितीय महाबौद्ध संगीति की अध्यक्षता साबकमीर ने की थी। इसी समय बौद्ध संघ दो भागों (स्थाविर तथा महासांघिक) में बँट गया।

V. नन्द वंश (Nanda Dynasty) (344-322 ई. पू.)

(i) महापद्मानन्द (Mahapadmananda)

- पुराणों के अनुसार, इस वंश का संस्थापक **महापद्मानन्द एक शूद्र था**। इसमें महापद्मानन्द को 'सर्वक्षत्रांतक' (क्षत्रियों का नाश करने वाला) तथा 'भार्गव' (दूसरे परशुराम का अवतार) कहा गया है।
- इसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की तथा 'एकराट' एवं 'एकक्षत्र' की उपाधि धारण की।
- महापद्मानन्द के आठ पुत्र थे। धनानन्द भी इसका पुत्र था, जो नन्द वंश का अन्तिम शासक था।

(ii) धनानन्द (Ghanananda)

- इसके समय में 326 ई. पू. में **सिकन्दर** ने पश्चिमोत्तर भारत पर **आक्रमण** किया था। ग्रीक (यूनानी) लेखकों ने इसे 'अग्रमीज' कहा है।
- धनानन्द के दरबार में **चाणक्य** (तक्षशिला का आचार्य) आया था। जहाँ उसे धनानन्द के द्वारा **अपमानित** किया गया।
- 322 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य की सहायता से **धनानन्द की हत्या कर मौर्य वंश** की नींव रखी। अतः कहा जा सकता है कि सिकन्दर के आक्रमण के समय नंद वंश का शासन था।

8. प्राचीनकाल में पारसी एवं यूनानी आक्रमण (Persian and Greek Invasions in Ancient India)

I. ईरानी आक्रमण (Iran's Invaders)

- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के हखमनी वंश के राजाओं ने किया।
- **सायरस** (588-529 ई. पू.) **प्रथम विदेशी** था, जिसने भारत पर चढ़ाई करने का प्रयास किया था।
- **डेरियस प्रथम** को भारत पर आक्रमण करने में प्रथम सफलता मिली तथा उसने भारत को फारस साम्राज्य का
- डेरियस प्रथम ने भारतीय भू–भाग को जीतने के बाद इसे अपने साम्राज्य का बीसवाँ प्रान्त बनाया, जिसका उल्लेख बेहस्तून अभिलेख में हुआ है।
- ईरानी आक्रमण के चलते पश्चिमोत्तर भारत में **खरोष्ठी लिपि** का प्रचार हुआ।

II. सिकन्दर का भारत पर आक्रमण (Alexender's Invasion on India)

- मकदूनिया के शासक फिलिप का पुत्र **सिकन्दर अरस्तू** का शिष्य था।
- सिकन्दर तथा पोरस के बीच 326 ई. पू. में **हाइडेस्पीज का युद्ध** (वितस्ता का युद्ध) हुआ। यह युद्ध झेलम नदी के किनारे हुआ था।
- सिकन्दर की सेना ने **व्यास नदी पार करने से मना** कर दिया। सिकन्दर 325 ई. पू. स्थल मार्ग से वापस लौटा तथा निर्याकस के नेतृत्व में बाकी सेना जलमार्ग से लौटी। सिकन्दर भारतीय राज्य को फिलिप के हाथों सौंपकर बेबीलोन लौट गया था।
- 323 ई. पू. में **बेबीलोन** में **सिकन्दर** की **मृत्यु** हो गई।

III. मौर्य वंश (Maurya Dynasty)

(i) चन्द्रगुप्त मौर्य (Chandragupta Maurya)

- मौर्य वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने **322 ई. पू.** में अपने गुरु चाणक्य की सहायता से धनानन्द की हत्या कर मौर्य साम्राज्य की नींव रखी। चन्द्रगुप्त मौर्य को **सेण्ड्रोकोट्स (यूनानी)** भी कहा जाता है।
- सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त द्वारा 500 हाथी भेंट स्वरूप प्रदान किये गये थे।
- **मेगस्थनीज** चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में **सेल्यूकस के राजदूत** के रूप में रहा। इसी ने भारत के सम्बन्ध में **'इण्डिका'** नामक ग्रन्थ की रचना की।
- **मेगस्थनीज** ने अपनी पुस्तक इण्डिका में भारतीय या मौर्य समाज को 7 वर्गों में विभाजित किया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की राजधानी **पाटलिपुत्र** थी।

(ii) बिन्दुसार (Bindusara)

- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय को माननेवाला था और उसके दरबार में एक आजीवक ज्योतिषी निवास करता था। इसका उल्लेख बोध ग्रन्थ दिव्यादान में हुआ है।
- यूनानी लेखक विदेशी यूनानी लेखक अमित्रोचेटस (संस्कृत रूपान्तरण– अमित्रघात) बिन्दुसार के लिए उल्लेखित करते हैं।
- चन्द्रगुप्त की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **बिन्दुसार** पाटलिपुत्र की राजगद्दी पर बैठा।

(iii) अशोक (Ashoka)

- बिन्दुसार की संदिग्ध मृत्यु के बाद उसका पुत्र अशोक 269 ई. पू. में मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र की राजगद्दी पर बैठा, राजगद्दी पर बैठने के दौरान वह अवन्ति का राज्यपाल था।
- अशोक मौर्य साम्राज्य का **महानतम शासक** था।
- अभिलेखों में अशोक को देवानामप्रिय या देवानाप्रियदर्शी नाम से सम्बोधित किया गया है।
- पुराणों में अशोक को **अशोक वर्धन** नाम से जाना जाता है।
- अशोक ने 261 ई. के **कलिंग युद्ध** के रक्तपात से दु:खी होकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया।
- कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने भेरी घोष त्याग कर **धम्म घोष** अपनाया।

9. मौर्योत्तर काल
(Post–Mauryan Period)

मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरान्त **ब्राह्मण साम्राज्य** का उदय हुआ–इस साम्राज्य के अन्तर्गत प्रमुख शासक वंश शुंग, कर्ण सतवाहन थे।

I. शुंग वंश (Shunga Dynasty)

- मौर्य वंश के अन्तिम शासक वृहद्रथ की हत्या के बाद मगध में **पुष्यमित्र शुंग** ने शुंग वंश की स्थापना (184 ई. पू.) की।
- पुष्यमित्र शुंग ने **दो बार अश्वमेध यज्ञ** किए जिनका सम्पादन पतञ्जलि ने किया **और विदिशा को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।**
- पुष्यमित्र शुंग **भागवत धर्म** का अनुयायी था।
- पुष्यमित्र शुंग के समय में **यवन आक्रमण** हुआ था। इसकी जानकारी 'मालविकाग्निमित्रम्' में मिलती है।
- डेमेट्रियस (दिमित्र) नामक यवन राजा पुष्यमित्र का समकालीन था।
- **'गार्गी संहिता'** के युगपुराण में विवरण मिलता है कि यवन, साकेत और मथुरा पर अधिकार करने के बाद पाटलिपुत्र पहुँच गए थे।
- पुष्यमित्र की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **अग्निमित्र** उत्तराधिकारी बना।

II. कण्व वंश (Kanva Dynasty)

- शुंग के अन्तिम शासक देवदूति की हत्या करके उसके अमात्य **वासुदेव** ने **कण्व वंश** (73 ई. पू.) की स्थापना की।
- कण्व वंशीय शासकों के सिक्कों पर भूमिमित्र लिखा हुआ मिलता है।
- इस वंश में केवल चार शासक हुए—वासुदेव, भूमिमित्र, नारायण तथा सुशर्मन।
- इन्होंने लगभग 43 वर्ष तक शासन किया।
- इनका राज्य मुख्यतः बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश तक सीमित था।
- **कण्व वंश** की जानकारी **पुराणों से प्राप्त** होती है।
- अन्तिम शासक **सुशर्मन की हत्या 30** ई. पू. में **सिमुक** ने कर दी और एक नवीन ब्राह्मण वंश **'आन्ध्र-सातवाहन'** की नींव डाली।

III. सातवाहन वंश (Satvahana Dynasty)

- कण्व वंश के अन्तिम शासक सुशर्मन की हत्या कर (30 ई. पू.) **'सिमुक'** ने **सातवाहन वंश** की स्थापना की।
- अभिलेखों में इन्हें सातवाहन तथा पुराणों में इन्हें **'आन्ध्रभृत्य'** कहा गया है।
- सातवाहन वंश का प्रथम महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली शासक **शातकर्णी** प्रथम था।
- शातकर्णी प्रथम ने मालव शैली की गोल मुद्राएँ तथा अपनी पत्नी के नाम पर रजत मुद्राएँ उत्कीर्ण करवाईं।
- इसके सिक्कों पर **'श्रीसात'** (शातकर्णी का सूचक) का उल्लेख मिलता है।
- हाल सातवाहन वंश में महानतम् शासक था। वह एक बड़ा कवि तथा उसे कवियों एवं विद्वानों का आश्रयदाता माना जाता था।
- हाल में प्राकृत भाषा में **'गाथासप्तशती'** नामक एक मुक्तक काव्य की रचना की।
- उसकी राजसभा में 'बृहत्कथा' (पैशाची प्राकृत भाषा में रचित) के रचयिता गुणाढ्य तथा 'कातन्त्र' नामक संस्कृत व्याकरण के लेखक सर्ववर्मन निवास करते थे।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी सातवाहन वंश का महानतम शासक था
- गौतमीपुत्र शातकर्णी के विजय अभियानों की जानकारी उसकी माता गौतमी बलश्री के नासिक अभिलेख से प्राप्त होती है। इस अभिलेख में उसे अद्वितीय ब्राह्मण (एक ब्राह्मण) कहा गया है। इस अभिलेख के अनुसार उसके घोड़ों ने तीनों समुद्रों का पानी पिया था।
- **यज्ञश्री शातकर्णी** सातवाहन वंश का अन्तिम महत्वपूर्ण राजा था। उसने शकों के विजित क्षेत्र पर पुनः अधिकार कर लिया।
- यज्ञश्री शातकर्णी के सिक्कों पर जहाज के चित्र बने हुए हैं, जो उसके जलयात्रा एवं व्यापार के प्रति प्रेम का द्योतक है।
- उसके सिक्के आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश एवं गुजरात से प्राप्त हुए हैं।
- सातवाहन काल में **चाँदी** एवं **ताँबे के सिक्कों** का प्रयोग होता था जिसे कर्षापण कहा जाता था।
- ब्राह्मणों को सर्वप्रथम भूमिदान एवं जागीर देने की प्रथा का आरम्भ सातवाहनों ने किया। **सातवाहन शासकों ने ब्राह्मणों के अलावा बौद्ध भिक्षुओं को बड़ी मात्रा में भूमि दान दी थी।**
- **सातवाहनों** की राजकीय भाषा **प्राकृत** थी जो कि **ब्राह्मी लिपि** में थी।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने **वेणकटक नामक नगर** की स्थापना की।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने **'वेणकट' की उपाधि** धारण की।
- शातकर्णी प्रथम को पुराणों में कृष्ण का पुत्र कहा गया है।

IV. इण्डोग्रीक शासक/हिन्दयवन शासक (Indo greek Rulers)

- बैक्ट्रियाई या यूनानी वंश की दो शाखायें थीं—(1) **यूथेडेमस** वंश, (2) **यूक्रेटाइड्स** वंश।
- यूथेडेमस वंश की राजधानी **स्यालकोट** या साकल थी।
- यूक्रेटाइड्स वंश की राजधानी **तक्षशिला** थी।
- भारत के भीतरी भाग में प्रवेश करने वाला पहला यूनानी शासक **डेमेट्रियस** था। इसने भारतीय उपाधि राजा धारण की थी और **यूनानी खरोष्ठी लिपि में सिक्के चलवाए।**
- डेमेट्रियस ने अपने पिता की स्मृति में यूथीडेमिया नामक नगर बसाया।
- भारत में सबसे लेखयुक्त सोने के सिक्के इन्डो ग्रीकों ने ही जारी किये थे।
- **मिलिन्द** अथवा **मिनाण्डर** की बौद्धमत के प्रति बहुत **श्रद्धा** थी।

V. शक् शासक (Sakas Rulers)

- शक् मूलतः मध्य एशिया के निवासी थे, जो **चरागाह की खोज** में भारत आये।
- भारत में शकों की दो शाखायें प्रमुख थीं, जो पश्चिमी भारत में केन्द्रित थीं— **(1) क्षहरात, (2) कार्दमक।**
- क्षहरात शक् महाराष्ट्र के नासिक में केन्द्रित थे।
- कार्दमक सौराष्ट्र क्षेत्र के **उज्जैन** में केन्द्रित थे।
- क्षहरात वंश का पहला शासक माउस या **मोग** था।
- नहपान ने क्षत्रप और महाक्षत्रप दोनों ही उपाधियाँ धारण की थीं।
- नहपान ने महाराष्ट्र का एक बड़ा भाग **सातवाहनों से छीना** था।

- प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र भड़ौंच पर क्षहरातों का कब्जा था।
- कार्दमक शक् शाखा का संस्थापक **यशोमितिक** था।
- कार्दमक शक् शाखा का सबसे प्रसिद्ध शासक **रुद्रदामन** (130-150 ई.) था।

VI. पहलव शासक (Pahlavas Rulers)

- भारत में पहला पार्थियन या पह्लव शासक **पाउस** (90 ई. पू.–70 ई. पू.) था।
- पहलवों का मूल स्थान **ईरान** में था।
- **गोन्डोफर्निस पह्लव** वंश का सबसे **शक्तिशाली** शासक था।
- इसके शासनकाल का एक अभिलेख **'तख्तेबही' पेशावर** से प्राप्त हुआ है।
- गोन्डोफर्निस के समय ही ईसाई धर्म प्रचारक सेन्ट थॉमस भारत आया था। **विन्दोफर्निस ने तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया था।**

VII. कुषाण शासक (Kushans Rulers)

- भारत में कुषाण वंश की स्थापना **कुजुल कडफिसेस** ने 15 ई. में की।
- चीनी स्रोतों के अनुसार कुषाण चीन के **पश्चिमोत्तर क्षेत्र** के यू–ची कबीले के थे।
- **विम कडफिसेस** ने **सोने** एवं **ताँबे** के **सिक्के** जारी किये।
- यद्यपि उसके ताम्र तथा रजत (चाँदी) के सिक्के भी मिले हैं तथापि स्वर्ण सिक्के की संख्या अधिक है।
- भारत में **सर्वप्रथम यूनानियों** ने ही **सोने के सिक्के** जारी किए, जिनकी मात्रा कुषाणों के शासन काल में बढ़ी।
- कुषाण शासकों ने **स्वर्ण** एवं **ताँबा** दोनों ही प्रकार के सिक्कों को प्रचलित किया था।
- कनिष्क की सबसे महत्वपूर्ण विजय चीन के यारकंद, खोतान तथा काशगर की विजय थी।

  कुषाण राजा **देवपुत्र की उपाधि** धारण की थी जिसे चीनियों से ली थी।
- उसने **बौद्ध धर्म** को संरक्षण प्रदान किया तथा **महायान सम्प्रदाय** का प्रचार–प्रसार किया। चरक, कनिष्क के राजवैद्य थे, जिन्होंने **चरक संहिता लिखी**। **'कामसूत्र'** की रचना **'वात्सायन'** ने इसी काल में की थी।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों ने चलाये।

10. संगम काल (The Sangam Period)

- भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर जो कृष्ण नदी के दक्षिण में पड़ता है तीन राज्यों में विभक्त था—पाण्ड्य, चोल तथा चेर। इन तीनों राज्यों के काल को संगम काल कहा जाता है।
- संगम का अर्थ संघ, गोष्ठी, परिषद् या कवियों का सम्मेलन है।
- संगमकालीन राज्य क्षेत्रों को तमिलकम या **तमिलहम् प्रदेश** कहा गया।
- सुदूर दक्षिण के संगम युग की जानकारी का प्रमुख स्रोत **संगम साहित्य** है। संगम साहित्य में हमें तीन प्रमुख राज्यों—पाण्ड्य, चोल तथा चेरों के विषय में जानकारी मिलती है। ई. की प्रथम शताब्दी से तीसरी शताब्दी ई. पू. के मध्य तक 'संगम–युग' का समय माना जाता है।
- संगम से तात्पर्य तमिल कवियों के संघ अथवा मण्डल से है। इसका आयोजन पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में हुआ। 197 पाण्ड्य राजा इनके पोषक थे।
- संगम साहित्य से ज्ञात होता है कि दक्षिण में आर्य सभ्यता का प्रसार **अगस्त्य एवं कौण्डिन्य ऋषि** ने किया।
- इस काल में गुरुगन की उपासना सर्वाधिक प्रचलित थी।
- संगम साहित्य के अतिरिक्त **अशोक के शिलालेख, कलिंग नरेश खारवेल के** 'हाथीगुम्फा–अभिलेख', तमिल साहित्य, मेगस्थनीज के विवरण, कौटिल्य के विवरण आदि से भी इस काल की जानकारी प्राप्त होती है।
- **मेगस्थनीज** की **इण्डिका** में पाण्ड्य राज्य का सर्वप्रथम **उल्लेख** प्राप्त होता है, जिसमें बताया कि उनका राज्य मोतियों के लिए प्रसिद्ध है तथा राज्य का शासन 'एक स्त्री' द्वारा संचालित (हेराक्ल–पुत्री) है।

I. चेर राज्य (Chera Country)

- इसमें आधुनिक **केरल** तथा **तमिलनाडु** के कुछ अंश शामिल थे।

  उदायिन–जेरल (130 ई.) प्रथम चेर शासक था। इस वंश का प्रतीक चिह्न **धनुष** था।
- नेदुनजेरल आदन ने मरन्दै को अपनी राजधानी बनाया इसने **इमयवरम्बन** की उपाधि ग्रहण की।
- शेनगुट्टवन, 'लाल चेर' के नाम से जाना जाता है। यह महानतम चेर शासक था।

II. चोल राज्य (Chola Dynasty)

- यह **प्राचीनतम संगमकालीन** राज्य था। इसकी राजधानी पुहार अथवा **कावेरीपत्तनम** थी।
- इसका प्रतीक चिह्न **बाघ था**। करिकाल प्रारम्भिक चोल शासकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण था।

III. पाण्ड्य राज्य (Pandyas Country)

- पाण्ड्य राज्य प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण और दक्षिण–पूर्वी भाग में था। **मदुरै** इसकी **राजधानी** थी।
- मछली (कार्प) पाण्ड्यों का प्रतीक चिह्न था।
- पाण्ड्य वंश का ऐतिहासिक शासक **पलशालै कुरदुकुडुमी** था।
- महानतम पाण्ड्य शासक नेण्डुजेलियन ने रोम सम्राट आगस्टस के दरबार में अपना दूत भेजा था।

11. दक्कन और दक्षिण भारत के राज्य (States of Deccan and South India)

I. पल्लव वंश (Pallava Dynasty)

- **सिंहविष्णु** (575-600 ई.) पल्लव वंश का **संस्थापक** था, उसकी राजधानी काँची थी।
- प्रायद्वीप के पूर्वी भाग में सातवाहनों के अवशेष पर **कृष्णा-गुंटूर** क्षेत्र में स्थानीय जनजाति इक्ष्वाकुओं का उदय हुआ।
- इक्ष्वाकुओं को अपदस्थ कर उनकी जगह **पल्लव** आए। इनका अधिकार दक्षिणी आन्ध्र और उत्तरी तमिलनाडु दोनों पर था।

- सिंहविष्णु के पुत्र **महेन्द्र वर्मन** (600 ई. - 630 ई.) के शासनकाल में संस्कृत के महाकवि भारवि ने प्रसिद्ध ग्रन्थ **किरातार्जुनीयम** की रचना की।
- महेन्द्र वर्मन ने हास्य साहित्य मन्ति विलास प्रवहसन की रचना की थी और संगीतज्ञ रुद्राचार्य से संगीत की शिक्षा ली थी।
- नरसिंह वर्मन ने चालुक्यों को पराजित कर विजय स्तम्भ बनवाया था और वातापी कोन्ड तथा महामल्ल की उपाधि धारण की थी। साथ ही परम महेश्वर की उपाधि भी धारण की।
- नरसिंह वर्मन प्रथम ने श्रीलंका विजय की और उसके समय चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था।
- नरसिंह वर्मन II ने नाग पट्टनम में एक विहार का निर्माण करवाया था और चीन दूत मण्डल भेजा था।

II. राष्ट्रकूट (Rashtrakuta)

- दन्ति दुर्ग ने उज्जैन में हिरण्यगर्भ यज्ञ किया था।
- गोविन्द तृतीय राष्ट्रकूटों का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। इसने त्रिपक्षीय संघर्ष में पाल और प्रतिहार दोनों को पराजित किया था।
- राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष साहित्य एवं कला प्रेमी था। उसने ''कविराज मार्ग'' नामक कन्नड़ भाषा काव्य की रचना की थी।
- आदिपुराण के लेखक जिनसेन, गणित सार संग्रह के लेखक महावीराचार्य उसके दरबार में निवास करते थे।
- **दन्तिदुर्ग** (750 ई.) ने राष्ट्रकूट वंश की स्थापना एलिचपुर में की थी।
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण **कृष्ण प्रथम** ने करवाया था।
- **धुव (धारावर्ष) प्रथम राष्ट्रकूट शासक** था, जिसने कन्नौज पर अधिकार करने हेतु त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया और प्रतिहार नरेश वत्सराज एवं पाल नरेश धर्मपाल को पराजित किया।
- राष्ट्रकूटों की राजधानी **मनकिर या मान्यखेट** थी।

III. चालुक्य वंश (वातापी) [Chalukya Dynasty (Vatapi)]

- वातापी के चालुक्य वंश का संस्थापक **पुलकेशिन प्रथम** था। महाकूट **अभिलेख** में उसके पूर्व दो शासकों **जयसिंह तथा रणराग के नाम मिलते** हैं, परन्तु उनके शासनकाल के विषय में हमें कुछ ज्ञात नहीं है। इस वंश का सबसे प्रतापी **राजा पुलकेशिन द्वितीय** था।
- चालुक्यवंश की जानकारी का प्रमुख श्रोत पुलकेशिन का एहोल अभिलेख हैं इसे रवि कीर्ति द्वारा संस्कृत भाषा में ब्रह्मी लिपि में लिखा है।
- चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन I को वातापी का प्रथम निर्माता कहा जाता है जिसने अग्निस्टोम यज्ञ किया था।
- छठवीं से आठवीं शताब्दी तक चालुक्य–पल्लव संघर्ष का कारण कृष्णा–तुंगभद्रा दोआब पर आधिपत्य स्थापित करना था।

IV. चालुक्य वंश (कल्याणी) [Chalukya Dynasty (Kalyani)]

- कल्याणी के चालुक्य वंश की स्थापना **तैलप–द्वितीय** ने की थी।
- कल्याणी के चालुक्य शासक सोमेश्वर प्रथम ने कल्याणी को राजधानी बनाया था।
- कोप्पम और कुंडल संगमम के युद्ध चालुक्य और चोलों के बीच हुए थे जिसमें चोलों की विजय हुई थी।
- चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठ ने चालुक्य विक्रम संवत् चलवाया था।
- चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठ के दरबार में ''विक्रमादेवचरित'' के लेखक विल्हण तथा मिताक्षरा भाष्य के लेखक निवास करते थे।
- चालुक्य शासक सोमेश्वर तृतीय स्वयं विद्वान और विद्वानों का संरक्षक था जिसने ''मनसोउल्लास'' नामक शिल्प शास्त्र के ग्रंथ की रचना की थी।
- ऐहोल को आज भी मन्दिरों का नगर कहा जाता है, चालुक्य शासकों का राजकीय चिह्न वराह था।
- चालुक्यों का पारिवारिक चिह्न **वराह** था।

V. चोल साम्राज्य (9वीं–12वीं शताब्दी) (The Chola Empire)

- चोल वंश का संस्थापक **विजयालय** था, इसकी राजधानी **तंजौर** या तंजावुर थी। उसने **नरकेसरी** की उपाधि धारण की।
- राजराजा प्रथम को इस वंश का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।
- तक्कोलम का युद्ध परान्तक और राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय के बीच लड़ा गया था।
- राजराजा प्रथम ने उत्तरी श्रीलंका तथा मालदीव पर अधिकार कर लिया।
- राजराजा I श्रीलंका के शासक महिन्द पंचम को पराजित किया था।
- राजराजा I ने श्रीलंका की पुरानी राजधानी नष्ट–भ्रष्ट कर पोलन्नरूआ को अपनी नई राजधानी बनाया था। उसका नाम बदलकर ''जयनाथ मण्डल'' कर दिया था।
- राजराजा I ने मालद्वीप सहित सभी पूर्वी एशियाई देशों को या तो विजित किया या अधीन किया था।
- राजराजा I ने भू–सर्वेक्षण करवाया था और स्थानीय स्वशासन को प्रोत्साहित किया था।
- करदई अभिलेखों से राजेन्द्र I की उपलब्धियों की सही जानकारी मिलती है।
- **राजराजा प्रथम** ने तंजौर में **राजराजेश्वर शिवमन्दिर** या वृहदीश्वर मन्दिर बनवाया।
- राजराजा I के बाद राजेन्द्र चोल शासक बना।
- चोल शासक राजेन्द्र I ने श्रीलंका के शासक महिन्द पंचम को बन्दी बना लिया था।
- चोल शासक राजेन्द्र I ''गंगैकोन्ड चोल'' की उपाधि धारण की थी और उसे अपनी नई राजधानी बनाया था।

12. गुप्त वंश (The Gupta Period)

- कुषाण साम्राज्य के खंडहर पर नए साम्राज्य का उदय हुआ जिसने अपना अधिपत्य कुषाण व सातवाहन दोनों के राज्य क्षेत्र पर स्थापित किया। यह गुप्त साम्राज्य था।

I. चन्द्रगुप्त प्रथम (Chandragupta-I)

- कुषाणों के पतन के बाद गुप्त साम्राज्य अस्तित्व में आया। राजनैतिक दृष्टि से गुप्तों के काल को सत्ता विकेन्द्रीकरण या विघटन का काम माना जाता है।
- गुप्तों की जानकारी के लिये समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, कुमारगुप्त का विलसड अभिलेख तथा स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तम्भ लेख प्रमुख है।
- अभिलेखों के माध्यम से जानकारी प्राप्त होती है कि गुप्तों का आदि पुरुष घटोत्कच गुप्त था या संस्थापक था।
- गुप्त वंश का **संस्थापक श्रीगुप्त** (240–280 ई.) था। वास्तविक संस्थापक **चन्द्रगुप्त प्रथम** को माना जाता है। इसने **'महाराजाधिराज'** की उपाधि ग्रहण की।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319 ई. में **गुप्त संवत्** आरम्भ किया।

II. समुद्रगुप्त (Samundragupta)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना। स्मिथ ने इसे **भारत का नेपोलियन** कहा है।
- समुद्रगुप्त की विजयों का विवरण काव्य प्रशस्ति (**प्रयाग प्रशस्ति**) में मिलता है। इसे **हरिषेण ने** उत्कीर्ण किया था। समुद्रगुप्त कवि, संगीतकार और विद्वानों का संरक्षक था।
- समुद्रगुप्त को **अश्वमेध यज्ञ** करवाने का श्रेय दिया जाता है।
- समुद्रगुप्त विजेता के साथ–साथ **कवि, संगीतज्ञ** तथा **विद्या** का संरक्षक था।
- समुद्रगुप्त ने चीन दूत मण्डल भेजा था।

III. चन्द्रगुप्त द्वितीय (Chandragupta-II)

- चन्द्रगुप्त के समय गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष की चोटी पर पहुँचा गया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शक् मुद्राओं का अनुकरण कर चाँदी के सिक्के जारी किये थे।
- चन्द्रगुप्त की विजय और उपलब्धियों की जानकारी उदयगिरि गुहा अभिलेख से मिलती है। भारतीय अनुश्रुतियों में चन्द्रगुप्त का नाम शकारि मिलता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में कला, संस्कृति साहित्य के क्षेत्र में नई ऊँचाई प्राप्त की थी। इसी कारण इसके शासन काल को भारत का स्वर्णयुग या (Classical Age of India) कहा जाता है।

IV. कुमारगुप्त प्रथम (Kumargupta-I)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के उपरान्त **कुमारगुप्त प्रथम शासक बना**। इसने अश्वमेध **महेन्द्र की उपाधि धारण** की। **कुमारगुप्त शासन व्यवस्था के बारे में सही जानकारी उसकी मन्दसौर प्रशस्ति से मिलती है, जो वत्सभट्टि द्वारा लिखी गई थी।** गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त प्रथम के मिलते हैं। कुमारगुप्त प्रथम के अन्तिम दिनों में **पुष्यमित्रों का आक्रमण हुआ** था। इसके शासनकाल में **नालन्दा विश्वविद्यालय** की स्थापना हुई थी।
- कुमारगुप्त के **बिलसड़ अभिलेख, मन्दसौर अभिलेख, करमदण्डा अभिलेख** आदि से उसके शासनकाल की जानकारी मिलती है। कुमारगुप्त प्रथम के समय के सर्वाधिक गुप्तकालीन **अभिलेख प्राप्त हुए** हैं।

V. स्कन्दगुप्त (Skandagupta)

- इसके शासनकाल में **हूणों का आक्रमण** हुआ था। सुदर्शन झील का पुनरुद्धार स्कन्दगुप्त के समय सौराष्ट्र के गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित ने करवाया था।
- जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार स्कन्दगुप्त ने हूणों के आक्रमण को विफल कर दिया था। जूनागढ़ अभिलेख में हूणों को **'म्लेच्छ' कहा गया** है।
- कहोम अभिलेख के अनुसार इसने **शक्रादित्य की उपाधि** धारण की।

VI. कुमारगुप्त द्वितीय (Kumargupta-II)

- यह गुप्त साम्राज्य का **अन्तिम महान शासक** था। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद गुप्त प्रान्तों में सर्वप्रथम **जूनागढ़ (सौराष्ट्र) प्रान्त स्वतंत्र** हुआ था। अन्तिम गुप्त शासक **विष्णुगुप्त तृतीय** था।

13. पुष्यभूति वंश (वर्धन वंश)
[Pushyabhuti Dynasty (Varadhana Dynasty)]

I. थानेसर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश

- पुष्यभूति ने गुप्त राजाओं की दुर्बलता का लाभ उठाकर पूर्वी पंजाब में अपनी सत्ता स्थापित कर ली।
- पुष्यभूति वंश की स्थापना पुष्यभूति ने हरियाणा के अम्बाला जिले के **थानेसर नामक** स्थान पर की थी।
- गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् उत्तर भारत के राजवंशों में थानेसर का पुष्यभूति वंश सर्वाधिक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली सिद्ध हुआ। इतिहास में यही राजवंश **वर्धन वंश** के नाम से प्रसिद्ध है।
- पुष्यभूति वंश का संस्थापक **पुष्यभूति** था। इस वंश को वैश्य जाति से सम्बन्धित माना जाता है।
- पुष्यभूति गुप्तों के सामन्त थे, किन्तु हूणों के आक्रमण के बाद उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी थी।
- यह राजवंश हूणों के साथ हुए अपने संघर्ष के कारण प्रसिद्ध हुआ।
- इस वंश में नरवर्धन, आदित्यवर्धन तथा प्रभाकरवर्धन जैसे शासक हुए।
- **प्रभाकरवर्धन** इस वंश का **चौथा शासक** था।
- उसके दो पुत्र–**राज्यवर्धन** एवं **हर्षवर्धन** थे।
- प्रभाकरवर्धन की **पुत्री** का नाम **राज्यश्री** था।
- राज्यश्री का विवाह मौखरी वंश के **गृहवर्मन** से हुआ था।
- गौड़ शासक शशांक द्वारा राज्यवर्धन को मार दिये जाने के बाद हर्षवर्धन शासक बना।
- हर्षवर्धन 606 ई. में राजगद्दी पर बैठा। उस समय उसकी उम्र 16 वर्ष थी।
- हर्ष के विषय में हमें व्यापक जानकारी **बाणभट्ट द्वारा लिखित 'हर्षचरित' से मिलती** है।

- हर्ष का दरबारी कवि **बाणभट्ट** था।
- **हर्ष के दरबार में बाणभट्ट के अलावा मयूर और दिवाकर जैसे विद्वान भी निवास करते थे।**
- हर्ष ने कुल 41 वर्ष तक शासन किया।
- ह्वेनसांग को यात्रियों में राजकुमार, नीति का पण्डित तथा वर्तमान शाक्यमुनि नाम से जाना जाता है।
- हर्ष ने अपनी राजधानी **कन्नौज को बनाया।**
- **हर्ष** को **शिलादित्य नाम** से भी जाना जाता है।
- हर्ष ने परमभट्टारक तथा उत्तरापथस्वामी की उपाधि धारण की थी।
- हर्ष एक **प्रतिष्ठित कवि** एवं **नाटककार** था।
- उसने **'नागानन्द'**, **'प्रियदर्शिका'** एवं **'रत्नावली'** नामक नाटकों की रचना की।

14. संघर्ष का युग (लगभग 1000 से 1200 ई.) भारत में अरबों का आक्रमण (Age of Conflict) (Around 1000-1200 AD) (Arab Invasion in India)

- भारत में अरब आक्रमण की जानकारी 9वीं शताब्दी के लेखक अल–बिलादुरी की पुस्तक किताब–फुटूल–अल बलदान से होती है। साथ ही 12वीं शताब्दी के फारसी पुस्तक चचनामा भी अरब आक्रमण का उल्लेख करता है।
- अरब पहले मुस्लिम आक्रमणकारी थे जिन्होंने भारत पर आक्रमण किया था।
- मुहम्मद–बिन–कासिम पहला मुस्लिम था, जिसने 712 में सिन्ध पर आक्रमण कर देवल बन्दरगाह को अपने कब्जे में ले लिया था। कासिम ने रावर के युद्ध में सिन्ध के भारतीय शासक दाहिर को पराजित किया था।

I. महमूद गजनवी (Mahmud Ghasnavi)

- अलप्तगीन ने लगभग 800 वफादार सैनिकों के साथ अफगान प्रदेश के गजनी नगर में स्वतन्त्र गजनवी वंश की स्थापना की।
- **अलप्तगीन** की **मृत्यु** के बाद उसका पुत्र इस्हाक और उसके बाद **बलक्तगीन** गद्दी पर बैठा।
- बलक्तगीन की मृत्यु के बाद पीराई ने गजनी पर अधिकार कर लिया पर वह एक अयोग्य शासक था, जिसे हटाकर सुबुक्तगीन गद्दी पर बैठा।
- भारत पर आक्रमण करने वाला **प्रथम तुर्क** (द्वितीय मुस्लिम) शासक सुबुक्तगीन ही था।

II. महमूद गजनवी (998-1030 ई.) (Mahmud Ghaznavi (998-1030 AD)

- महमूद गजनवी **998 ई.** में **गजनी का शासक** बना।
- गजनी साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक अलप्तगीन था।
- **अलबरूनी, फिरदौसी, उत्बी** एवं **फर्रुखी** आदि विद्वान इसके संरक्षण में थे।
- 1020-21 ई. में महमूद ने बुन्देलखण्ड की सीमा पर विद्याधर की सेना के एक भाग को पराजित किया।
- 1001 से 1028 तक महमूद गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया था।
- भारत में महमूद गजनवी का **सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभियान** (1025-26 ई.) **सोमनाथ का अभियान** (गुजरात) था। उस समय वहाँ का शासक भीम प्रथम था। इस युद्ध में 50,000 से अधिक लोग मारे गए। महमूद सोमनाथ के मन्दिर को पूर्णतया नष्ट करके इसकी अकूत सम्पत्ति को लेकर वापस लौट गया।
- महमूद ने **अन्तिम आक्रमण 1027 ई.** में जाटों पर किया और उन्हें पराजित किया।
- **1030 ई.** में **महमूद गजनवी** की मृत्यु हो गई।

III. मुहम्मद गौरी (Muhammad Ghori)

- भारत में मुसलमानों के साम्राज्य का **वास्तविक संस्थापक मुइजुद्दीन मुहम्मद-बिन-साम** था, जिसे शिहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी अथवा 'गौर वंश का मुहम्मद' जैसे नामों से भी जाना जाता है।
- मुहम्मद गौरी, गजनी का शासक होने के नाते पंजाब को अपने राज्य का हिस्सा मानता था। इस समय पंजाब का शासन गजनी वंश के शासक खुसरव मलिक के अधीन था। पंजाब भारत का 'सिंहद्वार' कहा जाता था। अतः इस पर आक्रमण करना उसके लिये आवश्यक हो गया।
- साम्राज्य विस्तार के उद्देश्य से 1175 से 1205 ई. के मध्य **गौरी** ने **कई बार भारत पर आक्रमण** किये।
- मुहम्मद गौरी का पहला आक्रमण **1175 ई.** में **मुल्तान** पर हुआ, यह पहला तुर्क आक्रमणकारी था। मुल्तान का शासक एक मुसलमान था।
- 1178 ई. में उसने पाटन (गुजरात) पर चढ़ाई की, परन्तु गुजरात के शासक **भीम द्वितीय** द्वारा उसे पराजित होना पड़ा। यह भारत में मुहम्मद गौरी की पहली पराजय थी।
- 1206 ई. में मोहम्मद गौरी अपने जीते हुए क्षेत्रों को अपने गुलाम सेनापति **कुतुबुद्दीन ऐबक** को सौंप गया था और इस तरह दिल्ली **सल्तनत** की नींव पड़ी।

15. गुलाम वंश (Slave Dynasty)

I. कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) (Qutub-Ud-Din Aibak (1206-1210 AD)

- 1206 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने **गुलाम वंश** की **स्थापना** की थी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने न तो अपने नाम से सिक्के चलवाए और न ही खुत्बा पढ़वाया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने लाहौर से शासन का संचालन किया तथा लाहौर ही उसकी राजधानी थी।
- 1210 ई. में लाहौर में **चौगान** खेलते समय **घोड़े से गिरकर** ऐबक की मृत्यु हो गई थी।

II. आरामशाह (1210 ई.) (Aram Shah-1210 AD)

- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद सैनिक वर्ग में फैले असन्तोष रोकने के लिए लाहौर के सरदारों ने **कुतुबुद्दीन** ऐबक के पुत्र **आरामशाह** को गद्दी पर बैठाया।
- दुर्भाग्यवश आरामशाह एक कमजोर एवं अयोग्य शासक सिद्ध हुआ।
- आरामशाह के 8 माह के शासन के बाद इल्तुतमिश ने दिल्ली की सत्ता पर अधिकार कर लिया।

III. इल्तुतमिश (1211-1236 ई.) (Iltutmish (1211-1236 AD)

- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के समय वह बदायूँ का सूबेदार (गवर्नर) था।
- इल्तुतमिश को **दिल्ली सल्तनत** का **वास्तविक संस्थापक** माना जाता है। ऐसा इसलिये, क्योंकि ऐबक और आरामशाह ने लाहौर से ही शासन किया।
- इल्तुतमिश **ऐबक** का **गुलाम** और **दामाद** था, वह एक **इल्वरी तुर्क** था। इल्तुतमिश ने पहली बार राजधानी दिल्ली में स्थापित की थी।
- इसे **'गुलाम का गुलाम'** कहा जाता है।
- **इक्ता प्रणाली** का आरम्भ **इल्तुतमिश** के समय में हुआ था।
- इल्तुतमिश ने **चाँदी का टंका** और **ताँबे का जीतल** जैसे सिक्के चलाए और दिल्ली में टकसाल की स्थापना की।
- इल्तुतमिश की मृत्यु 30 अप्रैल, 1236 ई. में होने के बाद से 1265 ई. के मध्य तक का (लगभग 30 वर्षों का) इतिहास संघर्ष और अधिकारियों की बढ़ती महत्त्वाकांक्षाओं का रहा।

IV. रजिया (Razia)

- रजिया 1236 ई. में जब शासक बनी, तो तुर्क अमीरों ने उसका भारी विरोध किया था।
- रजिया के सबसे बड़े विरोधी निजामुलमुल्क जुनैदी अल्तूनिया थे।
- सरहिन्द के सूबेदार अल्तूनिया ने ही रजिया के समय पहला विद्रोह किया था।
- रजिया मलिक याकूत से विशेष अनुराग रखती थी, परन्तु उसने विवाह अल्तूनिया के साथ किया था।
- 13 अक्टूबर, 1240 को कैथल हरियाणा में रजिया और उसके पति अल्तूनिया की हत्या वहरामशाह द्वारा कर दी गई और दिल्ली सल्तनत में एक अध्याय का अन्त हो गया।
- बहराम शाह के बाद **अलाउद्दीन मसूद शाह** और उसके बाद **इल्तुततिश** का पौत्र **नासिर उद्दीन महमूद** गद्दी पर बैठा।

V. नासिरुद्दीन महमूद (Nasiruddin Mahmud)

- सल्तनत काल में षड्यन्त्रों की शुरुआत इसी के समय से शुरू हुई।
- नासिरुद्दीन के समय समस्त शक्ति बलवन के हाथों में थी।
- नासिरुद्दीन महमूद ने ही बलबन को उलगू खाँ की उपाधि की थी।
- नासिरुद्दीन के समय भारतीय मुसलमानों का एक अलग दल बनाया था।

VI. ग्यासुद्दीन बलबन (1266-1286 ई.) (Ghiyasuddin Balban (1266-1286 AD)

- ग्यासुद्दीन बलबन **इल्बरी तुर्क** था जिसे मंगोलों ने पकड़कर गुलाम के रूप में बेच दिया था।
- बलबन अपनी योग्यता और दूरदर्शिता के कारण उन्नति करता गया और इल्तुतमिश के **'चालीसा दल'** का सदस्य बनने में सफल हुआ।
- बलबन को **नासिरुद्दीन महमूद** ने **उलगू खाँ** की उपाधि प्रदान की थी।
- राजत्व के सम्बन्ध में उसने **दैवीय अधिकारों** पर बल दिया।
- उसने **सिजदा** (दण्डवत्) और **पाबोस** (कदम चूमना) का नियम लागू किया।
- उसने अपने दरबार को **ईरानी तौर-तरीकों** से सजाया।
- बलबन ने सर्वप्रथम विद्रोही मेवातियों के विरुद्ध प्रशिक्षित सेना भेजकर उनका कठोरतापूर्वक दमन किया।
- **1286** ई. में **बलबन** की **मृत्यु** हो गई। बलबन के समय पहला विद्रोह तुगटिल ने किया था।

16. खिलजी वंश [Khilji Dynasty (1290-1320 ई.)]

I. जलालुद्दीन फिरोज खिलजी

- खिलजी वंश का संस्थापक **जलाल उद्दीन फिरोज** खिलजी था।
- यह सल्तनत का पहला ऐसा शासक था, जिसने हिंदू जनता के प्रति अच्छा व्यवहार किया।
- जलालुद्दीन का राजनीतिक उत्कर्ष कैकूबाद (1286-1290 ई.) के समय में प्रारम्भ हुआ। कैकूबाद के समय वह 'समाना' का सूबेदार तथा **सर-ए-जहाँदार** (शाही अंगरक्षक) के पद पर नियुक्त था।
- कैकूबाद ने उसको **'शाइस्ता खाँ'** की उपाधि दी।
- राज्याभिषेक के समय **जलालुद्दीन** की **आयु** 70 वर्ष थी।
- जलालुद्दीन ने **'अहस्तक्षेप की नीति'** को अपनाया।

II. अलाउद्दीन खिलजी (Alauddin Khilji)

- जुलाई, 1296 ई. में अली गुर्शास्प (अलाउद्दीन खिलजी) ने सुल्तान जलालुद्दीन को कड़ा-मानिकपुर बुलाकर गले मिलते समय धोखे से चाकू मारकर हत्या कर दी और सत्ता पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।
- 1291-92 ई. अलाउद्दीन द्वारा बलबन समर्थक मलिक छज्जू के विद्रोह का दमन किया गया, इस उपलक्ष्य में जलालुद्दीन द्वारा उसे कड़ा मानिकपुर का सूबेदार नियुक्त किया गया।
- **अलाउद्दीन खिलजी, सुल्तान** का **भतीजा** तथा **दामाद** था। वह बहुत महत्वाकांक्षी था।
- **अलाउद्दीन खिलजी** के **सेनापति नुसरत खाँ** ने गुजरात विजय के दौरान मलिक काफूर को 1000 दीनार देकर खरीदा था, जिसके कारण मलिक काफूर को हजार दीनारी कहा जाता था। अलाउद्दीन की अधिकांश विजय मलिक काफूर द्वारा ही की गई थीं। मलिक काफूर एक हिन्दू हिजड़ा था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने **सैनिकों को नकद वेतन** देने तथा **स्थायी सेना** का **गठन** किया। इसके काल में **सैनिकों** का **हुलिया** लिखा जाने लगा तथा **घोड़ों को दागना** शुरू किया गया।
- **अमीर खुसरो** इसका **दरबारी कवि** था, खुसरो को **'तोता–ए–हिंद'** भी कहा जाता है। इन्होंने **तबले** का **आविष्कार** किया था।

III. कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-1320 ई.) [Qutubuddin Mubarak Khilji (1316-1320 AD)]

- अलाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र **कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी** 1316 ई. में दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना।
- राजसिंहासन पर बैठते ही कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ने अपने पिता अलाउद्दीन खिलजी के **कठोरतम आदेशों** को **रद्द** कर दिया।
- कुतुबुद्दीन ने एक निम्न जाति के मुसलमान बने हसन को **'खुसरो खाँ' की उपाधि** से सम्मानित कर, उसे अपने राज्य का प्रधानमन्त्री बनाया।

- 1320 ई. में खुसरो खाँ के एक मित्र ने कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी की हत्या कर दी और खुसरो दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासन पर 'नासिरुद्दीन खुसरो शाह' के नाम से गद्दी पर बैठा। जियाउद्दीन बरनी के अनुसार मुबारक खिलजी कभी–कभी दरबार में नग्न अवस्था में आता था।

17. तुगलक वंश (Tughlaq Dynasty)

I. ग्यासुद्दीन तुगलक (Gyasuddin Tughlaq)

- ग्यासुद्दीन तुगलक या **गाजी मलिक** 'तुगलक वंश' का **संस्थापक** था। यह वंश **'कराना तुर्क'** के वंश के नाम से भी प्रसिद्ध था, क्योंकि ग्यासुद्दीन तुगलक का पिता कराना तुर्क था।
- गाजी मलिक को खिलजी के शासनकाल में होने वाले सैन्य अभियानों का अध्यक्ष तथा दीपालपुर का राज्यपाल नियुक्त किया गया।
- मंगोलों को पराजित करने के कारण **ग्यासुद्दीन तुगलक 'मलिक-उल-गाजी'** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- 3 सितम्बर, 1320 ई. को ग्यासुद्दीन तुगलक गद्दी पर बैठा।
- दिल्ली का वह **प्रथम सुल्तान** था, जिसने **'गाजी'** (काफिरों का घातक) की **उपाधि** धारण की।
- ग्यासुद्दीन तुगलक ने **'तुगलकाबाद'** नामक नगर बसाया वास्तुकला की **तुगलक शैली** का **प्रारम्भ** इसके मकबरा के निर्माण से हुआ।
- ग्यासुद्दीन तुगलक ने 1321 ई. में अपने पुत्र जौना खाँ को तेलंगाना (वारंगल) के शासक प्रतापरुद्र देव के विरुद्ध अभियान के लिए भेजा। जहाँ वह असफल रहा।
- 1324 ई. में जौना खाँ ने अपना **दूसरा अभियान जाजनगर** (उड़ीसा) पर किया, वहाँ का शासक भामूदेव द्वितीय था। इस युद्ध में जाजनगर का शासक पराजित हुआ।

II. मुहम्मद–बिन–तुगलक (Mohammad-Bin-Tughlaq)

- 1325 ई. में **जौना खाँ,** मुहम्मद–बिन–तुगलक के नाम से सुल्तान बना। इतिहास में मुहम्मद–बिन–तुगलक को **रक्त का प्यासा, परोपकारी, बदनसीब** आदर्शवादी तथा बुद्धिमान मूर्ख कहते हैं।
- **विमुद्रीकरण की प्रक्रिया** अपनाने वाला सबसे **पहला सुल्तान** था।
- मुहम्मद–बिन–**तुगलक** के काल में 1333 ई. में मोरक्को का यात्री **इब्नबतूता दिल्ली आया**, जिसे सुल्तान ने दिल्ली का काजी नियुक्त कर दिया था। वह यहाँ पर **8 वर्ष तक** रहा और फिर सुल्तान ने उसे राजदूत बनाकर चीन भेजा था।
- मुहम्मद–बिन–तुगलक ने **'अमीर–ए–कोही'** नाम से **कृषि विभाग** का गठन किया और **मुस्तखराज** नामक **अधिकारी** की **नियुक्ति** की थी।
- मुहम्मद–बिन–तुगलक ने दिल्ली से लगभग 700 मील दूर **देवगिरि** को **राजधानी बनाया** और उसने **देवगिरि** का नाम **बदलकर दौलताबाद** रख दिया और देवगिरि कुबतुलइस्लाम भी कहा गया।
- उसने **1335 ई.** में राजधानी **पुनः दिल्ली स्थानान्तरित** की।
- मुहम्मद–बिन–तुगलक ने अपने शासन के प्रारम्भ में **ताँबे** या **काँसे** के **सिक्के चलाए।**

III. फिरोज शाह तुगलक (Firoz Shah Tughlaq) (1351-1388)

- यह मुहम्मद–बिन–तुगलक का **चचेरा भाई** था, जो मुहम्मद तुगलक के बाद शासक बना था।
- इसने **हिसार, फिरोजाबाद, जौनपुर, फिरोजशाह कोटला** आदि नगर बसाये थे। जौनपुर को जौनाखाँ (मु. तुगलक) के नाम पर बसाया गया था।
- इसने **टोपरा** में **स्थित** अशोक **स्तम्भ को** दिल्ली में लाकर स्थापित किया।
- इसने **जजिया** कर, **खराज** (कृषि कर), **जकात** और **खुम्श** (युद्ध में की गई लूट पर लगने वाला कर) लगाये।
- फिरोज शाह तुगलक ने **दीवान–ए–खैरात** (दान विभाग, निःशुल्क चिकित्सा के लिए दारुल शिफा), गुलामों के लिए **'दीवान–ए–. बंदगान'** तथा रोजगार कार्यालय और मैरिज ब्यूरो की स्थापना की।
- फिरोजशाह के समय बंगाल **दिल्ली सल्तनत** के **नियन्त्रण** से बाहर हो गया, हालाँकि फिरोजशाह तुगलक ने बंगाल पर दो बार अभियान किया, किन्तु दोनों बार असफल रहा।

18. सैयद वंश (Sayeeid Dynasty)

- खिज्र खाँ सैयद वंश का संस्थापक था, खिज्र खाँ पहला व्यक्ति था, जिसने सुल्तान की उपाधि धारण न कर रैयत–ए–आला की उपाधि धारण की थी। इसके काल में माह्या–बिन–सरहिंदी ने **'तारीख–ए–मुबारक शाही'** लिखी।
- इसके बाद मुहम्मद शाह और अलाउद्दीन आलम शाह शासक हुए।

I. खिज्र खाँ (1414-21 ई.) (Khizr Khan) (1414-21AD)

- खिज्र खाँ ने इस वंश की स्थापना की थी। इसने न तो शाह की पद्वी धारण की और **सिक्के भी नहीं** चलवाये।
- खिज्र खाँ को **'तारीख-ए-मुबारकशाही'** में सैयद बताया गया है। सैयद से आशय है पैगम्बर मुहम्मद (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वंशज।
- खिज्र खाँ का शासनकाल क्षेत्रीय राजवंशों के उदय और चुनौतियों में ही बीत गया।

II. मुबारक शाह (1421-34 ई.) (Mubarak Shah (1421-34 AD)

- खिज्र खाँ के पश्चात् उसका पुत्र **मुबारक शाह** शासक बना।
- मुबारक शाह एक योग्य सेनाध्यक्ष था, उसने अनेक विद्रोहों का दमन किया।
- मुबारक शाह ने 'खुत्बा' पढ़वाया और अपने नाम के **सिक्के चलवाए।** उसने सिक्कों पर अपना नाम **'मुईज-उद्-दीन मुबारक शाह'** खुदवाया।

III. मुहम्मद शाह (1434-45 ई.) (Muhammad Shah (1434-45 AD)

- सरवर-उल-मुल्क के नेतृत्व में अमीरों और सरदारों ने मुहम्मद शाह को गद्दी पर बैठाया, जो उसके भाई फरीद खाँ का पुत्र था।
- सुल्तान ने मुबारक शाह की हत्या में प्रमुख भूमिका निभाने वाले सरवर-उल-मुल्क को दण्ड की बजाय वजीर का पद दिया।
- मुहम्मद शाह के काल में वास्तविक शक्ति सरवर-उल-मुल्क के पास ही थी।

19. लोदी वंश (Lodhi Dynasty) (1451-1526)

- बहलोल लोदी ने दिल्ली में **लोदी वंश** की स्थापना की।
- दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला प्रथम **अफगान शासक बहलोल लोदी** था। वह बहलोलशाह गाजी के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- बहलोल लोदी सिंहासन पर न बैठकर अपने दरबारियों के बीच बैठता था, वह अपने दरबारियों को **मकसद–ए–अली** कहकर पुकारता था।
- बहलोल लोदी, लोदियों की एक महत्वपूर्ण जनजाति 'शाहूखेल' से सम्बन्धित था।
- बहलोल ने सम्भल में दरिया खाँ, कोल (अलीगढ़) में ईस खाँ, साकेत में मुबारक खाँ, मैनपुरी एवं भोगाँव के राजा प्रताप सिंह के विरुद्ध सफल सैनिक अभियान किए।
- जौनपुर विजय के पश्चात् बहलोल की कीर्ति में वृद्धि हुई तथा धौलपुर, कालपी, बाड़ी के सरदारों में भय उत्पन्न हुआ; उन्होंने अधीनता स्वीकार करने के साथ-साथ नज़राना भी दिया।
- 1486-87 ई. में उसने ग्वालियर के शासक राय कर्ण (कीर्तिदेव) को पराजित कर 80 लाख टका नजराना प्राप्त किया, ग्वालियर अभियान ही उसका अन्तिम अभियान था।
- ग्वालियर से वापस लौटते समय वह बीमार हो गया और **जुलाई, 1489** में दिल्ली आते समय रास्ते में ही उसकी **मृत्यु हो गई**।
- **सिकंदर लोदी** बहलोल लोदी के बाद गद्दी पर बैठा इसने **न्याय व्यवस्था** की स्थापना की तथा भूमि की पैमाइश के लिए **सिकंदरी गज** चलाया। सिकंदर लोदी ने गुलरुखी के नाम से कविताएँ लिखीं।
- सिकंदर लोदी ने आयुर्वेद पर **'फरहंग–ए–सिकंदरी'** नामक पुस्तक लिखी।
- सिकन्दर लोदी **गुलरुखी** के उपनाम से फारसी में **कविताएँ** लिखता था। उसके समय में गायन विद्या के एक श्रेष्ठ ग्रन्थ **लज्जत-ए-सिकन्दरशाही** की रचना हुई।
- सिकन्दर ने 1494 ई. में बनारस के निकट एक **युद्ध** में **हुसैन शाह** को पराजित किया। इस अभियान में उसने बंगाल से बिहार तक का क्षेत्र विजित कर लिया।
- सिकन्दर लोदी ने **आगरा** नामक एक **नए नगर** की स्थापना कराई और **1504 ई.** (1506 ई. कुछ स्रोतों में) में आगरा को अपनी राजधानी बनाया।
- उसके काल में संगीत से सम्बन्धित एक ग्रन्थ **'लज्जत-ए-सिकन्दरशाही'** की रचना हुई थी।
- सिकन्दर लोदी की **मृत्यु 1517** ई. में गले की बीमारी के कारण हुई।
- सिकन्दर की मृत्यु के बाद इब्राहिम लोदी लोदी वंश का उत्तराधिकारी बना।
- 1517 में **इब्राहिम लोदी** और **राणा सांगा** के बीच युद्ध हुआ, जिसमें **इब्राहिम लोदी** की पराजय हुई थी।
- इब्राहिम लोदी सिकन्दर लोदी का पुत्र था, जोकि लोदी वंश का अन्तिम शासक था।

20. मध्यकालीन भारत के धार्मिक आन्दोलन (Religious Movements of Medieval India)

मध्यकाल के दौरान विभिन्न कारणों से धार्मिक सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हुए। दसवीं शताब्दी के बाद रूढ़िवादी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए भक्ति आन्दोलन का आरम्भ दक्षिण भारत से हुआ इसके प्रणेता शंकराचार्य थे। बाद में वैष्णव और शैव सन्तों ने इसे लोकप्रिय बनाया, पश्चातवर्ती समय में भक्ति आन्दोलन का प्रचार एवं प्रसार क्षेत्रीय भाषाओं में होने लगा, जिसके कारण यह और अधिक लोकप्रिय हो गया।

I. भक्ति आन्दोलन के प्रमुख संत (Important Saints of Bhakti Movement)

1. **रामानन्द (Ramanand)**: जन्म 1299 प्रयाग में, उत्तर भारत में भक्ति का प्रचार, वर्णाश्रम की निंदा।
2. **कबीर (Kabeer)** : जन्म 1425 वाराणसी में, जुलाहा जाति के, सामाजिक व धार्मिक कुरीतियों का विरोध।
3. **गुरुनानक (Gurunanak)** : जन्म 1469 तलवंडी, पंजाब; सिख धर्म के संस्थापक।
4. **चैतन्य (Chaitanya)** : जन्म 1468 नादिया प. बंगाल; 'निमाई पंडित' के नाम से लोकप्रिय, कीर्तन जुलूस के लिए प्रसिद्ध।
5. **वल्लभाचार्य (Vallabhacharya)**: जन्म 1469 चम्पारण्य, वाराणसी में कृष्ण भक्ति को प्रचारित किया, सूरदास के गुरु।
6. **तुलसीदास (Tulsidas)** : जन्म 1497 राजापुर; उ.प्र., रामचरित मानस (अवधी) लिखा।
7. **नामदेव (Namdev)** : जन्म 1326 महाराष्ट्र में, बारकरी सम्प्रदाय के।
8. **मीराबाई (Mirabai)** : मेवाड़ के राजा भोज की पत्नी व रैदास की शिष्या, कृष्ण भक्त।
9. **दादू (Dadu Dayal)**: धुनिया थे।
10. **रैदास (Ravidas)** : हरिजन थे।

II. सिख धर्म या सिख सम्प्रदाय (Sikhism)

सिख धर्म में कुल 10 गुरु हुए, जो निम्नलिखित हैं–

(i) गुरुनानक देव (1469-1539)

सिख धर्म के संस्थापक गुरुनानक देव जी का जन्म 1469 ई. में तलवण्डी (आधुनिक ननकाना) में पिता कालूचन्द और माता तृप्ता देवी के घर में हुआ। इनका विवाह बटाला के मूलराज खत्री की पुत्री सुलक्षणी/सुलाखिन से हुआ जिनसे इनके दो पुत्र श्रीचन्द्र और लक्ष्मीदास हुए।

(ii) गुरु अंगद देव (1539-52)

इनका प्रारम्भिक नाम लहना था जो बाद में गुरुनानक के पश्चात् गुरु अंगद देव के नाम से सिखों के दूसरे गुरु बने। ये प्रारम्भ में दुर्गा के भक्त थे, परन्तु नानक जी से मिलने के बाद वे उनके शिष्य बन गए और उनके साथ रहने लगे।

(iii) गुरु अमरदास (Guru Amardas) (1552-74)

ये प्रारम्भ में वैष्णव थे। ये स्वयं किसानी और व्यापार करते थे और अपने शिष्यों को भी गृहस्थ ही रहकर पारिवारिक संत रहने का उपदेश दिया करते थे। इन्होंने ही सती प्रथा और पर्दा प्रथा का विरोध किया और आनंद नामक पद्य की रचना की। इन्होंने अपनी पुत्री बीबीभानी का विवाह रामदास से किया और इसी विवाह में अकबर ने गुरु अमरदास से भेंट की और रामदास को 500 बीघा जमीन दी।

(iv) गुरु रामदास (Guru Ramdas) (1574-81)

इन्होंने विचार दिया कि गुरु की आत्मा स्वतः ही अगले गुरु में चली जाती है। इन्होंने ही गुरु के पद को अब वंशानुगत कर दिया। इनके अकबर से अच्छे सम्बन्ध थे अतः ये अकबर के दरबार में जाते रहते थे।

(v) गुरु अर्जुनदेव (Guru Arjundev) (1581-1606)

इन्होंने तरनतारन और करतारपुर नामक नगरों की स्थापना की। इन्होंने ही अमृतसर में स्वर्णमंदिर का निर्माण कराया था। इन्होंने ही धर्म की अभिवृद्धि हेतु एक अनिवार्य धार्मिक कर (1/10) लगाया। 1604 ई. में आदि ग्रन्थ का संकलन किया।

(vi) गुरु हरगोविंद (Guru Hargobind) (1606-45)

यह पहले सिख गुरु थे जिन्होंने शस्त्र धारण किये। 1609 में इन्होंने अकाल तख्त की स्थापना की। जहाँगीर ने गुरु अर्जुन देव पर लगाये गए जुर्माने की राशि को अब गुरु हरगोविंद से माँगा जो कि उन्होंने देने से इनकार कर दिया तो जहाँगीर ने उन्हें दो वर्ष तक ग्वालियर के किले में कैद रखा तो कुछ समय बाद इनसे अच्छे सम्बन्ध बन गए तो जहाँगीर ने इन्हें अपनी शाही सेना में रख लिया।

(vii) गुरु हरराय (Guru Har Rai) (1645-61)

इन्हें औरंगजेब ने आदिग्रन्थ पर स्पष्टीकरण देने हेतु दिल्ली आमंत्रित किया, परन्तु ये स्वयं दरबार में नहीं गए और अपने पुत्र रामराय को भेज दिया।

(viii) गुरु हरकिशन (Guru Har Krishna) (1661-64)

इन्होंने सिखों को हिन्दू कहा गुरु के रूप में इनका कार्यकाल सबसे कम रहा। चेचक के कारण इनकी मृत्यु 1664 में हो गयी। इन्होंने अपना उत्तराधिकारी बकाली दे बाबा को चुना था।

(ix) गुरु तेगबहादुर (Guru Tegh Bahadur) (1664-75)

बकाला दे बाबा ही गुरु तेगबहादुर के नाम से अगले गुरु बने। ये सिखों द्वारा निर्वाचित प्रथम व एकमात्र गुरु थे। ये मुगलों के साथ असम अभियान पर गए और वहाँ अहोमो व मुगल सेना के मध्य समझौता कराया।

(x) गुरु गोविन्द सिंह (Guru Gobind Singh) (1675-1708)

गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म पटना में हुआ था।

मखोवाल/आनंदपुर में ये गुरु बने और इसी जगह को इन्होंने अपना कार्य केंद्र बनाया। इन्हें सच्चा पादशाह की उपाधि दी गयी। इन्हें ब्रज, फारसी और गुरुमुखी भाषाओं का ज्ञान था।

21. मध्यकालीन भारत में भक्ति व सूफी आन्दोलन (Bhakti and Sufi Movements in Medieval India)

मध्यकालीन भारत में मुसलमानों में सूफी सम्प्रदाय की प्रगति और हिन्दुओं में भक्ति मार्ग पर बल अथवा आंदोलन की प्रगति थी।

सूफी आंदोलन

सूफी आंदोलन इस्लाम के रहस्यवादी तथा समन्वयवादी दर्शन की अभिव्यक्ति है। इसमें इस्लाम के बाह्य स्वरूप अथवा क्रिया–कलापों पर बल नहीं दिया जाता, अपितु आंतरिक प्रेरणा, सदाचार, मानवता, ईश्वर के प्रति प्रेम आदि पर बल दिया जाता है। वे संगीत व उपदेशों के जरिए आध्यात्मिकता का प्रचार करते थे। इन्होंने पिरी मुरीदी परम्परा का आरम्भ किया।

- सूफियों का मठ खानकाह कहलाता है, संघ को वस्ल एवं उनकी कब्र को दरगाह कहते हैं।
- अबु फजल की रचना अकबरनामा में **14** सूफी सिलसिलों का वर्णन है, जिसमें से **4** सिलसिले भारत में काफी लोकप्रिय हुए।

सूफी सिलसिले (Sufi Orders)

1 चिश्ती सिलसिला	2 सुहरावर्दी सिलसिला
3 कादिरिया सिलसिला	4 नक्शवंदी सिलसिला

भक्ति आन्दोलन (Bhakti Movement)

हिन्दू धर्म के अंतर्गत उत्पन्न भक्ति आंदोलन मध्य युग के धार्मिक जीवन की एक महान विशेषता थी। भक्ति आंदोलन के प्रवर्तकों ने जाति प्रथा का विरोध किया, मूर्ति पूजा को आवश्यक नहीं बताया और एकेश्वरवाद का समर्थन किया।

- भक्ति आंदोलन का विकास 7वीं और 12वीं शताब्दियों के बीच दक्षिण भारत में हुआ। शैव नयनारों और वैष्णव अलवारों ने मुक्ति के लिए ईश्वर की वैयक्तिक भक्ति पर जोर दिया। इस आंदोलन के प्रमुख प्रचारक शंकराचार्य माने जाते हैं।
- यह हिन्दुओं का सुधारवादी आंदोलन था।

22. मुगल वंश (Mughal Dynasty)

I. बाबर (1526–1530) [Babur (1526-1530)]

मुगल दो महान शासक वंशों के वंशज थे। माता की ओर से वे मंगोल शासक चंगेज खान, जो चीन व मध्य एशिया के कुछ भागों पर राज करता था, के उत्तराधिकारी थे। पिता की ओर से वे ईरान, इराक व वर्तमान तुर्की के शासक तैमूर के वंशज थे।

- मुगल वंश के संस्थापक जहीरुद्दीन मुहम्मद, बाबर (शासनकाल 1526–1530) का जन्म 24 फरवरी, 1483 ई. को हुआ। वह तैमूर का वंशज और **चुगताई तुर्क** था।
- उसकी माता प्रसिद्ध मंगोल **चंगेज खाँ** की **वंशज** थी।
- उसके पिता उमर शेख मिर्जा फरगाना के एक छोटे राज्य के शासक थे।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के बाद 1514 ई. में फरगाना की गद्दी पर बैठा।
- 1507 ई. में बाबर ने **बादशाह की उपाधि** धारण की, जिसे अब तक किसी तैमूर शासक ने धारण नहीं किया था।
- बाबर का भारत के विरुद्ध किया गया प्रथम अभियान 1519 ई. में था। इस अभियान में बाबर ने बाजौर और भेरा के किले पर अधिकार कर लिया। बाबर ने भेरा के युद्ध में पहली बार तोपखाने का प्रयोग किया था।
- श्यामल दास की कृति **'वीर विनोद'** में खानवा युद्ध का वर्णन किया गया है।
- भारत में बाबर ने सड़कों को मापने के लिए **'गज-ए-बाबरी'** का प्रयोग प्रारम्भ किया।
- आगरा से 40 किमी. दूर बाबर व राणा सांगा की सेनाओं में **खानवा** का **युद्ध** (**16 मार्च, 1527**) हुआ। राणा सांगा की पराजय हुई और उसे उसके ही सामंतों ने जहर देकर मार डाला। बाबर ने इसी युद्ध में **'जेहाद'** का नारा दिया। युद्ध में विजयी होकर उसने **'गाजी' की उपाधि** भी धारण की।

II. हुमायूँ (1530–1555) [Humayun (1530-1555)]

बाबर के चार पुत्र थे—हुमायूँ, कामरान, हिन्दाल और अस्करी बाबर ने अपने जीवित रहते ही अपने साम्राज्य का विभाजन अपने पुत्रों के बीच कर दिया था, परन्तु बाबर की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार की लड़ाई में हुमायूँ अपने तीनों भाइयों को हराकर बादशाह बना।

- हुमायूँ का **जन्म** 6 मार्च, 1508 ई. में **काबुल** में हुआ था।
- हुमायूँ की माँ **'महिम बेगम'** शिया मत में विश्वास रखती थी।
- बाबर की मृत्यु के बाद नसिरुद्दीन हुमायूँ 29 दिसम्बर, 1530 ई. को राजधानी **आगरा** में 23 वर्ष की अवस्था में **मुगल सिंहासन पर बैठा**।
- 1 जनवरी, 1556 ई. को हुमायूँ की **दीन पनाह भवन** में स्थित पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण मृत्यु हो गयी।

III. शेरशाह और सूर साम्राज्य (Sher Shah and Sur Kingdom)

- सूर साम्राज्य का संस्थापक अफगानवंशीय शेरशाह सूरी था। उसका जन्म 1472 ई. में बजवाड़ा (होशियारपुर) में हुआ था। उसके बचपन का नाम फरीद था।
- गद्दी पर बैठने के समय उसका साम्राज्य पश्चिम में कन्नौज से लेकर पूर्व में असम की पहाड़ियों एवं चटगाँव तक तथा उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण की झारखंड पहाड़ियों तथा बंगाल की खाड़ी तक फैला था।
- वह 1522 ई. में दक्षिण बिहार के सूबेदार बहार खाँ लोहानी के यहाँ नियुक्त हुआ।
- यहीं पर शेरशाह द्वारा एक शेर को मार डालने के कारण बहार खाँ लोहानी ने उसे **'शेर खाँ'** की **उपाधि** दी।
- वह 1528 ई. में **चन्देरी** के युद्ध में **बाबर की सेना** में शामिल हुआ।
- 1529 ई. में घाघरा के युद्ध में वह महमूद लोदी के साथ हो लिया, किन्तु लड़ने के बजाय बाबर को निष्क्रिय रहने का सन्देश भिजवाया।
- 1539 में चौसा के युद्ध में मुगल सम्राट हुमायूँ का शेरशाह सूरी से आमना-सामना हुआ, जिसमें शेरशाह सूरी विजयी हुआ।
- उसने शाही उपाधि 'शेरशाह सुल्तान-ए-आदिल' धारण की।
- 1540 में बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूँ को पुनः हार का सामना करना पड़ा। इस युद्ध में विजय प्राप्त करके शेरशाह का दिल्ली व आगरा पर अधिकार हो गया। 68 वर्ष की आयु में 1540 ई. में वह दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- 1544 ई. में मालदेव को हराकर शेरशाह ने अजमेर, जोधपुर एवं मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।
- उसने 1540 ई. में उत्तर भारत में **'सूर वंश'** अथवा **'द्वितीय अफगान साम्राज्य'** की स्थापना की।
- 1541 ई. में शेरशाह का **गक्खरों जाति** के लोगों से युद्ध हुआ।
- शेरशाह का **अन्तिम अभियान** 1545 ई. में **कालिंजर का अभियान** था। कहा जाता है कि शेरशाह ने **कीरत सिंह** (कालिंजर का शासक) की एक नाचने-गाने वाली दासी को हथियाने के लिए कालिंजर पर आक्रमण किया था।

  कालिंजर अभियान के दौरान शेरशाह ने किले की दीवार को गोला-बारूद से उड़ा देने की आज्ञा दी। उसी दौरान किले की दीवार से टकराकर एक गोला उसके पास रखे बारूद के ढेर पर जा गिरा और उसमें आग लग जाने से **22 मई, 1545** ई. को **शेरशाह की मृत्यु** हो गई।

IV. अकबर (1556–1605) [Akbar (1556-1605)]

- अकबर (1556–1605 ई.) का जन्म **अमरकोट** के रेगिस्तानी किले में 23 नवम्बर, 1542 को हुआ था।
- 13 वर्ष की आयु में 14 फरवरी, 1556 ई. को कलानौर से ही ईंटों का सिंहासन बनाकर उसका राज्याभिषेक किया गया। **बैरम खाँ** को उसका **संरक्षक** बनाया गया।
- **पानीपत की दूसरी लड़ाई** (5 नवम्बर, 1556 ई. को) अफगान सेनापति हेमू और बैरम खाँ के नेतृत्व में मुगल सेना में हुई।
- मई, 1562 में अकबर ने **'हरम-दल'** से अपने को पूर्णतः मुक्त कर लिया।
- राणा प्रताप की सेना व मानसिंह तथा आसफ खाँ के नेतृत्व में मुगल सेना के मध्य **हल्दी घाटी** (1576 ई. में) का युद्ध हुआ।
- गुजरात के विद्रोहों को शान्त करने गये **अब्दुर्रहीम** को 1584 ई. में **खान–खाना की उपाधि** दी गयी।
- वर्ष 1567 में जब अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया तो वहाँ का शासक उदय सिंह था।
- अकबर ने सुलह–ए–कुल (सभी के साथ शान्ति) की नीति अपनायी थी। अकबर के धार्मिक विचारों पर सूफी अब्दुल लतीफ का प्रभाव था। अकबर ने राजपूतों के साथ दमन और समझौते की नीति अपनायी।

V. जहाँगीर Jahanghir (1605–1627 ई.)

- जहाँगीर का जन्म 30 अगस्त, **1569** में हुआ, उसके **बचपन का नाम सलीम** था।
- **1605** ई. में **वह नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाही** गाजी की उपाधि धारण कर गद्दी पर बैठा।
- जहाँगीर का मुख्य शिक्षक **अब्दुर्रहीम खानखाना** था।
- जहाँगीर के शासनकाल में **मुगल चित्रकला** अपने **चरमोत्कर्ष** पर पहुँची। जहाँगीर के दरबार में प्रमुख चित्रकार–**आगा रजा, अबुल हसन, मुहम्मद नासिर, मुहम्मद मुराद, उस्ताद मन्सूर, विशनदास, मनोहर, गोवर्धन** तथा फारुख बेग थे। मन्सूर पशु, पक्षी प्रकृति चित्रण का विशेषज्ञ था।
- जहाँगीर ने अपनी प्रेमिका अनारकली की याद में लाहौर में मकबरा का निर्माण करवाया था और उस पर प्रेमपूर्ण लेख लिखवाया था।
- खुसरो और जहाँगीर की सेना के बीच युद्ध जालंधर के निकट भैरावल नामक मैदान में हुआ।
- 28 अक्टूबर, 1627 ई. को जहाँगीर की मृत्यु **भीमवार** नामक **स्थान** पर हुई।
- **जहाँगीर के शव** को **शाहदरा** (लाहौर) में रावी नदी के किनारे दफनाया गया।

VI. शाहजहाँ (Shahjahan) (1627–1658 ई.)

- खुर्रम (शाहजहाँ) का जन्म 1592 ई. में **लाहौर** में हुआ था। यह 1627 ई. में गद्दी पर बैठा।
- 1612 ई. में खुर्रम का विवाह आसफ खाँ की पुत्री **अर्जुमन्द बानो बेगम** (मुमताजमहल) से हुआ, जिसे उसने **मलिका–ए–जमानी** की उपाधि प्रदान की।

- **मुमताज महल की याद** में **शाहजहाँ** ने **ताजमहल** का निर्माण आगरा में करवाया।
- शाहजहाँ ने **सिजदा** एवं **पायबोस** की प्रथा **समाप्त** कर दी और चहार-**तस्लीम** प्रथा की **शुरुआत** की।
- इसने अपने शासन के 11वें वर्ष झरोखा दर्शन एवं 12वें वर्ष तुलादान प्रथा को समाप्त करवा दिया।
- 1638 ई. में शाहजहाँ ने **अपनी राजधानी** को **आगरा से दिल्ली** लाने के लिए यमुना नदी के दाहिने तट पर **शाहजहानाबाद की नींव** डाली।
- **शाहजहाँ** के **पुत्र दाराशिकोह, शुजा, मुराद** और **औरंगजेब** थे।
- 1658 में **औरंगजेब** ने राज्य पर अधिकार कर लिया और **शाहजहाँ** को **आगरा के किले में कैद** करवा दिया।
- 1666 ई. में शाहजहाँ की मृत्यु हो गई।

VII. औरंगजेब (Aurangzeb) (1658–1707 ई.)

- औरंगजेब का जन्म **3 नवम्बर, 1618 को गुजरात** के **दाहेद नामक** स्थान पर हुआ था। औरंगजेब को **जिन्दा पीर** कहा जाता है। यह 1658 ई. में गद्दी पर बैठा इसका **दो बार राज्याभिषेक** हुआ।
- झरोखा दर्शन नोरोज के स्थान पर चहार तस्लीम नामक नई प्रथा चलाई थी।
- इलाही संवत् के स्थान पर हिजरी संवत् लागू किया गया।
- औरंगजेब स्वयं एक **कुशल वीणा वादक** था, किंतु उसने सार्वजनिक नृत्य संगीत को **प्रतिबंधित** कर दिया था।
- 1690 ई. में औरंगजेब के दरबार में **कुस्तुनतुनिया** का राजदूत आया था।
- 1702 ई. में हिन्दुओं को **अँगूठियों** पर **हिन्दू देवी-देवताओं** के नाम खुदवाने की मनाही की गई।
- अहमदाबाद में साबरमती के तट पर 1703 ई. में मुर्दों की **अन्त्येष्टि पर प्रतिबन्ध** लगाया गया।
- औरंगजेब के शासनकाल में मुगल सेना में सर्वाधिक **हिन्दू सेनापति** थे।
- औरंगजेब के समय में हिन्दू मनसबदारों की संख्या **लगभग 337** थी।
- औरंगजेब ने प्रजा के चरित्रों की निगरानी करने हेतु **'मुहतसिब'** को **नियुक्त** किया था।
- औरंगजेब ने **बीबी का मकबरा** का **निर्माण 1679** ई. में औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में करवाया।
- **औरंगजेब** ने दिल्ली में सिखों के नौवें **गुरु तेगबहादुर** की हत्या करवा दी थी।
- औरंगजेब की **मृत्यु** 3 मार्च, **1707** ई. को **अहमदनगर** में हुई।

23. मराठा साम्राज्य (Maratha Kingdom)

I. शिवाजी (Shivaji)

- मराठा साम्राज्य के संस्थापक **शिवाजी** थे। उनका जन्म 1627 ई. में **शिवनेर दुर्ग** (जुन्नार के समीप) में हुआ था।
- शिवाजी के पिता का नाम **शाहजी भोंसले** एवं माता का नाम **जीजाबाई** था। उनके गुरु **कोंडदेव** थे। शिवाजी पर गुरु समर्थ रामदास का काफी प्रभाव पड़ा था।
- सबसे पहले शिवाजी ने सिंहगढ़ के किलों पर अधिकार किया था (1643)। शिवाजी सन् 1666 में आगरा आये थे उन्हें जयपुर भवन में रखा गया था।
- 1646 ई. में शिवाजी ने पूना के पास स्थित **तोरण के किले** और 1648 ई. में पुरन्दर के किले को जीता।
- 1656 ई. में शिवाजी ने **रायगढ़** को अपनी **राजधानी** बनाया तथा **सूरत** को 1664 ई. में **अधीन** किया।
- 1656 ई. में मराठा सरदार चन्द्रराव मोर से जावली का किला जीता।
- बीजापुर शासक ने अपने सेनापति अफजल खाँ को शिवाजी को कैद करने या मार डालने के लिये भेजा, किन्तु, शिवाजी ने चतुराई से उसकी हत्या कर दी और बीजापुर के कई अन्य क्षेत्रों को भी जीत लिया जैसे—**'पन्हाला का किला'**, **'कोल्हापुर'** और **'उत्तरी कोंकण'**।
- शिवाजी ने शाइस्ता खाँ के शिविर पर **छापामार** हमला किया तथा **शाइस्ता** खाँ को घायल कर दिया।
- शिवाजी ने छत्रपति की उपाधि ग्रहण की। अप्रैल, 1680 में **शिवाजी की मृत्यु** हो गई।
- शिवाजी के अधीन मराठा प्रशासन शिवाजी के प्रशासन में छत्रपति या राजा सर्वोच्च होता था और अष्ट प्रधान नामक आठ मन्त्रियों की सहायता से प्रशासन चलाता था।

II. शिवाजी के उत्तराधिकारी (Shivaji's Successor)

(i) शंभाजी (Sambhaji) (1680-89 ई.)

- शंभाजी ने शिवाजी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था, क्योंकि शिवाजी ने अपने छोटे पुत्र राजाराम को कोंकण का क्षेत्र प्रदान कर दिया था।
- शिवाजी की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी सोयराबाई ने राजाराम का राज्याभिषेक कर दिया, किन्तु मराठा सेनापति हमीर मोहिते की सहायता से शंभाजी शासक बन गया।
- शंभाजी ने मुगल सूबेदार दिलेर खाँ से समझौता कर लिया। जिसमें शंभाजी को 7 हजार का मनसब देना निश्चित हुआ।

(ii) राजाराम (Rajaram) (1689-1700 ई.)

- शंभाजी की मृत्यु के बाद उसका सौतेला भाई राजाराम शासक बना। राजाराम ने स्वयं को शाहू का प्रतिनिधि घोषित किया था।
- राजाराम ने एक नए पद **'प्रतिनिधि'** का गठन किया और पहला प्रतिनिधि प्रह्लाद निराजी को बनाया। शाहू ने जिन्जी के स्थान पर सतारा को अपनी राजधानी बनाया था।
- राजाराम के समय ही मराठों का स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ।

(iii) शिवाजी द्वितीय तथा ताराबाई (1700-1707 ई.) (Shivaji II and Tarabai)

- राजाराम की पत्नी ताराबाई ने अपने पुत्र **शिवाजी द्वितीय** की संरक्षिका बनकर मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा।

- मराठों ने पन्हाला, सिंहगढ़ आदि किलों पर पुनः कब्जा कर लिया तथा सूरत व भड़ौंच में लूट की।
- 1700 से 1707 का दौर **'मराठा स्वतन्त्रता संघर्ष'** के नाम से जाना जाता है।
- खफी खाँ जैसे इतिहासकार ने भी ताराबाई की अत्यधिक प्रशंसा की है।

(iv) शाहू (Shahu) (1707-1749 ई.)

- औरंगजेब की पुत्री जीनत-उल-निशा ने शाहू को पाला था। उस समय वह मुगल कारावास में था।
- मराठों की परिवर्तित राजनीतिक स्थिति से लाभ उठाने के लिए मुगलों ने **शाहू** को **कैद** से रिहा कर दिया।
- उत्तराधिकार के संघर्ष में पहले ताराबाई का पलड़ा भारी था, किन्तु बालाजी विश्वनाथ के जुड़ने से स्थिति बदल गई और बालाजी विश्वनाथ ने बड़ी चतुराई से धनाजी जादव को अपनी ओर मिला लिया।

24. उत्तर मुगल काल (Post Mughal Period)

I. बहादुर शाह प्रथम (Bahadur Shah) (1707-1712 ई.)

- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके तीनों पुत्र-**मुअज्जम, मुहम्मद आजम** तथा **मुहम्मद कामबख्श** में उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ।
- उत्तराधिकार के युद्ध में **बहादुर शाह** (मुअज्जम) विजयी हुआ।
- मुअज्जम औरंगजेब की मृत्यु के समय काबुल, आजम गुजरात और कामबख्श बीजापुर का सूबेदार था।
- जून, 1707 ई. में **जाजऊ** (आगरा व धौलपुर के मध्य) नामक स्थान पर हुए उत्तराधिकार के संघर्ष में **मुअज्जम** की सेना ने **आजम** को पराजित किया।
- मुअज्जम **बहादुर शाह प्रथम** की उपाधि धारण करके दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ।
- बहादुरशाह ने अपने शासनकाल में राजपूतों व मराठों के प्रति **सहनशीलता** व **शांति की नीति** अपनायी।

II. जहाँदार शाह (Jahandar Shah I) (1712-1713)

- 1712 ई. में जहाँदार शाह शासक बना। जहाँदार शाह को ईरानी दल के नेता **जुल्फिकार खाँ** का सहयोग प्राप्त था।
- जहाँदार शाह ने अपने लगभग एक वर्ष के कार्यकाल (1712-1713) में हिन्दू और मराठा राजाओं से **मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध** बनाए रखा। उसने **आमेर के राजा जयसिंह को 'मिर्जा राजा सवाई जयसिंह'** की पदवी दी तथा मालवा का सूबेदार बनाया।
- जहाँदार शाह ने मराठों से सम्बन्ध बनाए रखने के लिए समकालिक शाहू जी को कुछ शर्तों पर दक्कन के **'चौथ'** व **'सरदेशमुखी'** वसूलने के अधिकार दिये। जहाँदार शाह के समय **जजिया कर** पर रोक लगा दी गई।
- जहाँदार शाह ने वित्तीय व्यवस्था में सुधार के लिये राजस्व वसूली का कार्य ठेके पर देने की नई व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया, जिसे **'इजारा व्यवस्था'** कहते हैं।
- अत्यधिक भ्रष्ट एवं लोभी आचरण वाले बादशाह **जहाँदारशाह** पर उसकी **प्रेमिका लाल कुंवर** का विशेष प्रभाव था।
- जहाँदार शाह को **'लंपट मूर्ख'** भी कहा जाता था।

III. फर्रुखसियर (Farrukhsiyar) (1713-1719 ई.)

- फर्रुखसियर के शासनकाल में सैयद बन्धु अब्दुल्ला खाँ **'वजीर'** तथा हुसैन अली **'मीरबख्शी'** के पद पर नियुक्त हुए।
- इसके समय पंजाब में बन्दा बैरागी का वध करवा दिया गया। इसी के काल में सिख नेता **बन्दा बहादुर** को **फाँसी** दी गई।
- जानशोरमन के नेतृत्व में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक दल 1717 ई. में भारत आया। फर्रुखसियर ने 1717 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लिए व्यापारिक लाभ का **शाही फरमान** जारी किया गया जिसे कम्पनी का मेग्नाकार्टा कहा गया।
- सैयद बन्धुओं के बढ़ते हस्तक्षेप से भयभीत होकर फर्रुखसियर इनके खिलाफ **षड्यन्त्र रचने** लगा, लेकिन समय से पूर्व इन षड्यन्त्रों की जानकारी सैयद बन्धुओं को लगने से उन्होंने मराठा पेशवा बालाजी **विश्वनाथ,** मारवाड़ के अजीत सिंह के सहयोग से जून, 1719 में फर्रुखसियर को सिंहासन से अपदस्थ कर हत्या करवा दी।
- फर्रुखसियर को **'घृणित कायर'** भी कहा जाता था।

IV. मुहम्मद शाह (Muhammad Shah) (1719-1748 ई.)

- सैयद बन्धुओं ने 1719 ई. में रोशन अख्तर को मुहम्मदशाह के नाम से गद्दी पर बैठाया। मुहम्मदशाह के सिंहासन पर बैठते ही **सैयद भाइयों** के **विरुद्ध षड्यन्त्र** का **सूत्रपात** हो गया।
- 1722 ई. में **तूरानी गुट** के अमीर निजामुल्मुल्क ने सैयद बन्धुओं की हत्या करा दी तथा **स्वयं वजीर** बन गया।
- 1724 ई. में **निजामुल्मुल्क** ने दक्षिण में स्वतन्त्र **हैदराबाद** राज्य की स्थापना की।
- मुहम्मदशाह ने उसकी स्वतन्त्रता को मान्यता देते हुए उसे **'आसफजाह'** की **उपाधि** से अलंकृत किया।
- मुहम्मदशाह के शासनकाल में **बंगाल** (**मुर्शीद कुली खाँ**), **अवध** (**सआदत खाँ**), **हैदराबाद** (**निजामुल्मुल्क**), **भरतपुर-मथुरा** (**महाराजा बदल सिंह**), कटेहर (रुहेलों) और **फर्रुखाबाद** (**बंगश नवाबों**) ने अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की थी।
- **मुहम्मदशाह** ने **1720** ई. में **जजिया** कर को सदैव के लिए **समाप्त** कर दिया था।

V. अहमद शाह बहादुर (1748-1754 ई.) (Ahmed Shah Bahadur)

- मुहम्मदशाह के पश्चात् 1748 ई. में उसका पुत्र अहमदशाह राज. सिंहासन पर आसीन हुआ।
- अहमदशाह ने अवध के सूबेदार **सफदरजंग** को अपना वजीर नियुक्त किया तथा हिजड़ों का सरदार जावेद खाँ को **'नवाब बहादुर'** की उपाधि प्रदान की।
- अहमदशाह के समय फारस के दूसरे अफगान शासक **अहमदशाह** अब्दाली ने भारत पर कुल **पाँच** बार **आक्रमण** किया।

VI. आलमगीर द्वितीय (Alamgir II) (1754-58 ई.)

- आलमगीर द्वितीय अपने छोटे से कार्यकाल में अपने वजीर **'इमाद-उल-मुल्क'** की कठपुतली बना रहा तथा **प्लासी के युद्ध (1757 ई.)** के समय यही **दिल्ली का शासक** था।
- 1758 ई. को इमाद-उल-मुल्क ने आलमगीर द्वितीय की हत्या करवा दी तथा बहादुर शाह प्रथम को पौत्र **शाहजहाँ** तृतीय (1758-59 ई.) को सिंहासन पर बैठा दिया।

VII. शाहआलम द्वितीय (Shah Alam II) (1759-1806 ई.)

- आलमगीर के पुत्र अली गौहर ने बिहार में शाहआलम द्वितीय के नाम से स्वयं को **मुगल बादशाह** घोषित किया।
- शाहआलम द्वितीय ने 1764 ई. में हुए ऐतिहासिक महत्त्व के बक्सर युद्ध में **मीर कासिम** तथा अवध के नवाब **शुजाउद्दौला** के साथ मिलकर ईस्ट **इण्डिया कम्पनी** के विरुद्ध लड़ाई लड़ी।
- बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों से पराजित होने के बाद **शाहआलम द्वितीय** को **1765 ई. इलाहाबाद की सन्धि** के प्रावधानों के अनुरूप कई वर्ष तक अंग्रेजों का पेंशनभोगी बनकर रहना पड़ा।

VIII. अकबर द्वितीय (Akbar II) (1806-1837)

- अकबर द्वितीय के कार्यकाल तक **मुगल बादशाह** मात्र **लाल किले** तक **सिमेट** कर रह गया था।
- अकबर द्वितीय **अंग्रेजों के संरक्षण** से बनने वाला **प्रथम मुगल बादशाह** था।
- अकबर द्वितीय ने ही **राममोहन राय** को **'राजा'** की उपाधि दी।
- 1837 ई. में अकबर द्वितीय की मृत्यु के बाद **बहादुर शाह द्वितीय** (1837-1857) अन्तिम मुगल सम्राट हुआ।

IX. बहादुर शाह द्वितीय (Bahaudr Shah II) (1837-1857 ई.)

- बहादुर शाह द्वितीय, **'जफर'** के उपनाम से **शायरी लिखा** करता था, इसलिये इसे 'बहादुर शाह जफर' के नाम से भी जाना जाता है।
- 1857 के संग्राम में विद्रोहियों का साथ देने के कारण **रंगून निर्वासित कर** दिया गया, जहाँ 1862 ई. में **अन्तिम मुगल सम्राट** की मृत्यु हो गई।
- यह मुगल साम्राज्य का अन्तिम शासक था। इसकी मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य का **भारत में अन्त** हो गया।
- हिन्दुस्तानी गुट के मुसलमान थे।

X. उत्तरमुगलों के पतन के कारण (Post Mughal's Cause of Decline)

- वे अयोग्य एवं विलासी थे।
- दरबारी गुटबन्दी
- दूरदर्शिता का अभाव
- राजनैतिक स्थितियों को समझने में असफल
- बिगडी हुई अर्थव्यवस्था

25. यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों का भारत आगमन (Arrival of European Trading Companies in India)

I. पुर्तगाली (Portuguese)

- पुर्तगाली पहले यूरोपीय थे जो भारत पहुँचे।
- पहला पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा 1498 ई. भारत के कालीकट तट पहुँचा, तत्कालीन कालीकट के शासक जमोरिन ने भारत में उसका स्वागत किया था।
- वास्को-डि-गामा भारत से काली मिर्च लेकर जब यूरोप पहुँचा तो उसने यात्रा खर्च काटकर 60% मुनाफा कमाया था जो अन्य पुर्तगाली के लिए भारत आने के लिए प्रोत्साहन था।
- वास्को-डि-गामा के बाद दूसरा पुर्तगाली पेंड्रो अल्वारेज कैब्राल था, जो 1500 में भारत पहुँचा था। वास्को-डि-गामा दूसरी बार भारत 1502 ई. में आया था।

II. डच (Dutch)

- हॉलैण्ड के निवासियों वर्तमान में नीदरलैण्ड के निवासियों को डच कहा जाता था।
- सन् 1602 ई. में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई जिसे भारत और पूर्व के साथ व्यापार करने की अनुमति दी गई।
- डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जल्द ही भारत में मसाला व्यापार पर नियन्त्रण कर लिया।
- डचों ने भारत में सबसे पहले 1605 मसूलीपट्टनम कारखाने की स्थापना की।

III. अंग्रेज (British)

- भारत पहुँचने वाले यूरोपियों में अंग्रेज सर्वाधिक सफल रहे। भारत से जाने से पूर्व लगभग 200 वर्षों तक भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एवं सत्ता का केन्द्र बिन्दु रहे।
- भारत पहुँचने वाला प्रथम अंग्रेज जॉन मिडेनहाल था।
- पूर्व के साथ व्यापार करने के लिए सन् 1600 ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की गई और ब्रिटिश महारानी एलिजाबेथ ने कम्पनी को 15 वर्षों के लिए व्यापार का अधिकार-पत्र दिया।
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आरम्भिक उद्देश्य केवल व्यापार था।
- सन् 1608 में इंग्लैण्ड के सम्राट जेम्स प्रथम ने अपना दूत कैप्टन हॉकिंस को भारत के मुगल शासक जहाँगीर के दरबार में आगरा भेजा था।
- जहाँगीर ने प्रसन्न होकर हॉकिन्स को 400 का मनसब प्रदान किया था।

IV. फ्रांसीसी (French)

- फ्रांसीसी अन्य यूरोपीय कम्पनी के सापेक्ष देर से भारत पहुँचे।
- सन् 1664 ई. में फ्रांसीसी वित्त मंत्री कोलवर्ट ने लुई 14वें के समय फ्रेन्च ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की।
- भारत आने वाली कम्पनियों में फ्रेन्च पहली थी जिसमें फ्रेन्च सरकार का पैसा लगा था।
- भारत आने वाला पहला फ्रांसीसी फ्रेन्सिस कैरो था जिसने 1668 ई. में सूरत में पहले कारखाने की स्थापना की थी। दूसरा कारखाना मर्करा ने 1669 ई. में मसूलीपट्टनम में स्थापित किया था।

V. डेनिस (Danish)

- डेनमार्क के निवासियों को डेन कहा जाता था। डेन व्यापारिक उद्देश्यों को लेकर सन् 1616 में भारत आये, परन्तु वे बहुत दिनों तक भारतीय परिस्थितियों में स्थापित करने में असफल रहे।

VI. स्वीडिस (Swedish)

- स्वीडिस सबसे बाद में आने वाले यूरोपीय थे। ये 1731 ई. में भारत पहुँचे, परन्तु इस समय तक राजनैतिक परिस्थितियाँ पूर्णतः अंग्रेजों के नियन्त्रण में थीं, इस कारण उन्हें भारत से जाना पड़ा।

VII.1857 का विद्रोह (Revolt of 1857)– भारत में ब्रिटिश शासन काल के आरम्भिक समय से ही विद्रोह के बीज विद्यमान थे। 1857 की क्रान्ति से पूर्व भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध कई विद्रोह हुए, परन्तु उनमें से कोई इतना प्रबल नहीं था कि जिसे दबाने में अंग्रेज को बहुत कठिनाई हुई हो, क्योंकि ये विद्रोह निजी असन्तोष का परिणाम थे जिसके कारण वे अंग्रेजों की बड़ी शक्ति के सामने बहुत दिनों तक स्वयं को संघर्ष में बनाए रखने में असफल रहे, परन्तु 1857 का विद्रोह इतना वृहद् और प्रबल था कि इसे नियन्त्रित करने में उनके पसीने छूट गये।

26. ब्रिटिश भारत में भू-राजस्व व्यवस्था (Land Revenue System in British India)

अंग्रेजों के भारत में आने का आरम्भिक उद्देश्य व्यापार एवं वाणिज्य के माध्यम से अधिक-से-अधिक धन कमाना था, परन्तु भारत की तत्कालीन आन्तरिक राजनैतिक परिस्थितियों को बिगड़ता देख अंग्रेजों ने भारत में राजनैतिक सत्ता स्थापित करने का प्रयास शुरू कर दिया और वे इस कार्य में सफल रहे। बक्सर के युद्ध 1764 को जीतने के बाद बंगाल, बिहार और उड़ीसा उनके अधीन आ गये। इसके साथ ही सम्पूर्ण पर अधिकार केवल कुछ समय की बात रह गई थी और यह मिशन भी उन्होंने, मैसूर, कर्नाटक मराठे और सिखों को पराजित कर लिया। इस प्रकार अंग्रेजों ने अधिक-से-अधिक भू-राजस्व प्राप्त करने के लिए परिस्थितियों के अनुकूल अलग–अलग क्षेत्रों, अलग-अलग भू-राजस्व व्यवस्थाएँ लागू कीं।

I. स्थायी बन्दोबस्त (Permanent Settlement)

- स्थायी बन्दोबस्त व्यवस्था लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 में बंगाल, बिहार उड़ीसा और उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्सों में लागू की जो लगभग 19% भाग था।
- स्थायी बन्दोबस्त व्यवस्था में भू-राजस्व जमींदारों से बसूला जाता था। इस व्यवस्था में जमींदार को भू–स्वामी स्वीकार किया गया था।
- स्थायी बन्दोबस्त व्यवस्था में जमींदार अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले क्षेत्रों से भू–राजस्व एकत्र कर 1/10 भाग अपने पास रखता या शेष कम्पनी के पास जमा कराता था।

II. रैयतवाड़ी बन्दोबस्त (Ryotwari Settlement)

- रैयतवाड़ी बन्दोबस्त व्यवस्था का विस्तार लगभग 51% प्रतिशत भू–भाग पर था। रैयतवाड़ी बन्दोबस्त व्यवस्था सबसे पहले 1792 में कैप्टन रीड द्वारा वारामहल जिले में लागू की गई थी।
- जब टॉमस मुनरो को मद्रास का गवर्नर नियुक्त किया गया तब उसने 1820 में दक्षिण भारत में रैयतवाड़ी बन्दोबस्त व्यवस्था को लागू किया था।
- रैयतवाड़ी बन्दोबस्त व्यवस्था में सीधे किसानों से भू–राजस्व वसूला जाता था, जो लगभग 33% से 55% के बीच होता था।

III. महालवाड़ी बन्दोबस्त (Mahalwari Settlement)

- महालवाड़ी बन्दोबस्त होल्ट मैकेन्जी द्वारा 1822 में लागू की गई थी। मार्टिन वर्ड और जेम्स टामसन ने इसका विस्तार किया था। यह लगभग 30% भाग पर लागू हुई।
- महालवाड़ी बन्दोबस्त में गाँव (महाल) को राजस्व इकाई मानकर भू–राजस्व वसूला जाता था, यह एक संयुक्त कर निर्धारण व्यवस्था थी।

IV. सन् 1757 से 1858 तक जन आन्दोलन (People's Movement from 1757 to 1858)

- 1857 के विद्रोह से पूर्व भी अंग्रेजों के विरुद्ध समय–समय कई आन्दोलन हुए जिनमें राजनैतिक, धार्मिक और जनजातीय आन्दोलन थे, परन्तु ये सभी आन्दोलन इतने प्रबल और आमजन की सहभागि. ता के नहीं बन सके जिसका कारण अंग्रेज आन्दोलनों को आसानी से या हल्का बल प्रयोग करने के बाद कुचलने में सफल रहे।

क्र.सं.	विद्रोह का नाम	सन्/तिथि	नेतृत्वकर्ता/नेता	स्थान	कारण
1.	फकीर विद्रोह	1876 -77	भजनूशाह, चिराग अली भवानी पाठक	बंगाल	अंग्रेजों द्वारा किसानों और जमींदारों से धन वसूली
2.	संन्यासी विद्रोह	1770 - 80	संन्यासी साधु	बंगाल	संन्यासी साधुओं की तीर्थयात्रा पर प्रतिबन्ध आनंद मठ में संन्यासी विद्रोह का उल्लेख मिलता है
3.	पागलपंथी विद्रोह	1813 -33	टीपू	बंगाल,पूर्वोत्तर भारत	काश्तकारों का जमींदारों के विरुद्ध विद्रोह
4.	वहावी आन्दोलन (मुस्लिम धर्म सुधार आन्दोलन)	1820 -70	अब्दुल बहाव, सैयद अहमद बरेलवी	पेशावर, पटना	सिखों को पंजाब में तथा अंग्रेजों का बंगाल से बरेलवी अपदस्थ करने के लिए मुस्लिमों को सैनिक रूप में प्रशिक्षित किया, इनका उद्देश्य भारत में मुस्लिम सत्ता स्थापित करना था।
5.	कूका आन्दोलन (सिख धर्म सुधार आन्दोलन)	1860 -70	भगत जवाहरमल, बालक सिंह, रामा सिंह कूका (रंगून निर्वासित कर दिया गया था)	पश्चिमी पंजाब	अंग्रेजों को सत्ता से अपदस्थ कर सिख प्रभुसत्ता की स्थापना।
6.	रामोसी विद्रोह	1822	उमा जी	महाराष्ट्र (सतारा)	बढ़े हुए कर के विरोध में

क्र.सं.	विद्रोह का नाम	सन्/तिथि	नेतृत्वकर्ता/नेता	स्थान	कारण
7.	गडकरी विद्रोह	1844	विदर्भ क्षेत्र के ब्राह्मण	नागपुर, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)	बढ़े हुए कर के विरोध में
8.	वेलुटम्पी	1808 - 09	वेलुटंपी	त्रावणकोर (केरल)	त्रावण को जबरन सहायक सन्धि स्वीकार कराने के विरोध में
9.	किट्टर चिनम्म विद्रोह	1824 -1829	चेनम्मा	किट्टूर कर्नाटक	अंग्रेजों द्वारा उत्तराधिकारी को मान्यता न देना
10.	बुन्देला विद्रोह	1846 - 47	नरसिम्हा रेड्डी	आन्ध्र प्रदेश	अंग्रेजों द्वारा पेंशन न देने के विरोध में
11.	पाइक विद्रोह (सैनिक विद्रोह)	1904	खुर्दा का राजा जगबन्धु	उड़ीसा	अंग्रेजों द्वारा खुर्दा के लोगों को सेना से निकाले जाने के विरोध में
12.	पालीगर विद्रोह	—	पालीगर का जमींदार	तमिलनाडु	जमींदारी बेदखली के विरोध में

27. भारत में जनजातीय आन्दोलन (Tribal Movement in India)

- आदिवासियों की यह प्रवृत्ति होती है कि वे शेष समाज से प्राय: दूरी बनाकर रखते हैं, परन्तु ब्रिटिश उपनिवेश के घेरे में आने के बाद वे अपनी जमीन व पुस्तैनी कारोबार खो चुके थे, जिसके कारण वे कृषि कार्य छोड़कर कारखानों, बागानों और खानों में कार्य करने में मजबूर हुए। इस प्रकार आदिवासी अंग्रेजों की नीतियों से क्षुब्ध होकर उनके विरुद्ध उठ खड़े हुए आन्दोलनों का विवरण इस प्रकार है –

क्र. सं.	विद्रोह	सन्	नेतृत्वकर्ता	स्थान	कारण
1.	पहाड़िया विद्रोह	1778	दामिनीकोल	राजमहल (झारखण्ड)	अंग्रेजों का क्षेत्र में हस्तक्षेप
2.	खोंड विद्रोह	1837	चक्र विसोई	तमिलनाडु, बंगाल,	अंग्रेजों द्वारा नये कर लगाना
3.	कोल विद्रोह	1832	–	झारखण्ड	अंग्रेजों द्वारा उनकी जमीन मुसलमान व्यापारियों को देना
4.	संथाल विद्रोह	1855-56	सिधू, कान्हू	झारखण्ड	पुलिस और जमींदारों के जुल्म के विरोध में
5.	भील विद्रोह	1913	गोविन्द गुरु	राजस्थान	बँधुआ मजदूरी के विरुद्ध
6.	कोया विद्रोह	1879	होम्मा सोरा	आन्ध्र प्रदेश	जंगल में अधिकार समाप्त करने के विरोध में
7.	मुन्डा विद्रोह	1893	विरसा मुन्डा (उल्गुलान)	झारखण्ड	भूस्वामित्व व्यवस्था परिवर्तन के विरोध में (इस आन्दोलन के समय विरसा को भगवान का दूत घोषित किया था
8.	चेचू	1920	मोतीलाल	आन्ध्र प्रदेश	अंग्रेज नीतियों के विरोध में
9.	रम्पा विद्रोह	1922	अल्लूरी सीताराम राजू (स्वयं को ज्योतिष चिकित्सा शारीरिक उपचार का विशेषज्ञ बताया)	आन्ध्र प्रदेश	आदिवासी कल्याण के लिए
10.	खासी	1833	राजावीर सिंह	मेघालय	गारो खासी पहाड़ियों पर अंग्रेजों के कब्जे के विरुद्ध
11.	अहोम	1828	गोमधर कुँवर	उड़ीसा	अंग्रेजों को क्षेत्र से बाहर निकालने के लिए
12.	नागा	1831	जदोनाँग, गोडेन्यू	नागालैण्ड	समाज में बढ़ते ढोंग को खत्म करने के लिए

28. ब्रिटिश भारत में शिक्षा का विकास (Development of Education in British India)

- अपने आरम्भिक दिनों में अंग्रेज भारत में शैक्षिक प्रसार के कार्यों से बचते रहे और वे अधिक से अधिक क्षेत्रीय विस्तार करना चाहते थे।
- अंग्रेजों के समय आरम्भिक दिनों में ईसाई मिशनरियों व व्यक्तियों ने व्यक्तिगत प्रयास किये थे।
- वारेन हेस्टिंग्स ने 1781 में कलकत्ता मदरसे की स्थापना की थी।
- 1778 ई. में विलियम जोन्श को एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की थी।
- 1791 ई. में जोनाथन डंकन ने बनारस संस्कृत कॉलेज की स्थापना की थी।
- 1800 ई. में लार्ड वेलेजली ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की थी।

- जोनाथन डंकन और विलियम जोन्स ने लिकर भगवतगीता का अंग्रेजी अनुवाद करवाया। 1820 ई. में डेविड हेयर ने विशेष कॉलेज कलकत्ता की स्थापना की थी।
- राजा राममोहन राय प्रथम भारतीय थे जिन्होंने डेविड हेयर के साथ मिलकर 1817 में हिन्दू कॉलेज कलकत्ता की स्थापना की थी।
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा पहला प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में 1813 के चार्टर के माध्यम से किया था।
- 1813 के चार्टर के द्वारा गवर्नर जनरल को भारत में शैक्षिक प्रयास के अधिकार दिये गये।
- इससे पहले कि गवर्नर जनरल द्वारा भारत में शैक्षिक प्रयास किये जाते उससे पहले ही भाषायी विवाद शुरू हो गया।
- जहाँ, प्रिंसेज और विल्सन प्राच्य शिक्षा के समर्थक थे वहीं मुनरो और एलिफिंस्टन पश्चात् शिक्षा के समर्थक थे।
- आंग्ल प्राच्य शिक्षा विवाद को देखते हुए गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिंक ने लॉर्ड मैकाले की अध्यक्षता में लोक शिक्षा समिति का गठन, 1834 में किया और उसे सिफारिशें प्रस्तुत करने के आदेश दिये।
- लॉर्ड मैकाले ने 1835 में स्मराणार्थ लेख प्रस्तुत किया जिसमें उसने भारतीय भाषा और साहित्य की तीखी आलोचना की और अंग्रेजी साहित्य को श्रेष्ठ बताया।
- लॉर्ड मैकाले ने अधोमुखी निस्यंदता का सिद्धान्त दिया जिसके अनुसार सरकार केवल उच्च वर्ग को शिक्षित करे। इस वर्ग से शिक्षा छन-छन कर निम्न वर्ग तक अपने आप पहुँच जायेगी।
- लॉर्ड मैकाले को भारत में अंग्रेजी शिक्षा का जन्मदाता कहा जाता था। यद्यपि उसने तो केवल प्रारूप तैयार किया था। लॉर्ड ऑकलैन्ड ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा और भाषा को 1837 में अनिवार्य कर दिया।
- भारत में अंग्रेजों ने शैक्षिक प्रसार के अनुक्रम में निम्न आयोग और समितियों का गठन किया था, जो इस प्रकार है–

आधुनिक भारत में गठित किये गये शिक्षा आयोग (Education Commission Constituted in Modern India)

आयोग/समिति	गठन का वर्ष	मुख्य सिफारिशें	परिणाम
जेम्स टामसन प्लान	1843	यह देशी भाषा द्वारा ग्रामीण शिक्षा की विस्तृत योजना थी।	अंग्रेजी भाषा केवल कॉलेजों तक सीमित रह गयी तथा एक शिक्षा विभाग का गठन किया गया।
वुड डिस्पैच	1854	कम्पनी के अधीनस्थ पाँच प्रांतों में जनअनुदेश के लिए एक विभाग खोला जाये तथा कलकत्ता, मद्रास व बम्बई में विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाये। इसमें उच्च शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम अंग्रेजी बताया गया।	1855 में जनअनुदेश विभाग तथा 1857 में कलकत्ता, मद्रास व बम्बई विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।
हंटर शिक्षा आयोग	1882-83	इसकी सिफारिशें प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा तक ही सीमित थीं। प्राथमिक शिक्षा स्थानीय भाषा में हो। निजी प्रयासों को अधिनियम में प्रोत्साहन। नारी शिक्षा के पर्याप्त प्रबंध का निर्देश।	पाश्चात्य ज्ञान के अलावा भारतीय व प्राच्य भाषाओं के पठन–पाठन में विशेष रुचि देखने को मिली। 1882 में पंजाब व 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय स्थापित किये गये।
रैले आयोग	1902	इसकी सिफारिशें विश्वविद्यालय शिक्षा तक सीमित थीं। विश्वविद्यालय को अध्ययन व शोध के लिए प्राध्यापकों की नियुक्ति करनी चाहिए। गवर्नर को विश्वविद्यालय की क्षेत्रीय सीमायें निश्चित करने का अधिकार दिया गया।	इस आयोग की सिफारिशों के मद्देनजर 1904 का 'भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम' पारित किया गया, जिसमें विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियन्त्रण बढ़ा।
सैडलर आयोग	1917–19	इस आयोग ने प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय शिक्षा के अलावा महिला शिक्षा के लिए स्वायत्ततापूर्ण संस्थाओं की स्थापना की तथा व्यावहारिक शिक्षा पर जोर दिया गया।	1916 से 1922 के बीच मैसूर, पटना, बनारस, अलीगढ़, ढाका, लखनऊ तथा उस्मानिया विश्वविद्यालय खोले गये।
हॉर्टोग समिति	1929	इसने प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय महत्त्व पर बल दिया, परन्तु शीघ्र प्रसार अथवा अनिवार्यता की नीति की निंदा की। उसने सुधार व एकीकरण की नीति की सिफारिश की।	....
सार्जेण्ट योजना	1944	इस योजना ने एक राष्ट्रीय शिक्षा योजना तैयार की। 6–11 वर्ष के बच्चों के लिए व्यापक, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध करने को कहा। इस योजना के तहत उत्तर माध्यमिक श्रेणी समाप्त कर देनी थी।	ये सिफारिशें महत्वपूर्ण थीं, पर इन्हें तत्कालीन स्थिति में लागू करना असम्भव था।

आयोग/समिति	गठन का वर्ष	मुख्य सिफारिशें	परिणाम
राधाकृष्णन आयोग	1948-49	इस आयोग ने विश्वविद्यालय शिक्षा पर अपनी रिपोर्ट पेश की। इस आयोग के अनुसार विश्वविद्यालय से पूर्व 12 साल का अध्ययन होना चाहिए। सामान्य शिक्षा पर अधिक बल देना चाहिए। एक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन होना चाहिए।	1953 में 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' का गठन किया गया।
कोठारी शिक्षा आयोग	1964	इस आयोग ने शिक्षा पद्धति के लचीलेपन की आवश्यकता पर बल दिया। कार्य अनुभव तथा नैतिक शिक्षा पर बल दिया गया।	इस आयोग की सिफारिशों को मद्देनजर रखते हुए 1968 में शिक्षा की राष्ट्रीय नीति की घोषणा की गई।

ब्रिटिश भारत में समाचार–पत्रों का इतिहास (History of Press in British India)

- पुर्तगालियों द्वारा भारत में पहली प्रिन्टिंग प्रेस की स्थापना गोवा में की गई थी।
- अंग्रेजों ने अपनी पहली प्रिन्टिंग प्रेस 1684 में मुम्बई में स्थापित की थी।
- भारत में पहला समाचार–पत्र बंगाल गजट था जो जे. ए. हिक्की द्वारा निकाला गया।
- भारत में अंग्रेजी का पहला समाचार–पत्र भी बंगाल गजट था।
- बांग्ला भाषा का बंगाल गजट, किसी भी भारतीय द्वारा भारतीय भाषा में निकाला जाने वाला पहला समाचार–पत्र था।
- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर का सोमप्रकाश (1859) एकमात्र भारतीय पत्र था, जो लिटिन के वार्नाक्यूलर प्रेस एक्ट के अन्तर्गत दण्डित किया गया था या कार्यवाही की कई थी।
- गदर एकमात्र समाचार–पत्र था, जो हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि चार भाषाओं में निकलता था।
- लाइसेन्स अधिनियम के द्वारा मिरातुल अखबार को प्रतिबन्धित किया था।
- वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट 1878 में लॉर्ड लिटिन ने लागू किया था, जिसमें अधिकारियों को प्रेस जब्ती के असीमित अधिकार मिल गये थे।
- अंग्रेजी शासन काल में प्रकाशित समाचार पत्र और उनके सम्पादक इस प्रकार हैं।

29. ब्रिटिश भारत में किसान विद्रोह और आन्दोलन (Peasant Revolts and Movements in British India)

I. नील विद्रोह (1859-60)

- बंगाल में जब अंग्रेजों ने वहाँ के किसानों को जबरन नील की कृषि के लिए मजबूर किया जो वहाँ के किसानों ने नील उत्पादन करने से साफ इन्कार कर दिया, नील आन्दोलन की शुरुआत नदिया बंगाल से हुई।
- नील आन्दोलन का नेतृत्व दिगम्बर विश्वास और विषम विश्वास ने किया था।

II. पावना विद्रोह (1873-76)

- पावना विद्रोह भी बंगाल की धरती से ही शुरू हुआ था।
- पावना विद्रोह 7% अधिक कर वृद्धि के विरोध में शुरू हुआ था।

III. दक्कन विद्रोह

- महाराष्ट्र के अहमद नगर जिले में किसानों ने साहूकारों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। साहूकार मुख्य रूप से राजस्थानी और गुजराती थे जो अधिक ब्याज वसूलते थे।

IV. मोपला विद्रोह

- मोपला विद्रोह केरल में शुरू हुआ था। मोपला दक्षिण भारत के धर्मान्तरित मुसलमान किसान थे।

V. फड़के आन्दोलन (1879)

- वासुदेव बलवन्त फड़के ने रामोसी और महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले किसानों से मिलकर एक संगठन बनाया, जो डकैती डालना, अंग्रेजी संचार माध्यमों को ध्वस्त करना आदि कार्यकलापों से जुड़े हुए थे। फड़के ने हिन्दू राज्य की स्थापना का नारा बुलन्द किया था।

VI. चम्पारण सत्याग्रह (1917) (Champaran Satyagraha 1917)

- अंग्रेजी नील बागान मालिकों ने चम्पारण के किसानों से एक करार किया था जिसके अन्तर्गत कुल कृषि क्षेत्र 3/20 भाग पर नील की खेती करनी होती थी।
- बागान मालिकों ने किसानों पर लगान बढ़ा दिया और अपने वादों से मुकर गये जिसके कारण विद्रोह शुरू हुआ।
- चम्पारण सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिये राजकुमार शुक्ल ने महात्मा गाँधी से मुलाकात की थी।
- राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर महात्मा गाँधी चम्पारण आये और सरकार को सत्याग्रह की धमकी दी थी।
- चम्पारण सत्याग्रह भारत में चलाया गया महात्मा गाँधी द्वारा पहला सत्याग्रह था।

VII. खेड़ा सत्याग्रह (1918) (Kheda Satyagraha 1918)

- गुजरात के खेड़ा में वहाँ के किसानों ने बढ़ी हुई लगान के विरोध में एक आन्दोलन शुरू कर दिया।
- खेड़ा आन्दोलन में महात्मा गाँधी के प्रमुख सहयोग सरदार पटेल और इन्दुलाल याग्निक थे। इन्हीं लोगों ने खेड़ा के किसानों को लगान न देने की सलाह दी थी।
- महात्मा गाँधी और उनके सहयोगी के सामने लाचार हो गई और एक सर्क्यूलर निकाला जिसमें यह घोषणा की गई कि जो लगान देने में समर्थ हो उसी से उगाई की जाये।

20वीं शताब्दी में भारत के प्रमुख किसान आन्दोलन/संस्था और उनके नेतृत्वकर्ता

(Major Peasant Movements/Organizations of 20th Century)

आंदोलन/संगठन/विद्रोह	संस्थापक/अध्यक्ष नेता	स्थापना वर्ष
चम्पारन सत्याग्रह	महात्मा गाँधी	1917
खेड़ा सत्याग्रह	महात्मा गाँधी	1918
उ.प्र. किसान सभा	गौरीशंकर मिश्र, इंद्रनारायण द्विवेदी, मदन मोहन मालवीय	1918
अवध किसान सभा	बाबा रामचंद्र	1920
एका आंदोलन	मदारी पासी	1921-22
बारदोली सत्याग्रह	बल्लभभाई पटेल	1928
आंध्र प्रांतीय रैयत सभा		1928
बिहार किसान सभा	स्वामी सहजानंद सरस्वती	1929
उत्कल प्रांतीय किसान सभा	मालती चौधरी	बीसवीं सदी
कृषक प्रजापार्टी	अकरम खान, अब्दुर्रहीम खान, फजलुलहक	1929
प्रथम भारतीय किसान स्कूल	निदुबोल	1938
अखिल भारतीय किसान सभा	स्वामी सहजानंद सरस्वती	1936
तेभागा आंदोलन	कम्पाराम, भवन सिंह	1946
वर्ली विद्रोह	–	1945
तेलंगाना आंदोलन (आंध्र प्रदेश)	–	1945-51

30. उन्नीसवीं व बीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार (Social Reforms of the 19-20th Century)

- राजा राममोहन राय के प्रयासों से 1829 में अनुच्छेद 17 के तहत् सती प्रथा को प्रतिबन्धित कर दिया गया था।
- सन् 1804 में कन्या शिशुवध अनुच्छेद 21 के अन्तर्गत अवैध घोषित कर दिया गया।
- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रयासों से 1856 में लॉर्ड डलहौजी ने विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया गया था।
- 1896 में डी.के. कर्वे ने विधवा आश्रम की स्थापना की थी। साथ ही डी. के. कर्वे ने ही प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना 1906 में मुम्बई में की थी।
- एस. एस. बंगाली के प्रयासों से 1891 में एज ऑफ कंसेट एक्ट पारित किया जिसमें 12 वर्ष से कम आयु की लड़कियों के विवाह पर प्रतिबद्ध लगा दिया गया।
- शारदा एक्ट 1930 में पारित किया गया जिसमें 14 वर्ष की कम आयु की बच्चियों के विवाह को प्रतिबन्धित कर दिया गया।
- जे. ई. वेटन ने कलकत्ता में 1843 में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की थी।
- दास प्रथा पर प्रतिबन्ध 1833 के चार्टर से लगाया गया तथा 1843 में दास प्रथा को सम्पूर्ण देश में गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया।
- एनीवेस्ट ने मुम्बई में हिन्दू सम्मेलन की स्थापना की थी।

31. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पूर्व भारत में राजनैतिक संस्थाएँ (Political Organizations in India before the Establishment of the Indian National Congress)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पूर्व भारत में कई राजनैतिक संस्थाएँ स्थापित की गईं जो प्रायः क्षेत्रीय थी और निश्चित क्षेत्र या निश्चित व्यक्तियों के हितों के संरक्षण के लिये कार्य करती थी। इनमें से कोई भी ऐसी नहीं थी।

आधुनिक भारत की राजनीतिक एवं राष्ट्रवादी संस्थाएँ

(Political and Nationalist Institutions of Modern India)

वर्ष	संस्था	संस्थापक	स्थान
1838	लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी	द्वारिकानाथ टैगोर	कलकत्ता
1839	ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी	विलियम एडम	लन्दन
1843	बंगाल ब्रिटिश एसोसिएशन	द्वारिकानाथ टैगोर	कलकत्ता
1851	ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन	देवेन्द्रनाथ टैगोर एवं राजेन्द्र लाल मित्र	कलकत्ता
1852	मद्रास नेटिव एसोसिएशन	—	मद्रास
1852	बॉम्बे एसोसिएशन	जगन्नाथ शंकर	बम्बई
1862	लन्दन इण्डिया कमेटी	सी. पुरुषोत्तम मुदालियर	लन्दन
1866	ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन	दादाभाई नौरोजी	लन्दन
1867	नेशनल इण्डियन एसोसिएशन	मेरी कारपेंटर	लन्दन
1872	इण्डियन सोसाइटी	आनन्द मोहन बोस	लन्दन

वर्ष	संस्था	संस्थापक	स्थान
1875	इंडिया लीग	—	कलकत्ता
1876	इण्डियन एसोसिएशन	आनन्द मोहन बोस एवं एस.एन. बनर्जी	कलकत्ता
1883	इण्डियन नेशनल सोसाइटी	शिरीशचन्द्र बोस	कलकत्ता
1883	भारतीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस	एस.एन. बनर्जी	कलकत्ता
1884	मद्रास महाजन सभा	वीर राघवाचारी एवं एस. अय्यर, चारलू	मद्रास

I. भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना/आन्दोलन (Establishment/ Movement of Communist Party in India)

- भारत में कम्युनिस्ट वामपंथी आन्दोलन की शुरुआत दो विश्व युद्धों के मध्यकाल में भयंकर आर्थिक मन्दी और रूस की वोल्सेविक क्रान्ति के कारण हुई।
- भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना का श्रेय मानवेन्द्रनाथ को जाता है जिन्होंने 1920 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की। पश्चातवर्ती समय में कम्युनिस्ट आन्दोलन में तेजी आई और वामपंथी (कम्युनिस्ट) विचारधारा की कई पार्टियों का गठन किया गया जिनका विवरण इस प्रकार है–

वर्ष	संस्था	संस्थापक	स्थान
1920	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी	एम.एन. राय	ताशकंद
1920	सर्वेन्ट्स ऑफ पीपुल सोसाइटी	लाला लाजपत राय	लाहौर
1920	अवध किसान सभा	नेहरू, रामचन्द्र, गौरीशंकर	प्रतापगढ़
1920	भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस	एन.एम. जोशी (संस्थापक) एवं लाला लाजपत राय (अध्यक्ष)	लखनऊ
1921	कम्युनिस्ट ग्रुप ऑफ इण्डिया	नलिनी गुप्ता	कलकत्ता
1923	स्वराज्य पार्टी	मोतीलाल नेहरू एवं सी.आर. दास	दिल्ली
1925	कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया	सत्यभक्त	कानपुर
1925	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	के.वी. हेडगेवार	नागपुर
1927	वीमेंस इण्डियन एसोसिएशन	लेडी सदाशिव अय्यर	मद्रास
1928	श्रमिक स्वराज पार्टी	काजी नजरुल इस्लाम	
1929	खुदाई खिदमतगार	खान अब्दुल गफ्फार खाँ	पेशावर
1934	कांग्रेस समाजवादी पार्टी	आचार्य नरेन्द्र देव एवं जयप्रकाश नारायण	पटना
1936	प्रगतिशील लेखक संघ	मुंशी प्रेमचन्द	लखनऊ
1936	अखिल भारतीय किसान सभा	एन.जी. रंगा एवं स्वामी सहजानन्द	लखनऊ
1936	अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्	—	—
1939	फारवर्ड ब्लॉक	सुभाष चन्द्र बोस	कलकत्ता
1939	भारतीय वोल्शेविक दल	एन.डी. मजूमदार	कलकत्ता
1940	रेडिकल डेमोक्रेटिक दल	एम.एन. राय	कलकत्ता
1941	भारतीय वोल्शेविक लेनिन दल	अजीत राय एवं इन्द्र सेन	कलकत्ता
1942	क्रान्तिकारी समाजवादी दल	सौम्येन्द्र नाथ टैगोर	कलकत्ता

धार्मिक एवं समाज–सुधार आन्दोलन (Religious & Social Reform Movement)

हिन्दू धार्मिक–सामाजिक आन्दोलन (Hindu Religious-Social Movement)

संगठन का नाम	संस्थापक	वर्ष	स्थान
आत्मीय सभा	राजा राममोहन राय	1815 ई.	कलकत्ता
ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय	1828 ई.	कलकत्ता
धर्मसभा	राधाकांत देव	1829 ई.	कलकत्ता
तत्वबोधिनी सभा	देवेन्द्रनाथ टैगोर	1839 ई.	कलकत्ता

संगठन का नाम	संस्थापक	वर्ष	स्थान
परमहंस मंडली	गोपाल हरि देशमुख	1840 ई.	बम्बई
रहनुमाई माजदायन सभा	दादाभाई नौरोजी, एस.एस. बंगाली	1851 ई.	बम्बई
राधास्वामी सत्संग	तुलसी राम (शिवदयाल)	1861 ई.	आगरा
भारतीय ब्रह्म समाज	केशवचन्द्रसेन	1866 ई.	कलकत्ता
प्रार्थना समाज	डॉ. आत्माराम पांडुरंग एवं एम.जी. रानाडे	1867 ई.	बम्बई
आर्य समाज	स्वामी दयानन्द सरस्वती	1875 ई.	बम्बई
थियोसोफिकल सोसायटी	मैडम एच.पी. ब्लावत्सकी एवं कर्नल एच. एस. अल्कॉट	1875 ई.	न्यूयॉर्क
साधारण ब्रह्म समाज	आनंद मोहन बोस	1878 ई.	कलकत्ता
दक्कन एजुकेशन सोसायटी	जी.जी. आगरकर	1884 ई.	पूना
इंडियन नेशनल सोशल कांफ्रेंस	एम.जी. रानाडे	1887 ई.	बम्बई
देव समाज	शिवनारायण अग्निहोत्री	1887 ई.	लाहौर
रामकृष्ण मिशन	स्वामी विवेकानन्द	1897 ई.	बेलूर
सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी	गोपालकृष्ण गोखले	1905 ई.	बम्बई
पूना सेवा सदन	श्रीमती रमाबाई रानाडे	1909 ई.	पूना
सोशल सर्विस लीग	एन.एम. जोशी	1911 ई.	बम्बई
विश्व भारती	रबीन्द्र नाथ ठाकुर	1912 ई.	कलकत्ता
सेवा समिति	एच.एन. कुंजरू	1914 ई.	इलाहाबाद
सेवा समिति बॉय स्काउट एसोसिएशन	श्रीराम बाजपेयी	1914 ई.	बम्बई
हिन्दू महासभा	मदनमोहन मालवीय	1951 ई.	हरिद्वार
वीमेन्स इंडियन एसोसिएशन	लेडी सदाशिव अय्यर	1917 ई.	मद्रास

मुस्लिम सामाजिक–धार्मिक आन्दोलन (Muslim Social-Religious Movement)

आन्दोलन	वर्ष	स्थान	संस्थापक
फैराजी आन्दोलन	1838 ई.	फरीदपुर (बंगाल)	हाजी शरीयतुल्ला एवं दादू मियाँ
तय्यूनी आन्दोलन	1839 ई.	ढाका	करामाती अली, जौनपुर
दारुल–उलूम अथवा देवबन्द आन्दोलन	1866 ई.	देवबन्द	मुहम्मद कासिम नौतनवी एवं राशिद अहमद गंगोही
अलीगढ़ आन्दोलन	1875 ई.	अलीगढ़	सर सैयद अहमद खान
अहमदिया आन्दोलन	1889-90 ई.	फरीदकोट	कादियाँ के मिर्जा गुलाम अहमद
नदवताल आन्दोलन (नदवा–उल–उलेमा)	1894-95 ई.	लखनऊ	मौलाना शिबली नुमानी

32. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (Indian National Congress)

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक अवकाश प्राप्त अधिकारी ''**एलेन ऑक्टेवियन ह्यूम**'' द्वारा दिसम्बर, 1885 में मुम्बई के ग्वालिया टैंक में स्थित गोकुलदास तेजपात संस्कृत कॉलेज में की गई।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता डब्ल्यू. सी. बनर्जी ने की थी।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के प्रथम अधिवेशन में कुल 72 लोगों ने भाग लिया था।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के प्रथम पारसी अध्यक्ष दादाभाई नौरोजी थे। इन्हें ग्रेन्ड ओल्डमैन ऑफ इण्डिया कहा जाता था।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को लाला लाजपत राय ने डिफरिन के दिमाग की उपज बताया था।
- आर.पी. दत्त ने कांग्रेस की स्थापना को ब्रिटिश सरकार की एक पूर्व नियोजित गुप्त योजना बताया।
- कांग्रेस के बारे में लॉर्ड डिफरिन ने कहा था कि कांग्रेस बहुत सूक्ष्म लोगों का प्रतिनिधित्व करती थी।

- आरम्भ में कांग्रेस पर उदारवादी लोगों का वर्चस्व था जिनमें दादा भाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, दानिशवाचा, फीरोजशाह मेहता और मदनमोहन मालवीय थे।
- उदारवादियों की माँग पर ही आय–व्यय की समीक्षा के लिए वैलवाई कमीशन का गठन हुआ था।
- इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य अंग्रेजी शासन में विरुद्ध बढ़ते हुए जन असन्तोष के लिए सुरक्षा कपाट (सेफ्टी वाल्व) की व्यवस्था करना है।
- प्रारम्भ में इसका नाम भारतीय राष्ट्रीय संघ था, लेकिन दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इसका नाम ''**भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस**'' रखा गया।
- व्योमेश चन्द्र बनर्जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष थे।
- बदरुद्दीन तैयबजी कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष थे।
- जॉर्ज युले कांग्रेस के प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष थे।
- एनीबेसेंट कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष थीं।
- सरोजिनी नायडू कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष थीं।

33. राष्ट्रीय आन्दोलन का द्वितीय चरण (Second Phase of National Movement)

- राष्ट्रीय आन्दोलन के द्वितीय चरण को उग्र राष्ट्रवाद काल माना जाता है।
- उग्र राष्ट्रवादियों ने उदारवादियों की नीतियों राजनैतिक शिक्षा वृत्ति की संज्ञा दी थी।
- उग्र राष्ट्रवादियों में प्रमुख थे– बाल गंगाधर तिलक, लाल लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल और अरविन्द घोष प्रमुख थे।
- उग्र राष्ट्रवादियों के अग्रदूत बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रवाद की पहचान हिन्दुत्व की भावना से की थी।
- बाल गंगाधर तिलक ने गणपति महोत्सव (1884) शिवाजी महोत्सव 1886 के माध्यम से भारतीय जन मानव में राष्ट्रीय चेतना जगाने का प्रयास किया।
- बाल गंगाधर ने केसरी, लाला लाजपत राय ने पंजाबी और विपिन चन्द्रपाल ने न्यू इण्डिया ने इन समाचार-पत्रों के माध्यम से सरकार पर करारा प्रहार किया था।

34. क्रान्तिकारी आन्दोलन का प्रथम चरण 1905-1915 (First Phase of Revolutionary Movement 1905-1915)

- कांग्रेस के उदारवादियों से निराश और उग्रवादी विचारधारा से प्रभावित युवाओं को क्रान्ति का मार्ग चुनने को प्रेरित किया।
- क्रान्तिकारियों के भारत में प्रमुख केन्द्र पंजाब, बंगाल और महाराष्ट्र थे।
- भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरुआत महाराष्ट्र से हुई।
- क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरुआत महाराष्ट्र के चितपावन ब्रह्मणों ने की। जब सन् 1918 में पूना के प्लेग कमिश्नर रैण्ड और एमहर्स्ट की हत्या कर दी गई, जिसमें दामोदर चापेकर और बालकृष्ण चापेकर का नाम आया। दोनों भाइयों को कुछ दिनों बाद पकड़ लिया गया और फांसी दे दी गई। चापेकर बन्धु हिन्दू धर्म संघ से जुड़े हुए थे।
- महाराष्ट्र में आर्यवान्ध व समिति का गठन बाल गंगाधर तिलक के ही मार्गदर्शन में हुआ था।
- अभिनव भारत संघ के सक्रिय सदस्य अनंत लक्ष्मण करकरे ने नासिक के जिला मजिस्ट्रेट जैक्स की हत्या कर दी थी। करकरे पर नासिक षड्यन्त्र केस चला था और उसे फाँसी दे दी गई।
- बीसवीं सदी के आरम्भ में महाराष्ट्र के साथ–साथ बंगाल भी क्रान्तिकारियों का प्रमुख केन्द्र था।
- बंगाल में क्रान्तिकारी घटनाओं की शुरुआत बंगाल विभाजन के बाद मानी जाती है।
- बंगाल के पहले क्रान्तिकारी संगठन अनुशीलन समिति की स्थापना 1902 में ज्ञानेन्द्र नाथ बसु और जतीन्द्रनाथ बनर्जी ने की थी।
- बंगाल के क्रान्तिकारी संगठन युगान्तर की स्थापना अरविन्द घोष ने की थी। युगान्तर के अन्य नायक बारीन्द्र घोष ने युगान्तर के माध्यम से सर्वत्र क्रान्ति का अलख जगाया था।
- प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस ने बंगाल के मजिस्ट्रेट किंग्स फोर्ड की हत्या कर दी थी।
- बंगाल के अन्य मुख्य क्रान्तिकारियों में जतीन्द्रनाथ मुखर्जी का नाम आता है, जिन्हें वाधा जातिन के नाम से जाना जाता है, जो 1915 में बालासोर में पुलिस मुठभेड़ में मारे गये थे।
- बंगाल के अन्य क्रान्तिकारियों में रास बिहारी बोस ने 1911 में राजधानी परिवर्तन के समय लॉर्ड हॉर्डिंग पर बम फेंका था। इस मामले में रास बिहारी बोस, बसन्त कुमार, मुकुन्द और अमीरचन्द पर दिल्ली षड्यन्त्र केस का मुकदमा चलाया गया था।
- प्रमुख क्रान्तिकारी अरविन्द घोष ने क्रान्तिकारी घटनाओं को त्यागकर ओरीविले पाण्डिचेरी में एक आश्रम की स्थापना कर संन्यासी जीवन व्यतीत करने लगे थे।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर गुरुदेव की उपाधि क्रान्तिकारी ब्रह्म बन्धोपाध्याय ने दी थी।
- अजीत सिंह ने लाहौर में अन्जुमने–मोहिखाने वतन नामक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की थी।

I. भारत के बाहर क्रान्तिकारी आन्दोलन (Revolutionary Movements Outside India)

- विदेशी धरती पर भारत से बाहर सबसे पुरानी क्रान्तिकारी संस्था ''इण्डिया होमरूल सोसाइटी'' थी, जिसकी स्थापना श्याम जी कृष्ण वर्मा ने की थी। इस सोसाइटी के अन्य सदस्यों में वी.डी. सावरकर, मदनलाल धींगरा और लाला हरदयाल थे।
- इण्डिया होमरूल सोसाइटी ने ''इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट'' पत्र निकाला व अमेरिका में इण्डिया हाउस की स्थापना की थी।
- इण्डिया हाउस के सक्रिय सदस्य मदनलाल धींगरा ने कर्जन वाइली की गोली मारकर हत्या कर दी थी।
- इण्डिया होमरूल सोसाइटी की महिला सदस्य मैडम भीका जी कामा को ''भारतीय क्रान्ति की माँ'' कहा जाता था।

II. गदर पार्टी (गदर आन्दोलन) एवं अन्य क्रान्तिकारी घटनाएँ [Ghadar Party (Ghadar Movement) and other Revolutionary Events]

- भारत से बाहर रामनाथपुरी ने बैंकुवर जर्मनी से ''सर्क्युलर–ए–आजादी'' और तारकनाथ दास ने फ्री हिन्दुस्तान नामक समाचार-पत्र निकाले थे।
- द्वारिकानाथ दास ने 1907 में केलीफोर्निया में भारतीय स्वतंत्रता लीग की स्थापना की थी।
- भारत में गदर पार्टी का गठन 1913 में फ्रांसिस्को अमेरिका में सोहना सिंह भकना ने की थी।
- लाला हरदयाल और बाबा रामचन्द्र गदर पार्टी के अन्य प्रमुख नेता थे, जिन्होंने गदर आन्दोलन का विस्तार किया और लोकप्रिय बनाया।

35. बंगाल का विभाजन (स्वदेशी आन्दोलन)
[(Division of Bengal (Indigenous Movement)]

- लॉर्ड कर्जन ने देशभक्ति के उफनते सैलाब को रोकने के लिए साम्प्रदायिक आधार पर राष्ट्रीय गतिविधियों के केन्द्र बंगाल को जुलाई, 1905 ई. में दो प्रान्तों पश्चिम बंगाल हिन्दू बाहुल्य (बिहार, उड़ीसा सहित) और पूर्वी बंगाल मुस्लिम बाहुल्य (असम सहित) में विभाजित करने (बंग–भंग) की घोषणा की।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और बंगाल के राष्ट्रवादियों ने इस विभाजन का तीव्र विरोध करते हुए स्वदेशी व बहिष्कार आन्दोलन चलाये।
- 16 अक्टूबर, 1905 को जिस दिन **बंग–भंग** लागू हुआ था, वह दिन **'शोक दिवस'** के रूप में मनाया गया। बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा 'आनन्द मठ' नामक उपन्यास में लिखे गये गीत 'वन्दे मातरम्' को लोगों ने जोश से सड़कों पर गाया। उसी समय रवीन्द्रनाथ टैगोर ने आमार सोनार बांग्ला गीत लिखा, जो 1971 में बांग्लादेश का राष्ट्रीय गीत बना।

36. कांग्रेस का विभाजन 1907
(Division of Congress 1907)

- नरमपंथियों और गरमपंथियों में मतभेद तो बंगाल विभाजन के समय ही उत्पन्न हो गये थे, जो कलकत्ता अधिवेशन, 1906 में सतह पर आ गये थे।
- कांग्रेस में झगड़ा 1907 सूरत अधिवेशन में अध्यक्ष पद को लेकर हुआ।
- कांग्रेस का गरमपंथी दल किसी गरमपंथी को अध्यक्ष बनाना चाहते थे, परन्तु नरमपंथी बहुमत होने के कारण वे ऐसा करने में असफल रहे और नरमपंथी नेता रास बिहारी केस सूरत अधिवेशन में अध्यक्ष बनने में सफल रहे।
- इसी बात को लेकर सूरत अधिवेशन, 1907 में कांग्रेस दो धड़ों, नरमपंथी और गरमपंथी में विभाजित हो गई।
- बंगाल विभाजन के ठीक बाद 1906 में हुए कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता कलकत्ता में दादा भाई नौरोजी ने पहली बार स्वराज शब्द का प्रयोग किया था।

37. मुस्लिम लीग की स्थापना
(Establishment of Muslim League)

- अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ब्रिटिश भारत में 1906 में स्थापित एक राजनीतिक पार्टी थी, जिसकी स्थापना ढाका के नवाब सलीमुल्लाह ने ढाका में की थी।
- प्रथम अधिवेशन–1906 ई.– ढाका में सम्पन्न हुआ था, जिसके प्रथम अध्यक्ष वकारुल मुल्क थे।
- द्वितीय अधिवेशन–1907 ई.– कराची में सम्पन्न हुआ, जिसके अध्यक्ष आगा खाँ थे।
- तृतीय अधिवेशन–1908 ई.– अमृतसर में सम्पन्न हुआ जिसमें मुस्लिम लीग के द्वारा धर्म के आधार पर पृथक् निर्वाचक मण्डल की माँग की गई जिसे 1909 के मार्ले–मिण्टो सुधार में स्वीकार कर लिया गया।
- लेकिन कांग्रेस के भीतर मतभेद उत्पन्न हो गए। नरम दल का मत था कि स्वदेशी आन्दोलन को बंगाल राज्य तक ही सीमित रहना चाहिए, जबकि गरम दल के प्रतिनिधि इसे पूरे भारत में प्रसारित करना चाहते थे।
- कांग्रेस के सूरत अधिवेशन (1907 ई.) में दोनों दलों के बीच संघर्ष हुआ और गरम दल व नरम दल अलग हो गए।

38. मार्ले–मिंटो सुधार
(Morley-Minto Reforms)

- 1909 ई. में पारित किए गए इण्डियन कौंसिल एक्ट को मार्ले–मिंटो सुधार का नाम दिया गया। इस अधिनियम के तहत प्रान्तीय विधान परिषद् में सदस्यों की संख्या को बढ़ाया गया तथा धर्म के आधार पर पृथक् प्रति. निधित्व प्रणाली की मुस्लिम लीग की माँग को स्वीकार कर लिया गया।

39. दिल्ली दरबार
(Delhi Durbar)

- 1911 ई. में दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया। जिसमें ब्रिटेन के राजा चार्ज पंचम और महारानी मैरी ने भागीदारी की। इस दरबार में बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया गया।
- दिल्ली को 1 अप्रैल, 2012 में भारत की राजधानी बनाया गया।

40. हार्डिंग बम काण्ड
(Hardinge Bomb Consipiracy)

- वर्ष 1912 ई. राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरण के समय समारोह में वायसराय हार्डिंग पर रास बिहारी बोस ने बम फेंका, जिसमें हार्डिंग घायल हो गये।
- खुदीराम बोस सबसे युवा शहीद होने वाले क्रान्तिकारी थे।

41. लखनऊ पैक्ट 1916
[Lucknow Pact 1916]

- कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन, 1916 की अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार ने की थी।
- कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था। पहला कांग्रेस के नरमपंथी और गरमपंथी धड़ों के बीच सुलह हो गई, दूसरा कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच सार्वधार्मिक सुधारों को स्वीकार करने के लिए सरकार पर दबाव डालने के लिये समझौता हुआ था।
- कांग्रेस मुस्लिम लीग पैक्ट जिसे लखनऊ पैक्ट भी कहा जाता है, के द्वारा कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के पृथक् निर्वाचन सम्बन्धी माँगों को औपचारिक रूप से स्वीकार कर लिया था, जो भारत विभाजन के कारणों में से एक बनी।

42. होमरूल लीग आन्दोलन (1916)
[Home Rule League Movement (1916)]

- इस आन्दोलन की स्थापना सन् 1916 में बात गंगाधर तिलक, एनी बेसेंट द्वारा भारत में स्वशासन के लिए प्राप्त अधिकारों के माँग के उद्देश्य से की गई।
- बाल गंगाधर तिलक ने होमरूल लीग की स्थापना बेलगाँव (पूना) में की थी।
- ऐनी बेसेंट ने जॉर्ज अरुण्डेल को होमरूल लीग का सचिव बनाया था।

43. मांटेग्यू घोषणा (1917)
[Montagu Declaration (1917)]

- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों के समर्थन से प्रसन्न होकर मान्टेग्यू ने 1917 में कुछ घोषणाएँ कीं जो इस प्रकार थीं–
  (i) भारत में उत्तरदायी सरकार का गठन किया जाएगा।
  (ii) जिसमें शासक जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के प्रति उत्तरदायी होगा।

44. महात्मा गाँधी : आन्दोलन व सत्याग्रह
(Mahatma Gandhi : Movements & Satyagrah)

- महात्मा गाँधी सन् 1915 में दक्षिणी अफ्रीका से भारत लौटे।
- महात्मा गाँधी ने 1915 में साबरमती नदी के किनारे अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की थी।
- महात्मा गाँधी ने भारत आकर तीन आन्दोलनों का सफल नेतृत्व किया था, जिसमें चम्पारण और खेड़ा किसान आन्दोलन थे और अहमदाबाद मिल एक मजदूर आन्दोलन था।
- खेड़ा सत्याग्रह 1918 महात्मा गाँधी द्वारा चलाया गया वास्तविक सत्याग्रह था।
- अहमदाबाद मिल मजदूरों ने प्लेग वोनस को लेकर आन्दोलन किया।
- अहमदाबाद मिल आन्दोलन के समय मिल मालिक अम्बालाल साराभाई थे जिन्होंने साबरमती आश्रम निर्माण में सहयोग किया था। ये गाँधी जी के मित्र थे।
- गाँधी जी के अनुरोध पर मिल मालिकों ने 35% बोनस देना स्वीकार कर लिया था और आन्दोलन समाप्त हो गया।

45. प्रथम विश्व युद्ध (1914)

- यूरोप में बड़ी शक्तियाँ दो गुटों में बँटी हुई थीं, जो 1914 को आपस में टकरा गईं और विश्व युद्ध शुरू हो गया।
- प्रथम विश्व युद्ध के समय जर्मनी, इटली, ऑस्ट्रिया और टर्की थे, तो दूसरी तरफ ब्रिटेन, फ्रान्स और रूस थे।

46. रौलेट एक्ट (1919 ई.)

- सन् 1918 ई. में क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलने के लिए गठित सर सिडनी रोलेट समिति की सिफारिशों के आधार पर फरवरी, 1919 ई. में केन्द्रीय विधान परिषद् द्वारा एक विधेयक पारित किया गया। इससे विधेयक को '**रौलेट एक्ट**' के नाम से जाना जाता है।
- इसे '**बिना वकील, बिना दलील** तथा **बिना अपील**' का कानून कहा जाता है। इसे 'काले कानून' की भी संज्ञा दी जाती है।

47. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड (1919 ई.)

- रौलेट एक्ट के विरोध में पंजाब में डॉ. सत्यपाल व सैफुद्दीन किचलू के नेतृत्व में एक जुलूस का आयोजन किया जा रहा था, जिस पर अंग्रेजी पुलिस ने निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाकर उनकी हत्या कर दी गई और दोनों नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

48. खिलाफत आन्दोलन (1919-1921 ई.)
(Khilafat Movement 1919-2021)

- प्रथम विश्व युद्ध में मुस्लिम लीग सरकार का समर्थन करने के लिए इस आधार पर तैयार हुई कि वह युद्ध के समय तुर्की के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही नहीं करेगा, परन्तु अंग्रेजों ने ऐसा नहीं किया इसलिए मुस्लिम लीग ने भारत में खिलाफत आन्दोलन शुरू कर दिया।
- चूँकि भारत सहित विश्व के सभी मुस्लिम तुर्की के खलीफा को अपना खलीफा मानते थे, जबकि अंग्रेजों ने तुर्की को विभाजित कर दिया था।
- 17 अक्टूबर, 1919 को मुस्लिम लीग ने खिलाफत दिवस मनाया था।

49. असहयोग आन्दोलन
(Non-Co-operation Movement)

- गाँधी जी ने लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में कलकत्ता कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव पारित करवाया था।
- 1 अगस्त, 1920 को गाँधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। आन्दोलन का लक्ष्य ''स्वराज का लक्ष्य'' रखा।
- असहयोग आन्दोलन के समय गाँधी जी के खादी के प्रयोग पर बल और सरकारी समारोहों के बहिष्कार का आह्वान किया था।
- 17 नवम्बर, 1921 ई. को प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर सम्पूर्ण भारत में सार्वजनिक हड़ताल का आयोजन किया गया।

50. क्रान्तिकारी आन्दोलन का द्वितीय चरण
(Second Phase of Revolutionary Movement)

- असहयोग आन्दोलन समय पूर्व समाप्त होने के कारण भारतीय जनमानस में घोर निराशा का भाव था।
- इस निराशा के बीच उत्तर भारत और बंगाल में युवा क्रान्ति के लिए उठ खड़े हुए।
- सन् 1924 में शचीन्द्र शान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद ने ''हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन'' की स्थापना की थी, जो एक बड़ी क्रान्तिकारी संस्था बन गई।
- हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन के सक्रिय सदस्यों ने काकोरी लखनऊ में 8 डाउन ट्रेन में अंग्रेजों के खजाने पर डाका डाला, जिसे काकोरी काण्ड कहा जाता है।
- हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन के सभी सदस्यों के समाप्त होने के बाद चन्द्रशेखर आजाद ने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन नाम की नई क्रान्तिकारी संस्था की स्थापना की थी।
- साइमन कमीशन के विरोध में 1927 में लाला लाजपत राय को लाठियों से पीटने वाले सान्डर्स की हत्या भगतसिंह, राजगुरु और चन्द्रशेखर आजाद ने कर दी।
- केन्द्रीय विधान मण्डल में बम फेंकते समय भगत सिंह ने इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा दिया था।
- भगतसिंह और राजगुरु की गिरफ्तारी के विरोध में महान क्रान्तिकारी जतिनदास ने भूख हड़ताल की और 64 दिन के बाद उनकी मृत्यु हो गई।

- बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरुआत हेमचन्द्र घोष, सूर्यसेन ने की थी।

51. द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1932-1934

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की असफलता के बाद कांग्रेस 1 जनवरी, 1932 को द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन की घोषणा कर दी।
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत के साथ ही सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार करा लिया गया और कांग्रेस को गैर-कानूनी संस्था घोषित कर दिया गया।

52. साम्प्रदायिक अधिनिर्णय और पूना पैक्ट (Communal Awards and Poona Pact)

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रेम्जे मैकडोनाल्ड ने विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधित्व के लिए एक पंचाट जारी किया जिसे कम्यूनल अवार्ड भी कहा जाता है।
- साम्प्रदायिक अधिनिर्णय न केवल मुसलमानों के लिए हुआ, बल्कि दलित, सिख, ईसाई और महिलाओं को भी इसमें सम्मिलित कर लिया गया।
- दलितों को पृथक् निर्वाचक मण्डल में रखे जाने में विरोध में गाँधीजी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया। उपवास के 5 दिन बाद 26 सितम्बर, 1932 गाँधीजी और अम्बेडकर के बीच एक समझौता हुआ जिसे पूना समझौता कहा जाता है।

53. प्रान्तीय (राज्यों में) चुनाव व मंत्रिमण्डलों का गठन 1937 (Provincial Elections and Formation of Cabinet 1937)

- जनवरी–फरवरी, 1937 में भारत के सात राज्यों में चुनाव हुए जिसमें से कांग्रेस 5 राज्यों में बहुत के साथ सरकार बनाने में सफल रही, जबकि मुस्लिम लीग ने पंजाब में यूनिस्ट पार्टी और बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी के साथ मिलकर संयुक्त सरकार बनाई।
- कांग्रेस पार्टी की सरकारों ने अपने तरीके से अपने नागरिकों को सहूलियत प्रदान करने का प्रयास किया।
- कांग्रेस मंत्रिमण्डल के त्यागपत्र के साथ ही मुस्लिम लीग और अम्बेडकर ने 22 दिसम्बर, 1939 को मुक्ति दिवस मनाया।

54. द्वितीय विश्व युद्ध और राष्ट्रीय आन्दोलन 1939 (Second World War and National Movements)

- द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत 31 सितम्बर, 1939 को हुई।
- कांग्रेस ने समर्थन के बदले भारत को स्वतन्त्र करने की शर्त रखी।
- सुभाष चन्द्र बोस ने द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजों के सहयोग का विरोध किया था।
- सुभाष चन्द्र बोस द्वितीय विश्व युद्ध को स्वतंत्रता का अवसर मानते थे।
- जबकि महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू सहयोग के पक्षधर थे।

I. अगस्त प्रस्ताव 1940 (August Offer 1940)

- कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन, 1940 में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि केन्द्र में एक अन्तरिम सरकार का गठन होगा बदले में कांग्रेस द्वितीय विश्व युद्ध में सहयोग करेगी।

55. मुस्लिम लीग की पाकिस्तान माँग (Muslim League's Demand for Pakistan)

- मुहम्मद इकबाल पहला व्यक्ति था जिसने इलाहाबाद अधिवेशन, 1930 में मुस्लिमों के लिए अलग राज्य की संकल्पना की थी।
- 1933-35 के बीच कैम्ब्रिज के छात्र चौधरी रहमत अली ने पहली बार पृथक पाकिस्तान राज्य की परिकल्पना की।
- 1937 में मुस्लिग लीग के बुरी तरह चुनाव हारने पर जिन्ना ने महात्मा गाँधी पर हिन्दू राज्य स्थापित करने का आरोप लगाया और द्विराष्ट्र सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
- मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन, 1940 में पहली बार पृथक् पाकिस्तान राज्य के निर्माण का प्रस्ताव आया, जिसकी अध्यक्षता मु. अली जिन्ना ने की थी।

56. व्यक्तिगत सत्याग्रह 1940 (Individual Satyagrah 1940)

- कांग्रेस ने जब अगस्त प्रस्तावों को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया उसके बाद निर्णय किया गया है कि गाँधी जी के नेतृत्व में व्यक्तिगत सत्याग्रह किया जाये।
- महात्मा गाँधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए आचार्य विनोबा भावे को चुना।
- दूसरे चरण में व्यक्तिगत सत्याग्रह जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह वे समय लगभग 2500 से अधिक नेता और कार्यकर्ता जेल गये।

57. क्रिप्स प्रस्ताव 1942 (Cripps Offer 1942)

- द्वितीय विश्व युद्ध के समय मित्र राष्ट्रों की कमजोर होती स्थिति के कारण ब्रिटिश सरकार पर यह दबाव बढ़ा कि वह भारतीय जनमानस के प्रति अपने व्यवहार को अधिक न्यायपूर्ण करे।
- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री व्रास्टल ने यह घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार भारत की राजनैतिक और सामाजिक गतिरोध दूर करने के लिए स्टेफार्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक मिशन भारत भेजा जाएगा।
- स्टेफर्ड क्रिप्स 22 मार्च, 1942 को मुम्बई भारत पहुँचा और प्रस्ताव प्रस्तुत किये। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत को डोमीनियन स्टेट का दर्जा दिया जायेगा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संविधान निर्मात्री परिषद् का गठन किया जाएगा।
- ब्रिटिश भारत के किसी प्रान्त को संविधान को स्वीकार या अस्वीकार करने की स्वतन्त्रता होगी।

58. भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 (Quit India Movement 1942)

- भारतीय नेतृत्व को यह आभास हो गया था कि अंग्रेजों की भारत में उपस्थिति धुरी राष्ट्रों को भारत पर आक्रमण करने को प्रेरित करेगा, इसी कारण महात्मा गाँधी ने कहा था कि भारत को ईश्वर के हाथों में छोड़कर चले जाओ।
- 1 अगस्त, 1942 को तिलक दिवस पर बोलते हुए जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि संघर्ष, निरन्तर संघर्ष मेरा यही सन्देश है क्रिप्स को।
- 7 अगस्त, 1942 को ग्वालिया टैंक मैदान से भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पारित किया गया और 8 अगस्त को भारत छोड़ो आन्दोलन आरम्भ हो गया।
- महात्मा गाँधी ने यहाँ ''करो या मरो'' का नारा दिया और कहा सम्पूर्ण आजादी से कम कुछ भी स्वीकार नहीं।

59. आजाद हिन्द फौज और सुभाष चन्द्र बोस (Azad Hind Fauj and Subhash Chandra Bose)

- जर्मनी में सुभाष चन्द्र बोस ने ''फ्री इण्डिया सेन्टर'' की स्थापना की थी और यहीं ''जय हिन्द'' का नारा दिया था।
- सुभाष चन्द्र बोस जर्मनी से सीधे जापान पहुँचे जहाँ रासबिहारी बोस से मिले।
- रासबिहारी बोस ने टोक्यो में इण्डियन इन्डिपेन्डेंस लीग की स्थापना की।
- मोहन सिंह ने 15 दिसम्बर, 1941 को मलेशिया में आजाद हिन्द फौज की स्थापना की थी।
- जून, 1942 को आजाद हिन्द फौज की कमान सुभाष चन्द्र बोस को सौंप दी गई और सुभाष चन्द्र बोस को (I.N.A.) का सर्वोच्च कमाण्डर बनाया गया।
- सुभाष चन्द्र बोस ने रंगून में अस्थायी सरकार का गठन किया।
- सुभाष चन्द्र बोस ने ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा'' का नारा दिया था।
- सुभाष चन्द्र बोस ने अण्डमान द्वीप का नाम शहीद द्वीप और निकोबार द्वीप का नाम स्वराज द्वीप रखा।
- सुभाष चन्द्र बोस ने ही सबसे पहले महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता कहकर सम्बोधित किया था।

60. लॉर्ड वावेल योजना और शिमला सम्मेलन 1945 (Lord Wavell Plan and Shimla Conference)

- 1943 में लॉर्ड वावेल भारत का वायसराय बनकर आया।
- लॉर्ड वावेल ने भारत आकर स्थितियों का सामान्य बनाने का प्रयास किया और भारत छोड़ो आन्दोलन के समय गिरफ्तार कांग्रेस कार्य समिति सदस्यों को रिहा कर दिया गया।
- लॉर्ड वावेल ने भारत आकर एक योजना प्रस्तुत की जिसे वावेल योजना कहा जाता है।
- लॉर्ड वावेल के प्रस्तावों पर विचार करने के लिए 25 जून, 1945 को शिमला में एक सर्वदलीय सम्मेलन बनाया गया।
- मुस्लिम लीग के अवरोध उत्पन्न होने के कारण वावेल योजना असफल रही। चूंकि उन्हें 25% आबादी पर 14 में से 6 सदस्य दिये जा रहे थे फिर भी संतुष्ट नहीं हुए।

61. कैबिनेट मिशन 1946 (Cabinet Mission 1946)

- मार्च, 1946 को कैबिनेट मिशन भारत पहुँचा।
- कैबिनेट मिशन में स्टफर्ड क्रिप्स, पैथिक लारेन्स और ए.बी. एलेक्जेन्डर शामिल थे।
- गाँधीजी ने कैबिनेट मिशन योजना को उत्कृष्ट योजना बताया था।
- केन्द्रीय विधान सभा की 296 सीटों में से 205 पर कांग्रेस की जीत पर लीग जल गई।
- मुस्लिम लीग ने अलग पाकिस्तान राज्य की माँग के लिए सीधी कार्यवाही करने की बात कही।
- 16 अगस्त, 1946 को मुस्लिग लीग ने ''प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस'' मनाया जिसका उद्देश्य यह था कि वह कहते थे कि हिन्दू और मुस्लिम एक साथ नहीं रह सकते।
- बंगाल के नोआखाली के भयंकर दंगों में लगभग 6000 लोग मारे गये थे।
- मौलाना अबुलकलाम आजाद ने 16 अगस्त की मुस्लिम लीग की कार्यवाही को भारतीय इतिहास का काला दिवस बताया था।

62. अन्तरिम सरकार का गठन (Interim Government Formation)

- कांग्रेस द्वारा प्रस्ताव स्वीकारे जाने के बाद जवाहरलाल नेहरू को सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया गया।
- 24 अगस्त, 1946 को नेहरू ने मन्त्रिमण्डल का गठन किया था, परन्तु उसमें मुस्लिम लीग का प्रतिनिधित्व नहीं था।
- 26 अक्टूबर, 1946 को मुस्लिम लीग भी सरकार में शामिल हो गई जिससे कि वह पाकिस्तान के एजेन्डे को आगे बढ़ा सके।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसम्बर, 1946 को दिल्ली में हुई जिसका मुस्लिम लीग ने बहिष्कार किया था। बहिष्कार के बाद यह निर्णय हुआ कि मुस्लिम बहुल इलाकों में संविधान लागू नहीं होगा।

63. क्लीमेंट एटली की घोषणा–1947 (Declaration of Clement Italy)

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली ने 20 फरवरी, 1947 को एक ऐतिहासिक घोषणा की जिसमें कहा गया कि जून, 1948 से पहले ही अंग्रेज सत्ता हस्तान्तरित कर भारत छोड़ देंगे। एटली की घोषणा का कई भारतीय नेताओं ने स्वागत किया था।
- एटली ने लॉर्ड वावेल के स्थान पर लॉर्ड माउन्टबेटन को भारत का नया वायसराय 22 मार्च, 1947 को नियुक्त किया।
- यद्यपि लॉर्ड वावेल ''ब्रेक डाउन प्लान'' के अन्तर्गत 3 जून, 1947 को भारत छोड़ने का सुझाव दिया था।

64. लॉर्ड माउन्टबेटन (Lord Mountbatten)

- माउन्टबेटन भारत का अन्तिम गवर्नर जनरल बनकर आया।
- माउन्टबेटन का कार्य भारत में शीघ्र स्वतन्त्रता देना और अंग्रेजों को भारत छोड़ना था।
- माउन्टबेटन ने 15 अगस्त, 1947 को भारतीयों को सत्ता सौंपने का दिन निर्धारित किया।
- माउन्टबेटन ने यह मनगढ़न्त निष्कर्ष निकाला कि भारत का विभाजन ही एकमात्र हल है।
- 3 जून, 1947 को माउन्टबेटन ने भारत विभाजन योजना प्रस्तुत की।
- माउन्टबेटन की भारत विभाजन योजना पर महात्मा गाँधी ने कहा, जब तक मैं जीवित हूँ भारत का विभाजन नहीं होने दूँगा।
- भारत विभाजन योजना पर सरदार पटेल ने कहा कि जिन्ना विभाजन चाहते हैं या नहीं पर अब हम विभाजन जरूर चाहते हैं।
- 15 जून, 1947 को भारत विभाजन योजना की पुष्टि कर दी गई।

65. भारत स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 (India Independence Act 1947)

- माउन्टबेटन योजना के आधार पर ब्रिटिश संसद में 18 जुलाई, 1947 को भारत स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया गया, जिसके अनुसार 14 अगस्त, 1947 को भारत का एक अलग भाग कर पाकिस्तान बना दिया गया और 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. ताजमहल की डिजाइन तैयार करने वाला वास्तुकार कौन था?
(A) मोहम्मद हुसैन (B) उस्ताद ईसा
(C) शाह अब्बास (D) इस्माइल

2. 78 ई. से प्रारम्भ होने वाले शक् सम्वत् का संस्थापक कौन था?
(A) कनिष्क (B) अशोक
(C) चन्द्रगुप्त (D) विक्रमादित्य

3. भारत में सिविल सेवाओं का सूत्रपात किसने किया?
(A) लार्ड डलहौजी (B) लॉर्ड कर्जन
(C) लॉर्ड वेलेजली (D) लॉर्ड कॉर्नवालिस

4. नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना किसने की थी?
(A) समुद्रगुप्त (B) कुमारगुप्त
(C) धर्मपाल (D) देवपाल

5. बंग-भंग आन्दोलन के समय कांग्रेस के अध्यक्ष कौन थे?
(A) मोतीलाल नेहरू (B) गोपाल कृष्ण गोखले
(C) चितरंजन दास (D) रास बिहारी बोस

6. तालीकोटा युद्ध के बाद कौन-सा राज्य पूर्णतः समाप्त हो गया?
(A) अहमदनगर (B) विजयनगर
(C) बीदर (D) गोलकुण्डा

7. राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय भारत का गवर्नर-जनरल कौन था?
(A) लॉर्ड रिपन (B) लॉर्ड चेम्सफोर्ड
(C) लॉर्ड कर्जन (D) इनमें से कोई नहीं

8. विशाखदत्त के प्राचीन भारतीय नाटक 'मुद्राराक्षस' की विषय-वस्तु है—
(A) प्राचीन हिन्दू जनश्रूति के देवताओं और राक्षसों के बीच संघर्ष के बारे में
(B) एक आर्य राजकुमार और एक कबीलाई महिला की प्रेमकथा के बार में
(C) दो आर्य कबीलों के बीच सत्ता के संघर्ष की कथा के बारे में
(D) चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में राजदरबार की दुरभिसन्धियों के बारे में

9. स्वतन्त्र भारत के प्रथम मन्त्रिमण्डल में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री कौन थे?
(A) गुलजारीलाल नन्दा
(B) सरदार बलदेव सिंह
(C) मौलाना अबुल कलाम आजाद
(D) सी डी देशमुख

10. ब्रिटिश भारत का प्रथम वायसराय था—
(A) लॉर्ड डलहौजी (B) लॉर्ड कैनिंग
(C) लॉर्ड हेस्टिंग्स (D) लॉर्ड कॉर्नवालिस

11. 'संवाद कौमुदी' पत्र के सम्पादक थे—
(A) राजा राममोहन राय
(B) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
(C) रवीन्द्रनाथ टैगोर
(D) बंकिमचन्द्र चटर्जी

12. किस स्थान से हड़प्पा सभ्यता से सम्बन्धित पक्की मिट्टी का हल मिला है?
(A) बनवाली (B) नागेश्वर कब्रिस्तान
(C) लोथल (D) कोटदीजी

13. अशोक के शिलालेखों की क्या लिपि है?
(A) देवनागरी (B) ब्राह्मी
(C) गुरुमुखी (D) हायरोग्लाइफिप्स

14. हण्टर कमीशन की रिपोर्ट में किसके विकास पर विशेष जोर दिया गया?
(A) बालिका शिक्षा (B) उच्च शिक्षा
(C) प्राथमिक शिक्षा (D) तकनीकी शिक्षा

15. महमूद गजनवी का दरबारी इतिहासकार कौन था?
(A) हसन निजामी (B) उत्बी
(C) फिरदौसी (D) चन्दरबरदाई

16. महात्मा गाँधी ने वर्ष 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आरम्भ किया था—
(A) सेवाग्राम से (B) दाण्डी से
(C) साबरमती से (D) वर्धा से

17. लोदी वंश की स्थापना किसने की थी?
(A) बहलोल लोदी ने (B) इब्राहिम लोदी ने
(C) खिज्र खाँ ने (D) सिकन्दर लोदी ने

18. किस गवर्नर-जनरल का नाम राज्य हड़प नीति (डाक्ट्रिन ऑफ लैप्स) के साथ जुड़ा हुआ है?
(A) लार्ड कर्जन का
(B) लॉर्ड बेंटिक का
(C) लॉर्ड डलहौजी का
(D) लॉर्ड रिपन का

19. अकबरनामा किसने लिखा था?
(A) अबुल फजल (B) भगवान दास
(C) अकबर (D) बीरबल

20. 'भारत छोड़ो' आन्दोलन 1942 में किस महीने में शुरू किया गया था?
(A) मार्च (B) अगस्त
(C) सितम्बर (D) फरवरी

21. बंगाल का विभाजन किसके काल में हुआ था?
(A) लार्ड कर्जन
(B) लॉर्ड क्लाइव
(C) लार्ड डफरिन
(D) लार्ड हेस्टिंग्स

22. पुर्तगालियों ने गोवा को किस वर्ष में हस्तगत किया?
(A) 1426 (B) 1510
(C) 1524 (D) 1556

उत्तरमाला

1. (B) **2.** (A) **3.** (D) **4.** (B) **5.** (B)
6. (B) **7.** (D) **8.** (D) **9.** (C) **10.** (B)
11. (A) **12.** (A) **13.** (B) **14.** (C) **15.** (C)
16. (B) **17.** (A) **18.** (C) **19.** (A) **20.** (B)
21. (A) **22.** (B)